Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपहार के विषय में सम्मति

६-७-५१

श्रीमान जी   जय श्री कृष्ण जी की

उपहारों चित्र मिले - देख कर अति प्रसन्नता प्राप्त हुई। चित्र मजबूत, चमकदार तथा कई रंगों में छपे हैं और चित्ताकर्षक, सुंदर, अत्युपयोगी हैं। शारीरिक ज्ञान प्राप्ती के लिए अमूल्य वस्तु है।

ऐसी सुन्दर वस्तु उपहार में देकर बड़ा उपकार किया है हार्दिक धन्यवाद देता हूं   आपका,

वैद्य ॐ प्रकाश नोहरिया

वैद्य ॐ प्रकाश नोहरिया

रचा हितकारक औषधालय

धर्मकोट

जि॰ फिरोजपुर

इन उपयोगी सुन्दर चित्रों को

उपहार में प्राप्त

करने का समय पुनः आगया है।

१५ जून १९५२ तक प्राप्त करें

विस्तृत विवरण

अन्दर पढ़ियेगा और शीघ्र ही उपहार प्राप्त करियेगा।

...त मगावें।

वार्षिक मूल्य सवा पांच रुपया

...र्क ॰ आयुर्वेदोपाध्याय देवीशरण गर्ग, ज्वालाप्रसाद अग्रवाल B.Sc.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रिय महोदय,

बड़ी प्रसन्नता एवं उत्साह के साथ आपकी सेवा में "धन्वन्तरि कार्यालय" विजयगढ़ द्वारा निर्मित औषधियों के थोक भाव का सूचीपत्र तथा पुस्तकें, वैद्योपयोगी सामिग्री, धन्वन्तरि के विशेषांक आदि का विवरणयुक्त सूचीपत्र भेज रहे हैं। कार्यालय के अध्यक्ष वैद्य देवीशरण गर्ग की सुपुत्री सौभाग्यवती गायत्रीदेवी के शुभ विवाहो-पलक्ष में १५ अप्रैल से १५ जून १६५२ तक आर्डर देने पर बहुमूल्य, बहु-उपयोगी एवं सुन्दर उपहार दे रहे हैं। इसका विस्तृत विवरण भी इसी अङ्क में दिया गया है। आशा है आप इसको भली भांति अवलोकन करेंगे तथा इस शुभ अवसर से शीघ्र ही लाभ उठावेंगे।

पुनः निवेदन कर देना अपना कर्त्तव्य समझते हैं कि ये उपहार वैद्यों, एवं चिकित्सकों के लिए अत्युपयोगी हैं। यदि आप इस अवसर को खो देंगे तब आप बाद में इनके अप्राप्य होने पर पछताएंगे। अधिक क्या लिखें ? तुरन्त आर्डर दीजियेगा।

भवदीय

—व्यवस्थापक

धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वैद्य देवीशरण गर्ग द्वारा धन्वन्तरि प्रेस विजयगढ़ से मुद्रित एवं प्रकाशित।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १८६८ में स्वर्गीय लाला राधावल्लभ जी वैद्यराज द्वारा संस्थापित

धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ [अलीगढ़]

के अध्यक्ष

वैद्य देवीशरण गर्ग

प्रधान सम्पादक 'धन्वन्तरि'

की

सुपुत्री सौभाग्यवती गायत्रीदेवी के

शुभ विवाहोपलक्ष

में

बहुमूल्य सुन्दर उपहार

१५ अप्रैल से १५ जून तक प्राप्त कीजिये

नियमादि विवरण आगे पढ़ियेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

077 660

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विराट उपहार

भैषज्यकल्पनाङ्क विलम्ब से प्रकाशित होने के कारणों पर प्रकाश डालते हुए हमने अपने कृपालु ग्राहकों से धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ के अध्यक्ष वैद्य देवीशरण जी गर्ग की सुपुत्री के विवाहोपलक्ष में शीघ्र ही एक उपहार देने का संकेत किया था। घोषणा करने के पश्चात् यह निश्चय किया गया कि उपहार में दी जाने वाली वस्तुओं को पर्याप्त मात्रा में संग्रह करने के बाद ही उपहार देने की घोषणा की जावे। पिछली बार उपहारी वस्तुओं के समाप्त होजाने से बहुत परेशानी उठानी पड़ी थी, इसीलिए यह निश्चय किया गया। इन वस्तुओं को संग्रह करने में पर्याप्त परिश्रम एवं समय व्यय करना पड़ा। अब यह सूचित करते हुए प्रसन्नता है कि उपहारी वस्तुएं पर्याप्त संख्या में प्रस्तुत हैं तथा हमारे सभी ग्राहकों, अनुग्राहकों तथा एजेंटों को समय के अन्दर इन उपहारों को प्राप्त करने के लिए अविलम्ब आर्डर भेजने चाहिए। आवश्यक उपहार आर्डर की वस्तुओं के साथ ही अवश्य भेज दिए जायंगे।

पिछली बार समय समय पर दिए गए हमारे उपहारों को जिन्होंने प्राप्त किया है वे समझते हैं कि धन्वन्तरि कार्यालय द्वारा प्रदत्त उपहार सदैव बहुमूल्य, बहुउपयोगी एवं सुन्दर होते हैं। इसी अंक में उपहार प्राप्त करने वालों से प्राप्त सैकड़ों प्रशंसापत्रों में से ५-६ पत्रों के हूबहू चित्र प्रकाशित कर रहे हैं जिनसे आप उनकी उपयोगिता का अनुमान लगा सकते हैं। इस बार जो औषधि पेटिका तैयार कराई गई है वे पहिली औषधि पेटिका से दूने लागत की हैं। सुन्दर, व टिकाऊ हैं। पहिले में २४ शीशियां आती थीं इस बार ४८ शीशियां आती हैं। इसी प्रकार इस बार जो बिजली की मशीन दी जारही है वह चिकित्सकों के लिए विशेष उपयोगी है। इस प्रकार की विलायती मशीनें ५०-६० रुपयों में प्राप्त होती हैं। इसका मूल्य भी २५) रखा गया है। इतने मूल्यवान तथा उपयोगी उपहार सदैव नहीं दिये जाते हैं अतएव आग्रहपूर्ण निवेदन है कि आप सभी इन उपहारों को अवश्य प्राप्त करें तथा हमारे उत्साह को बढ़ावें जिससे कि हम इस प्रकार की सेवा भविष्य में भी यथावसर करने में अग्रसर हो सकें।

आवश्यक-निवेदन

इसके आगे प्रकाशित नियम, उपहार विषयक सूचनायें तथा नोट सभी विवरण ध्यान से पढ़िएगा और विचार कर शीघ्र आर्डर दीजिएगा। इस बार बहुत अधिक रियायतें तथा उपहार दे रहे हैं। समय निकल जाने पर यह रियायतें कदापि नहीं दी जा सकेंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपहार प्राप्त करने के नियम—

[समय— १५ अप्रैल से १५ जून १९५२ तक]

१—इस बार तीन उपहार दिए जारहे हैं। १-औषधि पेटिका, २-पांच शारीरिक चित्रों का सेट तथा ३-बिजली की मशीन (Medico Eectric Machine) इनका विस्तृत विवरण आगे देखिये।

२— ११०) का केवल औषधियों का अर्डर देने वाले सज्जन को उपर्युक्त तीन उपहारों में से कोई भी एक उपहार भेंट किया जायगा।

नोट— पहिले उपहारी आर्डर में पुस्तकें भी शामिल की जा सकती थीं किन्तु इस वार इस उपहार को प्राप्त करने के लिए केवल औषधियों का आर्डर ही देना होगा।

३—प्रथम उपहार से आगे हर १००) के आर्डर पर एक उपहार दिया जायगा। अर्थात् २१०) के आर्डर पर कोई से २ उपहार, ३१०) के आर्डर पर कोई से तीन उपहार, ४१०) के आर्डर पर कोई से ४ उपहार दिए जांयगे। इसी प्रकार अधिक आर्डर पर अधिक उपहार दिए जा सकेंगे।

नोट—कतिपय सज्जन यह विचार कर सकते है कि एक ही उपहार एक से अधिक तादाद में लेने से क्या लाभ है। उनकी सेवा में निवेदन है कि ये उपहार अति आकर्षक तथा उपयोगी हैं अतएव आप निकटवर्ति चिकित्सकों को आसानी से बिक्री कर सकेंगे।

४ – १०००) का आर्डर देने वाले सज्जन को १० उपहार दिए जांयगे तथा उसका शुभ नाम धन्वन्तरि के आजीवन ग्राहकों में लिख लिया जायगा और धन्वन्तरि नियमित भेजा जाता रहेगा।

५—जहां तक सम्भव हो इस सूचना के साथ भेजे जाने वाला आर्डर फार्म पर ही आर्डर देना चाहिए तथा उसके साथ भेजे गए लिफाफे में ही (टिकट लगाकर) उस आर्डर को भेजना चाहिए। यदि किसी कारण यह सम्भव न हो तो आर्डर पर "उपहारी आर्डर" स्पष्ट शब्दों में अवश्य लिखें अन्यथा उपहार नहीं दिया जायगा।

नोट—लिफाफे पर टिकट न लगाने पर वह बैरंग होजायगा और वह नहीं छुड़ाया जायगा। अतएव टिकट अवश्य लगादें।

६—पत्र में पूरा पता, रेलवे स्टेशन का नाम, पार्सल पोस्ट से भेजी जाय या रेल से, सवारी गाड़ी से भेजी जाय या मालगाड़ी से, उपहार क्या भेजा जाय सभी विवरण अवश्य और स्पष्ट लिखना चाहिए।

७—उपहारी आर्डर प्रेषित करने वाले नये पुराने सभी ग्राहकों को आर्डर के साथ २५) एडवांस अवश्य भेजना चाहिए। एडवांस न भेजने पर आर्डर सप्लाई नहीं किया जायगा। आर्डर पत्र में मनीआर्डर का कूपन भेजें या उसकी तारीख और पोस्ट आफिस का नम्बर स्पष्ट लिख दें।

८—पोस्ट व्यय, पैकिंग, रेलव्यय सभी ग्राहकों को देने होंगे। एजंट यदि एजेंसी नम्बर स्पष्ट लिख देंगे तो उनसे एजेंसी नियमानुसार व्यवहार किया जायगा।

९— केवल रस रसायन, कूपीपक्व आदि मूल्यवान औषधियों का आर्डर पोस्ट द्वारा बिना किसी व्यय के सप्लाई किया जायगा।

१०—यदि उपहार औषधियों की पार्सल से पृथक पोस्ट द्वारा भेजना पड़ा तो उसका पोस्ट व्यय ग्राहक को ही देना पड़ेगा तथा उपहारी वस्तु वी. पी. छूट कर रुपया मिलने पर ही भेज सकेंगे। कम से कम ५०) एडवांस मिलने पर उपहार भी पृथक रजिस्ट्री पार्सल से साथ भेज सकेंगे।

११ औषधियों के उपहारी आर्डर के साथ पुस्तकों का उपहारी आर्डर भी दिया जा सकेगा औषधियां तथा पुस्तकें एवं उनका उपहार एक साथ रेल पासल से भेज सकेंगे।

१२—१५ जून १९५२ के बाद आर्डर देने पर ये उपहार या आगे वर्णित रियायती दरों पर औषधियां कदापि नहीं दी जा सकेंगी। इसके लिए आग्रह करना अनुचित एवं निरर्थक है।

१३—वैद्योपयोगी यन्त्र उपकरणादि जो इस सूची में दिये हैं वे भी उपहारी आर्डर में सम्मलित किए जा सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपहारी वस्तुओं का विवरण

उपहार नं० १

(पांचों शारीरिक चित्रों का सैट)

इसमें ५ तैल चित्र हैं। चिकने व मजबूत कागज पर तिरंगे छपे हुए, कपड़े पर सुन्दरता से लगे हुए, ऊपर-नीचे गोल लकड़ी लगी हुई, दीवाल पर लगाने के लिए बड़े ही आकर्षक चित्र हैं। विवरण निम्न प्रकार है।

१—मानव शरीर की अन्तर्बाह्य रचना—

इसमें शरीर की पूरी ठठरी दी है। चित्र से यह स्पष्ट समझ में आजाता है कि कौन सी हड्डी कहां पर है। ठठरी के प्रमुख भाग प्रथक भी दिए हैं। नेत्र-रचना, कर्णेन्द्रिय, फुफ्फुस व स्वरयंत्र, उदरावयव, आमाशय, पित्ताशय, यकृत, बड़ी व छोटी आंत मलाशयादि चर्म-रचना दर्शक चित्र, हृदय से रक्त आने-जाने का चित्र, सुन्दर ढंग से दिए हैं। साइज २० इंच चौड़ा व ३३ इंच लम्बा है। ऊपर नीचे लकड़ी लगी है। कपड़े से मढ़ा है।

२—ज्ञानेन्द्रिय रचना दर्शक चित्र-

मस्तिष्क, नेत्र, कर्ण, एवं घ्राणेन्द्रिय (नाक) की बाह्य एवं आन्तरिक रचना को स्पष्टतया समझाने वाले सुन्दर तिरंगे चित्र। साइज २० इंच चौड़ा व ३३ इंच लम्बा। ऊपर नीचे लकड़ी लगी है। कपड़े पर मढ़ा है।

३—शरीर के अवयव और रक्त-वाहक नाड़ियां और ज्ञानतन्तु—

मनुष्य शरीर की शुद्ध रक्त-वाहक नाड़ियां (लाल रङ्ग में) अशुद्ध रक्त वाहक नाड़ियां (नीले रङ्ग में) तथा ज्ञानतन्तु पीले रङ्ग में स्पष्टतया दर्शाए हैं। अग्न्याशय, छोटी-बड़ी अन्तड़ियां, मूत्रपिण्ड, पित्ताशय एवं फैंफड़े व हृदय के बाह्य रूप में तथा विभाजित करके बड़े ही सुन्दर ढंग से दर्शाये हैं। साइज १५ इंच चौड़ाई, २२ इंच लम्बाई, ऊपर नीचे लकड़ी लगी हुई कपड़े पर मढ़ा हुआ। चिरस्थाई और सुन्दर चित्र है।

४—इस चित्र के दो भाग हैं। एक भाग में मनुष्य सामने की ओर मुंह किए खड़ा है। गले से कमर तक का चमड़ा और पसलियां हटा दी गई हैं। पसलियों के नीचे के अङ्ग और उदर-गह्वर के सभी अङ्ग यथास्थान दर्शाये हैं। धमनी शिरायें तथा स्नायु-तन्तु सभी स्पष्ट दिखते हैं। दूसरे भाग में मनुष्य के सम्पूर्ण शरीर से चमड़ा हटा कर मांश-पेशियां तथा उनका स्नायुओं से सम्बन्ध दर्शाया है। इस चित्र का पूरा विस्तृत वर्णन भी दिया है। साइज १५ इंच चौड़ाई, २८ इंच लम्बाई, लकड़ी लगी, कपड़े पर मढ़ा है।

५—प्राथमिक उपचार (First Aid) इसमें हाथ पैर पञ्जे, कोहनी में पट्टी बांधना, हड्डी टूटने पर तख्ते बांधना दिखलाया है। रोगी को घटनास्थल से चिकित्सक के पास तक किस प्रकार लेजाना चाहिये, मुख के जख्म से खून बहने पर किस स्थान पर दबाव देना चाहिए, आदि विषय स्पष्ट रूप से दिखाये हैं। चित्र बड़ा उपयोगी और सुन्दर है। साइज २० इंच चौड़ाई ३४ इंच लम्बाई, तिरंगा, कपड़े पर मढ़ा और लकड़ी पर लगा आकर्षक चित्र है।

ये पांचों चित्र हर चिकित्सक को अपने पास अवश्य रखने चाहिए। डिस्पेन्सरी में लगा देने से उसकी शोभा दूनी होजायगी। शरीरिक हर विषय को इन चित्रों के सहारे भली प्रकार समझा जासकता है। जो औषधि विक्रेता इन चित्रों को उपयोग में नहीं ले सकते वे इनको किसी स्थानीय वैद्य को २५-३० रुपये में बड़ी आसानी से बिक्री कर सकेंगे। ये चित्र इतने आकर्षक और उपयोगी हैं कि हर एक चिकित्सक देख कर इनको अवश्य प्राप्त करना चाहेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपहार नं० २
मैडको एलोक्ट्रक मशीन
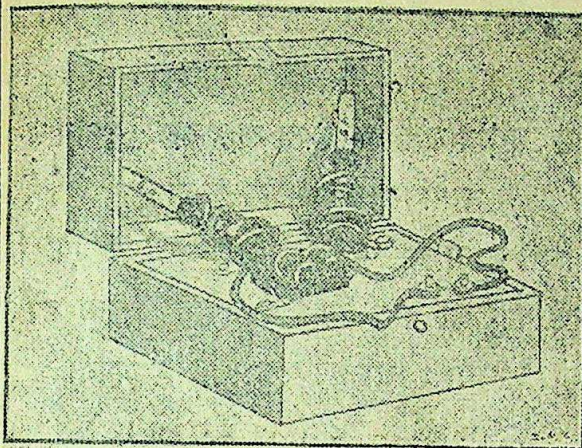
इस मशीन के द्वारा गठिया, लकवा आदि वात-रोग, खून की कमी, नाताकती आदि अनेक रोग शीघ्र नष्ट होजाते हैं। शहर, कस्बा, गांव सभी स्थानों पर यह काम देती है। बैटरी (ड्राई सैल) द्वारा कार्य करती है। ये बैटरी हर जगह मिल जाती हैं। यह मशीन हर चिकित्सक के लिए बड़े काम की चीज है तथा हरेक को अवश्य प्राप्त करना चाहिए। इसका मूल्य ७५) रखा गया है। किन्तु इस समय ११०) की औषधियां मंगाने पर उपहार में भेंट की जारही है। शीघ्र प्राप्त करें। केवल १०० मशीनें ही तैयार करा पाये हैं :

उपहार नं० ३—औषधि पेटिका

अबकी बार औषधि पेटिकाएं अधिक मजबूत टिकाऊ, एवं सुन्दर बनवाई हैं। इसका साइज निम्न प्रकार है—

ऊंचाई ७। इञ्च, लम्बाई ६।। इञ्च, चौड़ाई ४। इञ्च।

शीशियां—२ ड्राम की २२ शीशियां, ४ ड्राम की १८ शीशियां, ८ ड्राम की ८ शीशियां, कुल ४८ शीशियां हैं। वजन मय शीशियां १।। सेर (१२० तोला) है।

इञ्जैक्शन सिरिंज एवं थर्मामीटर रखने को स्थान है। एक पाकेट भी अन्दर लगी है जिसमें पुड़िया बनाने को कागज रख सकते हैं ताले आदि से सुसज्जित यह पेटिका आपको अवश्य पसंद आएगी। मूल्य से मंगाने पर इसका मूल्य १८) है।

उपहार के अलावा
और भी रियायतें

इस अवसर पर हम ग्राहकों को सामर्थ्य से अधिक रियायतें दे रहे हैं। आशा है सभी चिकित्सक एवं एजेण्ट इनसे लाभ उठावेंगे। इससे पूर्व वर्णित उपहारों के अलावा निम्न वस्तुओं में भी रियायतें दे रहे हैं।

१—सिद्ध मकरध्वज नं० १
२—मकरध्वज वटी
३—च्यवनप्राश अवलेह
४—कुमारकल्याण घुटी
५—कपूरादि तैल
६—कतिपय प्रमुख औषधियों में से किसी भी एक औषधि के १२ पैक मंगाने पर उसी औषधि एवं उसी तोल का एक पैक तथा २४ पैक एक साथ मंगाने पर ३ पैक फ्री भेजने की रियायत।
७—पुस्तकों पर विशेष रियायत

नोट—पुस्तकों का आर्डर ११०) के आर्डर में सम्मलित नहीं किया जासकेगा।

इन रियायतों का विस्तृत विवरण आगे क्रमशः पढ़िएगा तथा उनसे अवश्य लाभ उठाइयेगा। इस अवसर को न चूकिएगा, अन्यथा ये रियायतें तथा उपहार आपको निकट भविष्य में कदापि नहीं मिल सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कतिपय औषधियों पर १५ जून सन् १९५२ तक

विशेष रियायतें

❀ सिद्ध मकरध्वज नं० १ ❀

धन्वन्तरि कार्यालय द्वारा निर्मित सिद्ध मकरध्वज नं० १ बहुत समय से प्रसिद्ध है। गुणों में अद्वितीय एवं मूल्य भी उचित इसकी विशेषता है। आयुर्वेद के इस अनमोल औषधि का घर-घर प्रचार हो तथा आयुर्वेद की धाक जनता पर जमे इस पवित्र भावना से हम इस पर भी रियायत इस समय दे रहे हैं। आशा है हमारे एजेंट एवं ग्राहक इसको अधिक से अधिक तादाद में मंगाकर लाभ उठावेंगे।

१-१ माशे की तोल में, दुरंगे काडे बक्स तथा विस्तृत सेवन विधि सहित सुन्दर पैकिंग कराये गये हैं जिससे कि जनता एजेंटों से विश्वास के साथ खरीद सके।

१—१-१ माशे के १२ पैक का मूल्य ३२॥) रियायत में १ पैक बिना मूल्य

२—१-१ माशे के २४ पैक का मूल्य ६५) रियायत में ४ पैक बिना मूल्य

३—६ माशे का पूरा मूल्य १६) रियायती मूल्य १५)

४—१ तोले का पूरा मूल्य ३२) रियायती मूल्य २८॥)

५—२ तोले का पूरा मूल्य ६४) रियायती मूल्य ५५)

६—५ तोले का पूरा मूल्य १६०) रियायती मूल्य १२५)

नोट—५०) से अधिक मूल्य के आर्डर पर पोस्ट-पैकिंग आदि व्यय भी माफ रहेगा।

❀ मकरध्वज वटी ❀

प्रमेह, वीर्य विकार, स्वप्नदोष, धातु-दौर्बल्य, स्नायु-दौर्बल्य आदि बहु प्रचलित व्याधियों को नष्ट करने में अद्वितीय भारत प्रसिद्ध "धन्वन्तरि मकरध्वज वटी" का प्रचार दिनों दिन बढ़ रहा है। यह हमारी कतिपय विशेष सफल औषधियों में से अग्रणी है, अतएव सभी ग्राहकों से निवेदन है कि वे इसे अवश्य व्यवहार में लायें तथा अपने रोगियों पर बरतें। एजेंटों से भी इसका अधिकाधिक प्रचार करने का आग्रह है। इसी लिए इस अवसर पर इस पर भी रियायत कर रहे है। रियायती भाव निम्न प्रकार होंगे--

तादाद	पूरा मूल्य	रियायती मूल्य
१ शीशी	२॥=)	२।)
३ शीशी	५॥=)॥	५।)
६ शीशी	११॥।-)	६॥)
१२ शीशी	२३॥=)	१८॥)
५०० गोली	२०)	१८)
१००० गोली	४०)	३५॥)
२००० गोली	८०)	७०)

❀ च्यवनप्राश अवलेह ❀

लगभग एक माह पूर्व ही हम इसे रियायती भावों पर बिक्री कर चुके हैं किन्तु सूचना समय पर न मिलने की बहुत से ग्राहकों की शिकायत रही अतएव वही रियायतें पुनः दे रहे हैं। आशा है इस बार सभी ग्राहक लाभ उठावेंगे।

रियायत निम्न प्रकार होगी –

१—१ पाव की शीशी का मूल्य १=) होगा।

२—आध सेर की शीशी का मूल्य २।) होगा।

३—१२ शीशी एक साथ मंगाने पर १ शीशी बिना मूल्य भेजी जायगी।

४—तीन दर्जन (३६) शीशियां एक साथ मंगाने पर ४ शीशियां बिना मूल्य भेजी जांयगी।

५—१ ग्रोस (१४४) शीशियां एक साथ मंगाने पर २० शीशियां बिना मूल्य दी जांयगी।

६—५ सेर च्यवनप्राश एक डिब्बे में १८) का होगा।

७—१० सेर च्यवनप्राश दो डिब्बों में ३५॥) ,,

८—१ मन च्यवनप्राश दो टीन में १३५) ,,

नोट—५ सेर च्यवनप्राश एक कनस्तरी में सुरक्षित पैकिङ्ग में पोस्ट से भेजा जा सकता है। पैकिंग पोस्ट व्यय ५=) प्रथक लग जांयगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ कुमार कल्याण घुटी ❀

बालकों की दिव्य मीठी घुटी है। इसके अद्भुत गुणों के कारण इसकी मांग बेतरह बढ़ रही है। हम भी इसका अधिकाधिक प्रचार चाहते हैं अतएव धन्वन्तरि के पिछले अङ्क में दिए गए निम्न रियायती भावों पर कुमारकल्याण घुटी १५ जून १९५२ तक सप्लाई करने की पुनः घोषणा करते हैं। एजेंटों पंसारियों तथा चिकित्सकों को लाभ उठाना चाहिए।

तादाद	चालू मूल्य	रियायती मू०
१ शीशी	।–)	×
१२ शीशी	३॥।)	२॥=)
३ दर्जन	११।)	७॥=)
६ दर्जन	२२॥)	२१)
१ ग्रोस	४५)	१५)
५ ग्रोस	२२५)	१२५)

❀ कर्पूरादि तैल ❀

[ग्रीष्मऋतु में बालों का सर्वोत्तम तैल]

यह तैल जिसने एक बार व्यवहार किया उसी ने इसकी प्रसंशा की है। शीतलता, शान्ति एवं तरोताज़गी देने वाला अनुपम तैल है। गरमी के कारण आप पसीना-पसीना होरहे हैं, शिर चक्करा रहा है, बैचेन हैं किसी कार्य के करने की हिम्मत नहीं इसकी चन्द बूंदें मस्तिष्क पर मलिए, कुछ बालों में डालिये आपकी सभी व्यथायें दूर भाग जांयगी। शिर दर्द के लिए भी उत्तम है। एक बार व्यवहार कर आप गर्मियों में दूसरा कोई भी तैल व्यवहार करना पसन्द न करेंगे। सुन्दर शीशियों में पैकिंग किया गया है। एजेंटों को अधिक से अधिक तादाद में १५ जून १९५२ तक अवश्य मंगाना चाहिए।

मू० १ शीशी खेरीज में १=) थोक में ॥।=) १२ शीशी एक साथ मगाने पर १ शीशी बिना मूल्य। ६ दर्जन शीशियां मंगाने पर ६ शीशी तथा १पौंड तैल बिना मूल्य दिया जायगा।

❀ तीस औषधियों ❀

पर विशेष रियायत-

निम्नलिखित ३० औषधियों में से किसी भी औषधि के एक बजन(तोल)के १२ पैक मंगाने पर उसी औषधि और उसी तोल का एक पैक बिना मूल्य भेंट किया जायगा। २४ पैक मंगाने पर तीन पैक बिना मूल्य भेंट किए जांयगे।

उदाहरणार्थ-ज्वरारि १० मात्रा वाली १२ शीशी मंगाने पर १२ शीशियों का थोक मूल्य ६) चार्ज किया जायगा, किन्तु १३ शीशियां भेजी जांयगी। या, बृ० योगराज गूगल की १-१ तोला के २४ पैक मंगाने पर २४ पैक का मू० १६॥) चार्ज किया जायगा किन्तु १-१ तोले के २७ पैक भेजे जांयगे।

नोट—यदि आप हिसाब लगावें तो इस रियायत से आपको =) रुपया कमीशन प्राप्त हो जाता है।

तीस औषधियों के नाम—

१–ज्वरारि	२–कासारि
३–कर्पूरासव	४–धन्वन्तरि बाम
५–दाद की दवा	६–कासहर वटी
७-अग्निबल्लभक्षार	८–कर्णामृत तैल
९–धन्वन्तरि सुधा	१०–मनोरमचूर्ण
११–सुदर्शन चूर्ण	१२–हिंग्वष्टक चूर्ण
१३–सितोपलादिचूर्ण	१४–लवणभास्कर चूर्ण
१५–लाक्षादि तैल	१६–महानारायण तैल
१७–चन्दनादि तैल	१८–महाविषगर्भ तैल
१९–विषगर्भ तैल	२०–आंवला तैल
२१–ब्राह्मी तैल	२२–बृ० योगराज गूगल
२३–चद्रप्रभावटी	२४–लोह भस्म
२५–अभ्रकभस्म	२६-माण्डूरभस्म
२७–सीपभस्म	२८–शंखभस्म
२९–कपर्दभस्म	३०–मृगशृंगभस्म

ये रियायतें केवल १५ जून १९५२ तक दी जा सकेंगी।
विस्तृत सूचीपत्र इस अङ्क के अन्त में लगा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकों पर भी उपहार

इस अवसर पर पुस्तकों पर भी भारी रियायत दी जारही है। चिकित्सक समुदाय को लाभ उठाना चाहिए।

१—धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ द्वारा प्रकाशित पुस्तक धन्वन्तरि के विशेषांक व फायलें, रोगी रजिष्टर, प्रमाणपत्र पुस्तिका आदि २५) से अधिक मूल्य की १५ जून १९५२ तक मंगाने पर निम्न पुस्तकों में से कोई सी एक पुस्तक उपहार स्वरूप दी जायगी—

१—भैषज्यरत्नावली–टीकाकार श्री० जयदेव विद्यालंकार

२—एलोपैथिक गाइड-लेखक श्री० डा० रामनाथ वर्मा

३—रसतंत्रसार व सिद्ध प्रयोग संग्रह प्रथम भाग–श्री० नाथूसिंह जी

नोट—धन्वन्तरि कार्यालय द्वारा प्रकाशित पुस्तकों व विशेषांकादि की नामावलि नीचे दे रहे हैं। इनका विस्तृत विवरण इसी अङ्क में आगे देखियेगा। आपको इन्हीं पुस्तकों में से २५) की पुस्तकें मंगाने पर उक्त उपहार दिया जा सकेगा।

धन्वन्तरि कार्यालय द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की नामावलि—

१–वृ० पाक संग्रह
२–बालरोग चिकित्सा
३–सूर्यरश्मिचिकित्सा
४–उपदंश विज्ञान
५–दोषधातुविज्ञान
६–रसायन संहिता
७–कुचमारतंत्र
८–दशमूल
९–शल्यतंत्रम्
१०–दन्तविज्ञान
११–न्यूमोनियां प्रकाश
१२–प्राकृतिक ज्वर
१३–नारू रोग
१४–वैद्यराज जी की जीवनी
१५–आयुर्वेद में दार्शनिकतत्व
१६–मर्णोन्मुखी आर्यचिकित्सा
१७–वेदों में वैदिक ज्ञान
१८–कूपीपकरसायन
१९–रक्तरोगांक
२०–नारीरोगांक
२१–बालरोगांक
२२–संक्रामकरोगांक
२३–कल्प एवं पंचकर्म चिकित्सांक
२४–गुप्तसिद्ध प्रयोगांक द्वितीयभाग
२५– ,, तृतीय भाग
२६–सिद्ध चिकित्सांक
२७–इन्जैक्शन विज्ञानांक प्र० भाग
२८–वर्ष २१ की फाइल
२९–वर्ष २३ की फाइल
३०–वर्ष २४ की फाइल
३१–वर्ष २५ की फाइल
३२–रोगी रजिष्टर
३३–रोगी प्रमाण पत्र पुस्तिका।

विस्तृत सूचीपत्र

औषधियों, पुस्तकों, यंत्र-उपकरणों, धन्वन्तरि की फाइल एवं विशेषांकों का विस्तृत सूचीपत्र इसी अङ्क के अन्त में लगा हुआ है। इसे देख कर शीघ्र आर्डर दीजियेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्तरि कार्यालय

विजयगढ़ (अलीगढ़) यू.पी.

का

थोक—भाव

सूचीपत्र

वैद्य, हकीम, औषधि-विक्रेता, धर्मार्थ एवं सरकारी औषधालयों तथा थोक खरीदारों के लिए ये भाव निश्चित किए गये हैं।

संस्थापित १८६८

१५ जून १९५२ तक

आर्डर देने पर बहुमूल्य उपहार दिया जायगा। इसके विषय में विस्तृत विवरण प्रारम्भ में पढ़ियेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्तरि

(आयुर्वेद का सर्वोत्कृष्ट सचित्र मासिक पत्र)

धन्वन्तरि गत २६ वर्षों से प्रकाशित हो रहा है। अपने इस दीर्घ जीवन में धन्वन्तरि ने आयुर्वेद की तथा वैद्य-समाज की जो सेवा की है वह किसी से छिपी नहीं है। यदि हम यह कह दें कि 'धन्वन्तरि' को पढ़कर हज़ारों व्यक्ति सफल चिकित्सक बन गये, तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। 'धन्वन्तरि' अपने पाठकों को ज्ञान-वर्धक उपयोगी साहित्य जुटाने में पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है। यही कारण है कि इसके ग्राहक दिन दूने बढ़ रहे हैं। इसके विशेषांकों ने वैद्य-समाज को अपना प्रशंसक बना लिया है तथा धन्वन्तरि की ख्याति में चार चांद लगा दिए हैं।

भैषज्य-कल्पनांक

वर्ष अगस्त से प्रारम्भ होता है। अगस्त-सितम्बर १९५१ में भैषज्यकल्पनाङ्क नामक विशेषांक प्रकाशित हुआ है। इसमें आयुर्वेद औषधि निर्माण एवं गुण-प्रयोगात्मक उपयोगी संग्रह आयुर्वेद के प्रसिद्ध लेखक आचार्य श्री. पं० रघुवीरप्रसाद जी आयुर्वेदाचार्य A. M. S. के सम्पादकत्व में किया गया है। इस विशेषांक को वैद्यसमाज ने अत्यधिक पसंद किया है। ३६४ पृष्ठों तथा लगभग ५० चित्रों से सुसज्जित यह विशेषांक अवश्य पठनीय है।

इन्जेक्शन-विज्ञानांक (द्वितीय भाग)

इसी वर्ष का दूसरा विशेषांक होगा। लगभग २०० पृष्ठों में एक विद्वान एवं अनुभवी चिकित्सक द्वारा लिखित इन्जेक्शन-विषयक सर्वाङ्गपूर्ण सचित्र साहित्य प्रकाशित किया जायगा। इसमें आयुर्वेदिक, एलोपैथिक तथा हौमियो-पैथिक सभी इन्जेक्शनों का विशद वर्णन होगा। इस विशेषांक का मूल्य ३) होगा, किन्तु वार्षिक मूल्य ५।) में उक्त दोनों विशेषांक तथा ६ साधारण अङ्क अर्थात् लगभग १२०० पृष्ठों का साहित्य मिलेगा। आप यदि ग्राहक नहीं हैं तो अभी ग्राहक बन जाइए। नमूना मुफ्त मंगा देखें।

पता—धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"धन्वन्तरि के"

आजीवन सदस्य

इस समय हम चाहते हैं कि वैद्य समाज को अधिक से अधिक रियायतें दी जांय और उनको लाभ पहुंचाया जाय। 'धन्वन्तरि' आयुर्वेद का सर्वोत्तम मासिक पत्र है, हर वैद्य को इसका स्थायी ग्राहक बनना परमावश्यक है। इस समय इसके ८००० ग्राहक हैं। हर ग्राहक को प्रति वर्ष वार्षिक मूल्य भेजना पड़ता है। उनको इस बार-बार के झंझट से बरी करने के लिए हम एक अवसर दे रहे हैं। जो ग्राहक १५ जून १९५२ तक ५१) मनियार्डर से भेज देंगे उनका शुभ नाम धन्वन्तरि के आजीवन ग्राहकों में लिख लिया जायगा तथा "धन्वन्तरि" मासिक पत्र जब तक प्रकाशित होगा इन सदस्यों के जीवन पर्यन्त यथासमय भेजा जाता रहेगा। ५१) में ही धन्वन्तरि के साथ उनका आजीवन सम्बन्ध स्थापित हो जायगा। धन्वन्तरि कार्यालय के समाचार, आयुर्वेद जगत के समाचार, उत्तम सफल प्रयोग, ज्ञान वर्धक लेख तथा सुन्दर विशाल विशेषाङ्क आप सदैव प्राप्त करते रहेंगे। ऐसा सस्ता सौदा करने का पुनः अवसर मिलना कठिन है।

धन्वन्तरि के सभी ग्राहकों से

आग्रहपूर्ण निवेदन कर देना हमारा कर्तव्य है कि वे इस अवसर से अवश्य लाभ उठावें तथा १५ जून १९५२ से पहिले-पहिले ५१) मनियार्डर से भेजकर बार-बार के झंझट से बरी होजांय। आशा है धन्वन्तरि के सभी ग्राहक इस रियायत पर विचार करेंगे और लाभ उठावेंगे।

धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उपहार के विषय में प्राप्त सैकड़ों प्रशंसापत्रों में से

दो प्रशंसा पत्र

POST CARD
REPLY
ADDRESS ONLY

INDIA

व्यवस्थापक धन्वन्तरि
विजयगढ़
Bijoygarh
(Aligarh)

श्रीयुत व्यवस्थापक महोदय धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़

महाशय

आप का भेजा उपहार पाया। चित्रों में काफी आकर्षण और सुन्दरता है, इसके अलावा इसके द्वारा आयुर्वेद की उन्नती का प्रयास भी प्रशंसनीय है। भगवान आपके कार्यालय को उन्नत करे। जिससे समय २ पर आयुर्वेद के उन्नती में ऐसा ही मशाल।

आपका।
विद्याभूषण पाण्डेय वै. वि.
दिक्षितचक पो. नदीती
जि - पटना।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोक (व्यापारी) भाव

★ कूपीपक्व रसायन ★

हमने कूपीपक्व रसायन बनाने में एक लम्बे समय में जो अनुभव किया है तथा इसकी बारीकियों को जितना हम जानते हैं उतना अन्य अनेकों नवीन फार्मेसी वाले कदापि नहीं जान सकते। हम विशेष अनुभव के आधार पर सर्वोत्तम रसायन निर्माण करते हैं और इसी कारण उनकी उत्तमता का दावा कर सकते हैं।

सिद्ध मकरध्वज नं० १ (भैषज्य) संस्कारित पारद द्वारा निर्मित स्वर्ण घटित षट्गुण गन्धक जारित अन्तर्धूम विपाचित। मूल्य-१ तोला ३२)

सिद्ध मकरध्वज नं० २ (भैषज्य) [संस्कारित पारद द्वारा निर्मित, स्वर्ण घटित, षटगुण बलि जारित बहिर्धूम विपाचित] मूल्य- १ तोला २०)

सिद्ध मकरध्वज नं० ३ (भैषज्य)-हिंगुलोत्थ पारद द्वारा निर्मित, स्वर्णघटित, षट्गुण गन्धक जारित अन्तर्धूम विपाचित। मू०-१ तो. १५) १ मा. १।)

सिद्ध मकरध्वज नं० ४ १ तोला १८) १ माशे १।।)

सिद्ध मकरध्वज नं० ५ १ तोला १२) १ माशे १)

सिद्ध मकरध्वज नं० ६ १ तोला ६) १ माशे ।।।)।।

रससिंदूर नं० १ (धन्वन्तरि) [षट्गुण बलि, अन्तर्धूम विपाचित] मूल्य-१ तोला ८)

रससिंदूर नं० २ (हरिगौरी रस) १ तोला ६)

रससिंदूर नं० ३ (रसेन्द्रसार) १ तोला ४)

मल्ल चन्द्रोदय (रसायनसार) [स्वर्ण घटित, षट्गुण गन्धक जारित, अन्तर्धूम विपाचित] मूल्य—१ तोला ३२) १ माशे २।।≡)

मल्लसिंदूर (रसायनसार) १ तोला ६)

तालसिंदूर (रसायनसार) १ तोला ६)

ताम्रसिंदूर (रसायन० सुन्दर) १ तोला ६)

स्वर्ण वङ्गभस्म (आयुर्वेद० रसायन) १ तोला २।।)

मृत संजीवनी रस (भैषज्य० रसेन्द्रसार) १ तोला २।।)

रसकपूर (कपूर भांडेश्वर) उपदंशरोगे १ तोला ६)

रसमाणिक्य (भैषज्य०) १ तोला २।।)

समीरपन्नग रस (कूपीपक्व) स्वर्ण घटित १ तोला २४)

समीरपन्नग रस कूपी० (रसतन्त्रसार) १ तोला ६)

पंचसूत रस (कूपी०) (रसतन्त्रसार) १ तोला ६)

★ भस्में ★

धातु उपधातुओं की भस्में वही उत्तम होती हैं। जो अच्छी प्रकार शोधन करने के पश्चात् भस्म की गई हों तथा जो निरुत्थ हों। आयुर्वेद शास्त्र में ऐसी भस्में जो पारद, हिंगुल, हरताल, मनसिल द्वारा भस्म की गई हों और जो पुनः जीवित न हों, सर्वोत्तम मानी गई हैं तथा जड़ी बूटियों से की गई भस्में मध्यम।

भस्में आयुर्वेदीय शास्त्र के अनुसार [शोधन करने के बाद] किन्तु अपनी विशेष क्रिया द्वारा बनाई जाती हैं इसलिये जिन्हें इस निर्माण कार्य में अधिक समय व्यतीत हो चुका है, वही उत्तम बना सकते हैं। इसी प्रकार भस्मों में जितने अधिक पुट लगाये जाते हैं वह उतनी ही अधिक उपयोगी होती हैं। अन्य नवीन फार्मेसी वाले केवल बनौषधि द्वारा बहुत कम पुट देकर साधारण भस्म बना लेते हैं। इसलिये वह हमारी भस्मों के समान लाभप्रद सिद्ध नहीं होती हैं।

अभ्रक भस्म नं० १ (निघण्टु सुन्दर प्रकाश) सहस्र [१०००] पुटी १ तोला २४) १ माशे २)

अभ्रक भस्म नं० २ [निघण्टु, प्रकाश, योग, रसेन्द्र] शत (१००) पुटी ५ तोला ७।।) १ तोला १।।-)

अभ्रक भस्म नं० ३ [भाव,योग निघण्टु] [२५ पुटी] ५ तोला ३।।) १ तोला ।।-)

अकीक भस्म [धन्वन्तरि] १ तोला २।।)

अकीक पिष्टी १ तोला २)

कपर्द (कौड़ी) भस्म [प्रकाश सु० नि०] १० तोला २) १ तोला ।)

गोदन्ती हरताल भस्म [श्वेत] (सुन्दर, रसायन) १० तोला १।।) १ तोला ≡)।।

जहरमोहरा भस्म और पिष्टी १ तोला २)

तबकी हरताल भस्म श्वेत [भैषज्य] १ तोला ६) १ माशा ।।-)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताम्र भस्म नं० १ [कज्जली द्वारा जारित, कूपीपक्व, मयूर कण्ठ के वर्ण की] १ तोला ३)
ताम्र भस्म नं० २ [शतपुटी, पारद योगेन] २ तोला ३)
ताम्र भस्म नं० ३ [गन्धक द्वारा जारित] [रसायन सार ५ तोला ४) १ तोला ॥≈)॥
नाग भस्म नं० १ [नागेश्वर] मंसिल योगेन जारित ५ तोला ७॥) १ तोला १॥–)
नाग भस्म नं० २ [बनौषधि द्वारा जारित] १० तो. ६) १ तोला ॥≈)
प्रवाल भस्म नं० १ [असली मूंगा की कज्जली द्वारा] १ तोला ४) १ माशा ।=)
प्रवाल भस्म नं०२ [असली मूंगा की बनौषधि द्वारा] ५ तोला ८) १ तोला १॥=)
प्रवाल भस्म नं० ३ [मूंगा की सांख की कज्जली द्वारा] ५ तोला ८) १ तोला १॥≈)
प्रवाल भस्म नं० ४ [मूंगा की सांख की बनौषधि द्वारा] ५ तोला ५) १ तोला १–)
प्रवाल भस्म [चन्द्रपुटी] ५ तोला ५) १ तोला १–)
प्रवाल पिष्टी [गुलाब जल में की गई] ५ तोला ४॥)
वङ्ग भस्म नं० १ [बंगेश्वर] हरताल द्वारा जारित, (योग, भाव,) ५ तोला ६।) १ तोला १ –)
वङ्ग भस्म नं० २ (श्वेत) बनौषधि द्वारा जारित (रसेन्द्र० प्रकाश० निघ०) १० तोला ५ १ तो० ॥–)
बैक्रान्त भस्म (बृ० रसराज सुन्दर) १ तोला ५)
मल्ल [संखिया] भस्म श्वेत १ तोला ४)
मृगशृंग भस्म (श्वेत) [निघ० भैष० भाव०] १० तोला ३) १ तोला ।–)॥
मांडूर [कीट] भस्म नं० १ रक्त वर्ण [सुन्दर योग, शार्ङ्ग, रसायन] १० तोला ३॥) १ तोला ।=)
मांडूर भस्म नं० २ कृष्ण वर्ण [प्रकाश रसेन्द्र रत्न] आयुर्वेद] १० तोला २॥) १ तोला।)॥
मुक्ता भस्म नं० १ (कज्जली द्वारा जारित) १ तोला ७२) १ माशा ६–)
मुक्ता भस्म नं २ (श्वेत) [धन्वन्तरि] १ तोला ६०) १ माशा ५–)
मुक्ता पिष्टी [गुलाब जल में घुटी] १ तोला ५४) १ माशा ४॥–)
यशद भस्म [रसायनसार] ५ तोला ५) १ तोला १–)

रौप्य भस्म नं० १ कज्जली द्वारा जारित [प्रकाश, निघण्टु] १ तोला ८) ३ माशा २–
रौप्य भस्म नं० २ [हरताल द्वारा जारित] [रसेन्द्र] १ तोला ६। ३ माशा १॥–)
लोह भस्म नं० १ [पारद योगेन] [सुन्दर निघण्टु] ३०० पुटी १ तोला ४॥) १ माशा ≡)
लोह भस्म नं० २ [दरद योगेन जारित] [सुन्दर निघण्टु] ५ तोला ४) १ तोला ॥–)॥
लोह भस्म न०३ [बनौषधि द्वारा जारित] शार्ङ्गधर सु०, निघण्टु, भाव] १० तोला ४) १ तोला।≡)
स्वर्ण भस्म–कज्जली द्वारा जारित [प्रकाश० शार्ङ्ग०। ३ माशा ३६। ४ रत्ती ६–)
स्वर्ण माक्षिक भस्म [सुन्दर, प्रकाश, योग, रसेन्द्र निघ०] ५ तोला ५) १ तोला १–)
शंख भस्म [भैषज्य०] १० तोला २) १ तोला ।)
शङ्कर लोह भस्म [भाव.] १ तोला ३) ३ मा० ॥–)
शुक्ति (मोती सीप) भस्म (प्रकाश, सुन्दर, निघण्टु) १० तोला ३) १ तोला ।–)॥
त्रिवङ्ग भस्म नं० १ पारद गन्धक हरताल द्वारा जारित, (रसायन) १ तोला ३)
त्रिवङ्ग भस्म नं० २ बनौषधि द्वारा जारित (धन्वन्तरि) ५ तोला २॥) १ तोला ॥–)

शोधित द्रव्य

कज्जली नं० १ (बराबर गन्धक पारद से की हुई) १० तोला ७॥) १ तोला ॥–)
गंधक आंवलासार शुद्ध १० तोला ४) १ तोला ।≡)
जयपाल शुद्ध १० तोला ३) १ तोला ।–)॥
ताल [हरताल] शुद्ध १० तोला ७॥) १ तोला ॥–)
ताम्र चूर्ण शुद्ध १ सेर १०)
धान्याभ्रक [शु० बज्राभ्रक] १ सेर ४)
शुद्ध पारद हिंगुलोत्थ [डमरू यंत्र से निकाला हुआ] १० तोला ५) १ तोला ॥–)
पारद विशेष शुद्ध १ तोला ४)
पारद (संस्कारित) १ तोला १०)
बच्छनाग शुद्ध १० तोला ४) १ तोला ।≡)
विषबीज [वस्त्रपूत] १० तोला ५) १ तोला ॥–)
विषबीज (यवकुट) १० तोला ३) १ तोला ।–)॥
[illegible] शुद्ध [illegible] तोला ३) १ तोला ।–)॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

022 660

लोह [फौलाद] चूर्ण शुद्ध   १ सेर ४।।)
शिला [मंसिल] शुद्ध   १० तोला ८)
१ तोला ।।।–)।।
हिंगुल शुद्ध (हंसपदी) १० तोला ३।।।) १ तोला ।≡)
माडूर शुद्ध   १ सेर १।।)

★ पर्पटी ★

आयुर्वेदिक औषधियों में पर्पटी का स्थान बहुत ऊंचा है किन्तु इनको जितने उत्तम पारद से तैयार किया जायगा उतना ही अधिक गुणप्रद होंगी। हम विशेष रीति से पारद को तैयार करके फिर पर्पटी तैयार करते हैं, इसलिए वे बहुत गुण करती हैं।

एकबार नं० १ की पर्पटी व्यवहार करें। सभी के सुभीते के लिए दोनों प्रकार की पर्पटी तैयार करते हैं।

ताम्र पर्पटी नं० १—[वृ० निघण्टु, सुन्दर० योग] विशेष शुद्ध पारद द्वारा १ तो. ५) १ मा० ।≡)।।
ताम्र पर्पटी नं० २ [निघण्टु. सुन्दर० योग०] हिंगुलोत्थ पारद द्वारा १ तोला २।) १ माशा ≡)।।
पञ्चामृत पर्पटी नं० १ [रसेन्द्र, निघण्टु,] विशेष शुद्ध पारद द्वारा निर्मित, १ तोला ५) १ माशा ।≡)।।
पञ्चामृत पर्पटी नं० २ [सुन्दर भैषज्य] हिंगुलोत्थ पारद द्वारा १ तोला २।।) १ माशा ।)
विजय पर्पटी—विशेष शुद्ध पारद द्वारा निर्मित १ तोला २१) १ माशा १।।–)
बोल पर्पटी नं० १ [भैष०] विशेष शुद्ध पारद द्वारा निर्मित १ तोला ५) १ माशा ।≡)।।
बोल पर्पटी नं० २ [भैष.] हिंगुलोत्थ पारद द्वारा निर्मित १ तोला २।) १ माशा ≡)।।
रस पर्पटी नं० १ विशेष शुद्ध पारद द्वारा निर्मित १ तोला ४।।) १ माशा ।=)।।
रस पर्पटी नं० २ हिंगुलोत्थ पारद द्वारा निर्मित १ तोला २) १ माशा ≡)
लोह पर्पटी नं० १—विशेष शुद्ध पारद द्वारा निर्मित १ तोला ५) १ माशा ।≡)।।
लोह पर्पटी नं० २ हिंगुलोत्थ पारद द्वारा निर्मित १ तोला २।) १ माशा ≡)।।
श्वेत पर्पटी   १० तोला ३।।) १ तोला ।)।।

स्वर्ण पर्पटी नं० १ विशेष शुद्ध पारद और स्वर्णभस्म द्वारा निर्मित १ तोला २१) १ माशा १।।।–)
स्वर्ण पर्पटी नं० २ हिंगुलोत्थ पारद एवं स्वर्ण वर्क द्वारा निर्मित १ तोला १४) १ माशा १≡)।।

बहुमूल्य रस. रसायन गुटिका
(स्वर्ण मुक्ता-एवं कस्तूरी मिश्रित)

वृ० कस्तूरी भैरव रस १ तोला १४) १ माशा १≡)
कस्तूरी भैरव रस १ तोला १२) १ माशा १–)
कस्तूरी भूषण रस १ तोला १२) १ माशा १–)
वृ० कामचूरामणि रस १ तोला ६) १ माशा ।।।–)
कुमार कल्याण रस १ तोला २७) १ माशा २।)
कृष्णचतुर्मुख रस १ तोला १०।।) १ माशा ।।।=)।।
चतुर्मुखचिंतामणि रस १ तोला १६) १ माशा १।=)
जयमंगलरस [स्वर्णयुक्त] १ तोला २५) १ माशा २=)
प्रवालपञ्चामृत रस १ तोला १०) १ माशा ।।।=)
पुटपक्व विषमज्वरांतक लोह [भैषज्य] १ तोला १२) १ माशा १–)
वृ० पूर्णचन्द्र रस १ तोला १८) १ माशा १।।)
बसन्तकुसुमाकर रस १ तो० २१) १ माशा १।।।)
वृ० वातचिंतामणि रस १ तोला २१) १ माशे १।।।)
मृगांक पोटली रस १ तोला ७२) १ माशा ६)
मधुमेहान्तक रस   ५० गोली ८)
मन्मथाभ्र रस १ तोला ७।।) १ माशा ।।=)।।
महाराज नृपतिवल्लभ रस १ तो. ६) १ मा० ।।)।।
रसराज रस १ तोला १८) १ माशा १।।)
राजमृगांक १ तोला २४) १ माशा २)
महालक्ष्मी विलास रस १ तोला ६) १ माशा ।।)।।
योगेन्द्र रस १ तोला ३६) १ माशा ३)
श्वासचिंतामणि रस १ तोला १२) १ माशा १)।।
स्वर्ण बसन्त मालती नं० १ हिंगुल के स्थान पर सिद्ध मकरध्वज नं० १ तथा स्वर्ण वर्क के स्थान पर स्वर्ण भस्म डालकर बनाई हुई अत्युत्तम व परीक्षित—१ तोला २१) १ माशा १।।।)
स्वर्णबसन्त मालती नं० २ १ तोला १२) १ मा० १)
सर्वाङ्ग सुन्दर रस १ तोला १२) १ माशा १)।।
संग्रहणी कपाट रस नं० १ १ तो. २५) १ मा. २=)
सूतशेखररस (स्वर्णयुक्त) १ तोला १०) १ माशे ।।।=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिरण्यगर्भ पोटली रस १ तोला २१) १ माशा १।।)
हेमगर्भ रस १ तोला २४) १ माशा २)

★ रसायन गुटिका ★

अग्निकुमार रस ५ तोला १।।) १ तोला ।=)
अजीर्ण कंटक रस ५ तोला २।।) १ तोला ।।-)
अर्शांतक वटी ५ तोला २।।) १ तोला ।।-)
अम्लपित्तांतक लोह ५ तोला ३।।) १ तोला ।।)।।
अग्नितुण्डी वटी ५ तोला २।) १ तो० ।≡)।।
आनन्दभैरव रस लाल ५ तोला २) १ तोला ।≡)
आनन्दोदय रस ५ तोला ६) १ तोला १≡)।।
आदित्य रस ५ तोला ४) १ तोला ।।।-)
आमवातेश्वर रस १ तोला १०।।) १ माशा ।।।≡)
आरोग्यवर्धिनी वटी ५ तोला २।।) १ तोला ।।)।।
इच्छाभेदी रस ५ तोला २।।) १ तोला ।।)।।
इच्छाभेदी वटी (गोली) ५ तोला ३) १ तोला ।।=)
उपदंशकुठार रस ५ तोला २।।) १ तोला ।।)।।
उष्णवातघ्न वटी ५ तोला ६।) १ तोला १।)।।
एलादि वटी १० तोला २) १ तोला ≡)।।
एलुआदि वटी १० तोला २) १ तोला ≡)।।
कर्पूर रस (अतीसारे) ५ तो. ५।।=) १ तो. १=)।।
कनक सुन्दर रस ५ तोला २।) १ तोला ।≡)
कफकुठार रस ५ तोला ४) १ तोला ।।।-)
कफकेतु रस ५ तोला २) १ तोला ।=)।।
करंजादि वटी ५०० गोली ४) ५० गोली ।≡)।।
कामिनी विद्रावण रस १ तोला १।।) ३ मा० ।≡)।।
कामाग्नि संदीपन मोदक २० तो. ४।।) ४ तो. १≡)
कामधेनु रस (भैष०) २ तोला ३) ६ माशा ।।।-)
कांकायन गुटिका ५ तोला १=) १ तोला ।)
कीटमर्द रस ५ तोला १।।=) १ तोला ।-)।।
क्रव्यादि रस ५ तोला १०) १ तोला २)।।
कृमिकुठार रस ५ तोला ३) १ तोला ।।=)
खैरसार वटी २० तोला ३।।) १ तोला ≡)।।
गंधक वटी (धन्व०) २० तोला ४।।) १ तोला ।)
गंधक रसायन ५ तोला ५) १ तोला १-)
गर्भविनोद रस ५ तोला २) १ तोला ।≡)
गर्भपाल रस ५ तोला ५।) १ तोला १-)
गर्भचिंतामणि रस १ तोला २।) ३ माशे ।।-)।।
गुल्मकुठार रस ५ तोला ४) १ तोला ।।।-)
गुल्मकालानल रस ५ तोला ३।।) १ तोला ।।।)।।
गुड़ पिप्पली १० तोला २।।) १ तोला ।-)
गुड़मार वटी ५ तोला १=) १ तोला ।)
ग्रहणी गजेन्द्र रस ५ तोला ७।।) १ तोला १।।-)
ग्रहणी कपाट रस नं. २ ५ तोला २।।) १ तोला ।=)
ग्रहणी कपाट रस (लाल) ५ तोला ४।) १ तोला ।।।=)
घोड़ा चोली रस (अश्व कंचुकी)—
५ तोला १।।) १ तोला ।=)
चन्द्रप्रभा वटी २० तोला १०) १ तोला ।।)।।
चन्द्रोदय वर्ति ५ तोला २।) १ तोला ।।)
चन्द्रकला रस ५ तोला ४।।) १ तोला ।।।≡)
चन्द्रामृत रस ५ तोला ३) १ तोला ।।=)
चित्रकादि वटी २० तोला ४।।) १ तोला ।)
ज्वरांकुश रस (महा) ५ तोला २।।) १ तोला ।।)।।
जयवटी (रसायनसार) ५ तोला ६।) १ तोला १।-)
जलोदरादि वटी ५ तोला २।।) १ तोला ।।-)
जातीफल रस ५ तोला २।।) १ तोला ।।-)
तक्र वटी ५ तोला २।।) १ तोला ।।-)
ताप्यादि लोह २ तोला ५) ३ माशा ।।≡)
दुर्जलजेता रस ५ तोला २।) १ तोला ।≡)।।
दुग्धवटी नं० १ २ तोला ५) ३ माशा ।।=)।।
दुग्धवटी नं० २ ५ तोला २।) १ तोला ।≡)।।
धात्री लोह ५ तोला ३।।) १ तोला ।।।)।।
नवज्वरहर वटी ५ तोला २।) १ तोला ।≡)।।
नवायस लोह [तरङ्गिणी] लोह भस्म से निर्मित
५ तोला २।) १ तोला ।≡)।।
नष्टपुष्पांतक रस २ तोला ४) ३ माशा ।।)।।
नृपतिवल्लभ रस ५ तोला ४।।) १ तोला १)
नाराच रस ५ तोला २।।) १ तोला ।।)।।
प्रतापलंकेश्वर रस ५ तोला २।।) १ तोला ।।)।।
प्रदरारि रस ५ तोला २।) १ तोला ।≡)।।
प्रदरारि लोह ५ तोला ५) ६ माशा ।।)।।
प्रदरांतक रस ५ तोला ५।) ६ माशा ।।-)
प्रदरान्तक लोह ५ तोला ६।) ६ माशा ।।=)।।
प्लीहारि रस ५ तोला २।।) १ तोला ।।)।।
प्राणेश्वर रस २ तोला ४) ६ माशा १-)
प्राणदा गुटिका ५ तोला २) १ तोला ।≡)
पंचामृत रस नं.१ ५ तोला २।।) १ तोला ।।)।।
पंचामृत रस नं.२ ५ तोला २।।) १ तोला ।।)।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'विद्योतिनी' भाषाटीका विमर्श टिप्पणी परिशिष्ट सहित

टीकाकार—आयुर्वेदाचार्य कविराज श्री अम्बिकादत्त शास्त्री A. M. S.

सम्पादक—आयुर्वेदशास्त्राचार्य श्री राजेश्वरदत्त शास्त्री, D. Sc.,

प्रधान चिकित्सक, प्रधान प्रोफेसर, हिन्दूविश्वविद्यालय, काशी

इसकी सुविस्तृत भाषा टीका, विमर्श, टिप्पणी, परिशिष्ट आदि की जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी ही है। रसरत्न, रसेन्द्र तथा भावप्रकाश निघण्टु जैसे सुप्रसिद्ध ग्रंथों के सफल टीकाकार कविराज अम्बिकादत्त जी शास्त्री रचित विद्योतिनी टीका के आलोक में पूर्व प्रकाशित सभी टीकायें नगण्यसी हो गयी हैं। शास्त्रीजी ने टीका के साथ साथ विमर्श में विशिष्टरोगों के लक्षण, पाश्चात्य रीत्या मूत्रपरीक्षण, रसोपरस धातुओं का शोधन मारण, अभाव में लिये जानेवाले प्रतिनिधि द्रव्य तथा चरक, सुश्रुत, वाग्भटादि ग्रंथ लिखित गण द्रव्यों का भी समावेश करके आधुनिक समय-काल के अनुसार नवीन वैज्ञानिक ढंग से औषध-निर्माण, प्रयोग, मात्रा आदिका भी उल्लेख इस तरह कर दिया है कि साधारण वैद्य को भी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ेगा। किं बहुना आजतक के प्रकाशित भैषज्यरत्नावली के किसी भी संस्करण में सभी रोगों का पथ्यापथ्य नहीं लिखा गया था इससे नवीन चिकित्सकों को बड़ी असुविधा होती थी, किन्तु इस संस्करण में प्रत्येक रोग की चिकित्सा के अन्त में पथ्यापथ्य का उल्लेख विस्तार पूर्वक कर दिया गया है। यह इस संस्करण की सबसे बड़ी विशेषता है। अधिक क्या इस संस्करण की प्रामाणिकता पर प्रसन्न होकर आचार्य श्री यादवजी त्रिकमजी महाराज, कविराज प्रताप सिंह जी रसायनाचार्य, कविराज सत्यनारायण जी शास्त्री चरकाचार्य, कविराज हरिरंजन जी मजुमदार, प्राणाचार्य, गोवर्धन शर्मा जी छांगाणी प्रभृति आयुर्वेद जगत के महारथियों ने इस टीका की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। आप भी इसे देखकर प्रफुल्लित हो उठेंगे।

उत्तम कागज, सुन्दर छपाई तथा आकर्षक कपड़े की टिकाऊ जिल्द युक्त बड़े आकार के ९०० पृष्ठ के इस विशाल ग्रन्थ का मूल्य १२) है।

आयुर्वेदिक एवं एलोपेथिक गाईड

(AYURVEDIC AND ALLOPETHIC GUIDE)

लेखक—आयुर्वेदाचार्य राजकुमार द्विवेदी, संपादक—आयुर्वेदाचार्य गङ्गासहाय पाण्डेय A. M. S.

प्रोफेसर, आयुर्वेदिक कालेज, हिन्दूविश्वविद्यालय, काशी

यह पुस्तक बेजोड़ तथा अद्वितीय है। अभी तक मातृभाषा में लिखी हुई चिकित्सा के निमित्त ऐसी कोई भी पुस्तक उपलब्ध नहीं है। यह पुस्तक अकथनीय गुणों से सम्पन्न है। इसमें प्राच्य तथा पाश्चात्य विषयों का समन्वयात्मक वर्णन है। इस पुस्तक में आयुर्वेद का इतिहास, उसका प्रसार तथा अन्य पद्धतियों का जनक होना स्पष्टतया वर्णित है। इस पुस्तक से सर्व साधारण लाभ उठा सकते हैं, यह इसकी विशेष महत्ता है। इसमें शरीर-रचना, शरीर-क्रिया प्रणाली विहीन ग्रन्थियों का विशद वर्णन, रक्त, रक्तपरिभ्रमण, मूत्र-परीक्षा, रोगी-परीक्षा, विटामिन, विभिन्नप्रकार के संक्रामक रोग तथा उनसे बचने के उपाय, पथ्यनिर्माण विधि, विभिन्न व्याधियों में प्रयुक्त होने वाले पथ्य, आयुर्वेदिक तथा एलोपैथिक पारिभाषिक शब्दों तथा संयोग विरुद्ध द्रव्यों का उल्लेख, त्रिदोषविज्ञान, मल, दोष, धातु विवरण, व्यवस्थापत्र लेखन विधि, वैक्सीन, सीरम, पेनिसिलीन, स्ट्रेप्टोमायोसीन, सल्फाश्रेणी की औषधियों का विशद वर्णन, औषधिनिर्माण विधि, औषधि तथा व्याधियों की हिन्दी, अंग्रेजी नामावली, स्वास्थ्यविज्ञान, प्रसूतिचर्या, शिशुचर्या, रोगी परिचर्या, शल्यकर्म विधि, संज्ञाहरण विधि, संज्ञाहारक औषधियां, महामारी जैसे हैजा, प्लेग का प्रबन्ध तथा चिकित्सा, चूर्ण, क्वाथ, मलहम, लिनिमेण्ट, एक्का, घोल, मिक्श्चर पिल्स, टेब्लेट, सीरप तथा वर्ति आदि का निर्माण, चिकित्सा आरम्भ करने का नियम, चिकित्सा संबन्धी आवश्यकीय उपकरण, चिकित्सक के वैधानिक कर्तव्य तथा अधिकार, व्यवहारायुर्वेद, स्वास्थ्यविज्ञान, तथा विषविज्ञान आदि का आयुर्वेदिक तथा एलोपैथिक पद्धतियों से वर्णन किया गया है। नाना प्रकार के स्नान, सेक, मूत्रनिरहरण वस्ति, विसंक्रमण करने की विधि, जीवाणुनाशक औषधियों का वर्णन भी यथास्थान किया गया है। इनके अतिरिक्त नेत्र रोग, कर्णरोग, कण्ठरोग, तालुरोग, जिह्वारोग, दन्तरोग, ओष्ठरोग, चर्मरोग, स्त्रीरोग, बालरोग तथा शारीरिक व्याधियाँ जैसे गर्भपात, पाण्डु, संग्रहणी, अतिसार, प्रवाहिका, मलेरिया, कालाजार, रोमान्तिका, मसूरिका, श्वसनक ज्वर, टाइफाइड, फिरंग, पूयमेह, अजीर्ण, रक्तपित्त, राजयक्ष्मा, श्वास, कास, मूर्च्छा, अपस्मार, योषापस्मार, उदावर्त, शूल, गुल्म, वृक्करोग, मूत्राघात, अश्मरी, प्रमेह, शोथ, वृद्धि, श्लीपद, उन्माद, तथा चर्मरोग प्रभृति नाना व्याधियोंकी उभय पद्धति के अनुसार योग, सूची तथा पेटेण्ट औषधियों द्वारा चिकित्सा लिखी गई है। ये औषधियाँ अनुभूत हैं जो विभिन्न चिकित्सकों के अनुभवसे लाभप्रद सिद्ध हो चुकी हैं। इसमें छोटी से छोटी औषधियों से लेकर बहुमूल्य औषधियों तक का वर्णन है। इससे सर्वसाधारण से लेकर धनीमानी तक की चिकित्सा सुगमता पूर्वक की जा सकती है। यह पुस्तक चिकित्सक तथा विद्यार्थी दोनों के लिये समान उपयोगी है। इसकी महत्ता का जितना ही वर्णन किया जाय वह थोड़ा है। उत्तम कागज, सुन्दर छपाई, आकर्षक टिकाऊ पक्की जील्द युक्त पुस्तक का मूल्य लागत मात्र ८) है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१ **आयुर्वेदिक एवं एलोपैथिक गाइड।**
संपादक—डा० गङ्गासहाय पाण्डेय ए. एम. एस. ८)
२ **अभिनव-बूटीदर्पण**-सचित्र १०)
३ **अष्टांगसंग्रह।** प्राणाचार्य वैद्य गोवर्धनशर्मा छांगाणी कृत हिन्दी टीका सहित यन्त्रस्थ
४ **अभिनवविकृतिविज्ञान।** रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी यन्त्रस्थ
५ **अभिनव-शरीर क्रिया विज्ञान।** प्रियव्रतशर्मा यन्त्रस्थ
६ **अष्टांगहृदय।** भागीरथी टिप्पणी सहित ५)
७ **अष्टांगहृदय।** विद्योतिनी भाषा टीका सहित १६)
८ **अनुभूतचिकित्सा।** ले० चन्द्रदत्त त्रिपाठी १)
९ **अभ्रकादि खनिजविज्ञान।** क० प्रतापसिंह ५)
१० **आयुर्वेदविज्ञान।** विद्योतिनी भाषाटीका सहित १।।)
११ **आयुर्वेदीय-परिभाषा।** प्रकाशिका भा. टी. सहित १।)
१२ **क्वाथमणिमाला।** हिन्दी टीका सहित १।।)
१३ **काकचण्डीश्वरकल्पतन्त्रम्।** १)
१४ **कौमारभृत्य।** श्री रघुवीर प्रसाद त्रिवेदी ६)
१५ **गूलर गुण विकाश।** ।)
१६ **चक्रदत्त।** भावार्थसंदीपिनी भाषा टीका सहित १०)
१७ **चिकित्सक हस्तपुस्तिका या अनुपान** १)
१८ **चरकसंहिता।** भागीरथी टिप्पणी सहित ७)
१९ **नव परिभाषा।** उपेन्द्रनाथदास कृत भाषाटीका १।।।)
२० **नव्य रोग निदान** (माधव निदान परिशिष्ट) ।।।)
२१ **नाडीविज्ञान।** विद्योधिनी भा. टी. सहित ।-)
२२ **नाडी परीक्षा।** वैद्यप्रिया भाषा टीका सहित ।-)
२३ **प्रारंभिक उद्भिद् शास्त्र।** प्रो. बलवन्तसिंह ४।।)
२४ **प्रारंभिक रसायन।** श्री फूलदेव सहाय वर्मा ४।।)
२५ **प्रारंभिक भौतिकी।** श्री निहालकरण सेठी ८)
२६ **प्रसूति विज्ञान**-सचित्र। श्री रमानाथ द्विवेदी यन्त्रस्थ
२७ **फलसंरक्षणविज्ञान।** श्री युगल किशोर गुप्त १)
२८ **भारतीयरसपद्धति।** श्री अत्रिदेव गुप्त १।।)
२९ **भावप्रकाश मूल।** पूर्वार्द्ध ३) उत्तरार्द्ध ७) संपूर्ण १०)
३० **भावप्रकाशनिघण्टु।** विद्योतिनीभाषा टीका सहित ७।।)
३१ **भावप्रकाश** (संपूर्ण) विद्योतिनी भाषा टीका ,, ३०)
३२ **भावप्रकाश** (पूर्वार्द्ध) विद्योतिनी भाषा टीका ,, १२)
३३ **भावप्रकाश** (ज्वराधिकार) विद्योतिनी भाषा टीका ४)
३४ **भैषज्यरत्नावली।** विद्योतिनी भाषा टीका विमर्श टिप्पणी परिशिष्ट सहित १५)
३५ **मर्मविज्ञान** (सचित्र) श्री रामरक्ष पाठक ३।।)
३६ **मदनपालनिघण्टु।** सटिप्पण १)
३७ **माधवनिदान।** सुधालहरी टीका सहित १।।)
३८ **माधव निदान।** सर्वाङ्ग सुन्दरी भाषाटीका ४।।)
३९ **यकृत् के रोग और उनकी चिकित्सा।**
लेखक—वैद्य सभाकान्त झा २)
४० **रसरत्नसमुच्चय।** सुरत्नोज्ज्वला भाषा टीका १०)
४१ **रसायनखण्ड।** रसरत्नाकर का चतुर्थखण्ड ।।)
४२ **रसाध्याय।** संस्कृत टीका सहित ।।=)
४३ **रसार्णवं नाम रसतन्त्रम्।** सटिप्पण २)
४४ **रसेन्द्रसारसंग्रह।** सटिप्पण बालबोधिनी सहित १।।)
४५ **रसेन्द्रसारसंग्रह।** गूढार्थसन्दीपिका सं. टी. सहित ५)
४६ **रसेन्द्रसारसंग्रह।** रसचन्द्रिका भाषा टीका सहित ६)
४७ **राष्ट्रियचिकित्सा सिद्धयोगसंग्रह।**
श्री रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी १।।)
४८ **राजकीय ओषधियोग संग्रह।**
श्री रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी ७)
४९ **वनौषधिदर्शिका।** ले० प्रो० बलवन्त सिंह २।।)
५० **रोग नामावली कोष।** वैद्य ठाकुर दलजीत सिंह ३।।)
५१ **सरल व्यवहारायुर्वेद और विषविज्ञान।**
श्री युगल किशोर गुप्त ४)
५२ **सरल विषविज्ञान।** श्री युगल किशोर गुप्त १।।।)
५३ **स्वास्थ्य संहिता।** भाषा टीका। नानक चन्द्र २।।)
५४ **वैद्यजीवन।** सुधा हिन्दी टीका सहित १।)
५५ **वैद्यक परिभाषा प्रदीप।** प्रदीपिका हिन्दी टीका सहित १।।)
५६ **सौश्रुती।** प्राचीन शल्यतन्त्र। श्री रमानाथ द्विवेदी ७।।)
५७ **सुश्रुत संहिता-शरीरस्थान।** "प्रभा-दर्पण" हिन्दी टीका सहित ३)
५८ **सुश्रुत संहिता-शरीर स्थान।** डा० भास्कर गोविन्द घाणेकर टीका सहित ८)
५९ **सूचीवेध विज्ञान।** राजकुमार द्विवेदी १।।)
६० **शार्ङ्गधरसंहिता।** सुबोधिनी हिन्दी टीका सहित ६)
६१ **काश्यपसंहिता।** हिन्दी टीका सहित यन्त्रस्थ
६२ **स्वस्थवृत्तसमुच्चय।** भा. टी. राजेश्वरदत्त ६।।)
६३ **औपसर्गिकरोग।** १-२ भाग डा. घाणेकर १८)
६४ **रक्त के रोग** ,, १०)
६५ **जीवाणुविज्ञान** ,, १०)
६६ **स्वास्थ्यविज्ञान** ,, ६)
६७ **रोगी परीक्षा।** डा० शिवनाथ खन्ना ६)
६८ **शालाक्यतन्त्र** (निमितन्त्र) अर्थात् **उर्ध्वांग चिकित्सा** पांचो भाग। लेखक-रमानाथ द्विवेदी। इस पुस्तकमें नासिका, शिर, कान, मुंह और नेत्र रोगों के हेतु, निदान, संप्राप्ति आदि की विस्तृत विवेचना की गई है। ८)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* ॐ *

शर्मा आयुर्वेदिक औषधालय

आयुर्वेद विशारद :-
दीनदयालु शर्मा वैद्य
रजि० नं० २६०९ ए० क्लास

ऐरवा-कटरा, (इटावा)

दिनाङ्क २५।१२।१९५०

महाशय जी

नमस्ते;

विदित हो कि भवदीय प्रेषित तैल प्रेम प्राप्त कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। आयुर्वेद जगत के हितार्थ यह आपने अत्यन्त ही अनुपम उपहार भेंट किया है। आशा है कि आगे भी समय समय पर हम लोगों को ऐसे ही साधन आप भेंट करते रहेंगे। इसके लिये आपको सहर्ष धन्यवाद है॥ इति

भवदीय -
दीनदयालु शर्मा
वैद्य

वैद्य देवीशरण गर्ग
प्रधान सम्पादक
"धन्वन्तरि"
की
सुपुत्री गायत्री देवी
के
शुभ-विवाहोपलक्ष
में
ये
बहुमूल्य-उपहार
पुनः भेंट किए जारहे हैं।

ये प्रसंशा पत्र

उपहार प्राप्त करने वालों ने स्वेच्छा से लिखकर भेजे हैं।

— ❀ —

हम दावा करते हैं।

कि आप भी इन उपहारों को प्राप्त कर अवश्य प्रसन्न हो जायंगे।

पूरा विवरण अन्दर पढ़ियेगा।

— —

प्रिय महोदय,

आपके भेजे हुए पांच चित्र और रचना विषयक बड़ी पुस्तिकाएं उपहार के मिले। निःसंदेह आपका यह भेंट उचित, उपयोगी और उत्तम है। इससे सबको बहुत लाभ ही होगा। आपको धन्यवाद [illegible] है।

रामबाबू गुप्त

वैद्य अम्बिकाप्रसाद
करजीवन फार्मेसी
कटरा, प्रयाग।

२६.१२.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्तरि

आयुर्वेद का सर्वोत्कृष्ट सचित्र मासिक पत्र है। वार्षिक मूल्य ५।) में २ विशेषांक तथा ६ साधारण अङ्क कुल १००० पृष्ठों से ऊपर का उपयोगी साहित्य दिया जाता है। हर वैद्य एवं आयुर्वेद-प्रेमी को इसका ग्राहक अवश्य बन जाना चाहिये।

विस्तृत विवरण अन्दर पढ़ियेगा।

वार्षिक मूल्य ५।)

सम्पादक — आयुर्वेदोपाध्याय देवीशरण गर्ग, ज्वालाप्रसाद अग्रवाल B.Sc.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १८९८ में स्वर्गीय लाला राधाकृष्ण श्री वैद्यराज द्वारा संस्थापित

धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़) की

स्वर्ण जयन्ती

१५ अगस्त सन् १९५० को मनाई जावेगी

अपनी इस महान् प्रसन्नता में हम अपने ग्राहकों एजन्टों और हितैषियों को सम्मलित करने के लिए उपहार का विशाल आयोजन कर रहे हैं। आप भी इस अवसर पर हमारी सेवा स्वीकार कीजिये और उपहार प्राप्त करके या धन्वन्तरि के आजीवन ग्राहक बनकर हमारी प्रसन्नता में सम्मलित होकर आभारी कीजिये ।

उपहार का पूर्ण विवरण आगामी पृष्ठों में देखिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ की

स्वर्ण जयन्ती

यह लिखते हुए असीम प्रसन्नता होती है कि धन्वन्तरि कार्यालय को स्थापित हुये ५२ वर्ष पूर्ण होगये हैं और अब वह अपने जीवन के ५३ वें वर्ष में पदार्पण कर रहा है। यह आप अच्छी प्रकार जानते हैं कि इस कार्यालय के संस्थापक श्रीयुत लाला राधावल्लभ जी वैद्यराज युक्त प्रान्त ही नहीं भारत के गणमान्य चिकित्सकों में से थे— आपने अल्प आयु में ही कलकत्ते और बम्बई के धनी-मानी समाज में प्रसिद्ध डाक्टरों द्वारा निराश किये रोगियों को अपने चिकित्सा कौशल से आरोग्य प्रदान करके पर्याप्त सम्मान सम्पादित किया था। आपने आयुर्वेद की अत्यन्त दयनीय परिस्थिति में संग्रहणी रोगियों को तक्र कल्प चिकित्सा से आरोग्यता प्रदान करके बड़े २ डाक्टरों को असमंजस में डाल दिया था। उस समय डाक्टरों की कौन कहे प्रायः वैद्य गण भी आयुर्वेद की महानतम कल्प चिकित्सा को भूले हुये थे, आपने उसे पुनर्जीवन प्रदान किया और वैद्य समाज को इस ओर अग्रसर किया।

अपने चिकित्सा-कौशल के कारण वैद्यराज जी जहां कहीं भी जाते थे रोगी उन्हें घेर लेते थे और उन्हें औषधि देने या बताने के लिये विवश होना पड़ता था, उस समय आयुर्वेदीय औषधि निर्माण करने वाली भारत में १-२ संस्थायें ही थीं— औषधियों का मनमाना मूल्य वसूल करके शास्त्रीय विधि के अनुसार औषधियां सप्लाई नहीं कर सकती थीं। इस असुविधा के कारण (जब रोगी को लाभ नहीं होता था तो) उनको बड़ा कष्ट और वेदना होती थी, इसी वेदना के आधार पर आपने सन् १८९८ में धन्वन्तरि कार्यालय को स्थापित किया और रोगियों और वैद्यों को बहुत थोड़ा लाभ लेकर उत्तम आयुर्वेदीय औषधियां सप्लाई करने का संकल्प किया। यह संकल्प और उद्देश धन्वन्तरि कार्यालय के अध्यक्षों के लिये सदैव पथ-प्रदर्शक रहे हैं और यही इस कार्यालय की उन्नति का कारण है। जहां भारत की सभी ऊंची-फार्मेसियों का आधार धुंआधार विज्ञापन है वहां धन्वन्तरि कार्यालय अपनी सचाई और औषधियों की उत्तमता की दृढ़ नींव पर स्थित है।

आज हम अपने कार्यालय के ५२ वर्ष पूर्ण होते देख कर अति प्रसन्न हैं और १५ अगस्त सन् १९५० को स्वर्ण जयन्ती समारोह मना रहे हैं। हमारी हार्दिक इच्छा है कि इस समारोह में हमारे प्रत्येक ग्राहक किसी न किसी रूप में अवश्य ही भाग लें। आशा है शुभ-कामना प्रदान करते हुये हमारी सेवाओं को स्वीकार करेंगे और हमारी प्रसन्नता में सम्मलित होकर हमें आभारी करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुमूल्य उपहार

इस स्वर्ण-जयन्ती के अवसर पर हम अपने ग्राहकों को उपहार नं० १ (मनुष्य शरीर के अंग प्रत्यंगों को सुस्पष्ट दर्शाने वाले ५ विशाल तिरंगे छपे कपड़े पर मढ़े सुन्दर तैल चित्र) और उपहार नं० २ (औषधि मंजूषा ४० शीशियों सहित मजबूत व सुन्दर) भेंट कर रहे हैं। दोनों उपहारों का विस्तृत विवरण आगे पढ़ें। दोनों वस्तु अत्यधिक सुन्दर आकर्षक तथा उपयोगी हैं। इनको प्राप्त करने के नियमों को ध्यान से पढ़ लीजियेगा।

उपहार प्राप्त करने के नियम--

१—तारीख १५ जून से ३१ जुलाई तक अर्थात् १॥ महीने का समय इस उपहार-प्राप्ति का है। इसके पश्चात् यह उपहार किसी भी दशा में नहीं दिया जायगा। बाद में आग्रह नहीं करें क्योंकि हमको सखेद आपका आग्रह अस्वीकृत करना पड़ेगा।

२—थोक भाव से ११०) की औषधियों के या पुस्तकों के अथवा दोनों मिलाकर के आर्डर पर उपहार नं० १ या उपहार नं० २ (५ चित्र या मंजूषा) जो भी आप चाहें बिना मूल्य ले सकते हैं।

३—थोक भाव से २१०) की औषधियों और पुस्तकों के आर्डर पर दोनों उपहार ले सकते हैं।

४—२१०) के आर्डर पर दोनों उपहार दिये जांयगे उसके पश्चात् प्रत्येक १००) के आर्डर पर कोई भी एक वस्तु बिना मूल्य दी जायगी। अर्थात्—३१०) का आर्डर देने वाले सज्जन को उसकी इच्छानुसार कोई भी ३ उपहार दिये जांयगे। चित्रों के ३ सैट या ३ मंजूषा या २ चित्रों के सैट और एक मंजूषा, या २ मंजूषा और एक चित्रों का सैट। इसी प्रकार ४१०) के आर्डर पर चार उपहार, ५१०) के आर्डर पर पांच उपहार दिये जांयगे।

नोट—सम्भव है कुछ व्यक्ति यह विचार करें कि एक ही उपहार की कई प्रति लेने से क्या लाभ? ये उपहार इतने उपयोगी हैं कि आप इनको बड़ी आसानी से अपने निकटवर्ति चिकित्सकों को विक्री कर सकते हैं।

५—जहां तक सम्भव इस सूचना के साथ भेजा जाने वाले आर्डर फार्म पर ही आर्डर देना चाहिये तथा उसके साथ भेजे गये लिफाफे में ही (टिकट लगाकर) उस आर्डर को भेजना चाहिये। यदि यह किसी कारण सम्भव न हो तो आर्डर पत्र पर "उपहारी आर्डर" अवश्य लिखदें।

६—पत्र में पूरा पता, रेलवे स्टेशन, पार्सल पोस्ट से भेजी जाय या रेल से, सवारी गाड़ी से भेजी जाय या मालगाड़ी से, सभी विवरण स्पष्ट और अवश्य लिख देना चाहिये।

७—नवीन ग्राहक को तथा पार्सल रेल से मंगाने वाले को आर्डर के साथ २५) एडवांस अवश्य भेजना चाहिये।

८—पोस्ट-व्यय, पैकिंग, रेलव्यय सभी ग्राहकों को देने होंगे। एजेन्टों के साथ एजेन्सी नियम व्यवहार में आयेंगे।

९—केवल रस-रसायन, कूपीपक्व आदि मूल्यवान औषधियों का आर्डर बिना किसी व्यय के पोस्ट द्वारा सप्लाई कर दिया जायगा।

१०—यदि उपहार आर्डर से प्रथक पोस्ट द्वारा भेजना पड़ा तब उसका मार्ग-व्यय तथा पोस्ट व्यय ग्राहक को ही देना होगा तथा उपहार आर्डर की वी० पी० छूट कर रुपया मिलने पर ही भेजा जा सकेगा। रेल पार्सल के आर्डर में उपहार औषधियों के साथ ही भेज दिया जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चांदी की मंजूषा

चांदी का बना हुआ लगभग ५००) मूल्य का औषधि मंजूषा
या ५००) की औषधियां बिना मूल्य लीजिये

प्रत्येक उपहारी आर्डर पर १ इनामी टिकट ग्राहकों को भेजी जायगी और १५ अगस्त सन् १६५० को (स्वर्ण जयन्ती समारोह के दिन उपस्थित व्यक्तियों के समक्ष) लाटरी खोला जायगी।

जिस सज्जन के नाम लाटरी निकल आयगी उन्हें एक चांदी का बना हुआ औषधि मंजूषा जिस पर प्राप्तकरने वाले का नाम मीना में लिखा होगा और लगभग ५००) मूल्य का होगा बिना मूल्य दिया जायगा।

लाटरी में नाम निकलने वाले सज्जन मंजूषा के स्थान [illegible] चाहें तो ५००) की औषधियां थोक भाव से [illegible] सकते हैं। १ उपहार प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को १ इनामी टिकट और २-३-४ उपहार प्राप्त करने वालों को उतनी ही इनामी टिकटें दी जायगी।

जिस सज्जन को यह इनाम (चांदी का मंजूषा या ५००) की औषधियां प्राप्त होंगी उनका चित्र सहित शुभ नाम धन्वन्तरि में प्रकाशित किया जायगा।

३०) के आर्डर पर भी उपहार
हमारे छोटे बड़े सभी श्रेणी के ग्राहक लाभ उठा सकें।

इस लिये केवल ३०) के आर्डर पर भी उपहार दिया जायगा। हमारा विश्वास है कि इस अवसर पर हमारा प्रत्येक ग्राहक उपहार प्राप्त करने का उद्योग करेगा, किंतु बहुत से ग्राहक प्रयत्न करने पर भी सम्भवतः ११०) का आर्डर न दे सकें अतः ३०) के आर्डर पर हम शारीरिक पांच चित्रों में से कोई भी एक चित्र भेट करेंगे।

नोट-१-३०) का आर्डर देकर उपहार प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को इनामी टिकट नहीं दी जायगी। इनामी टिकट ११०) के आर्डर वाले उपहारी आर्डर पर दी जायगा।

२—आर्डर देते समय ग्राहक को यह स्पष्ट लिख देना चाहिये कि वह पांच चित्रों में से कौन सा चित्र चाहते हैं।

३—उपर्युक्त नियम ५, ६, ७, ८ तथा १० इस छोटे उपहार के आर्डर पर भी लागू होंगे।

धन्वन्तरि के
आजीवन ग्राहक बनिये।

हमारे बहुत से कृपालु ग्राहक हमसे यह बार २ आग्रह करते रहे हैं, कि हमें आजीवन ग्राहक बना लिया जाय जिससे पुनः २ मूल्य भेजने का झंझट न रहे। अब तक हम उनका आग्रह स्वीकार नहीं कर सके थे किन्तु अब इस शुभ अवसर पर ता० १५ जुलाई १६५० तक जो सज्जन ५१) मात्र भेज देंगे उन्हें हम आजीवन ग्राहक स्वीकार कर लेंगे और जीवन पर्यन्त धन्वन्तरि उनकी सेवा में पहुंचता रहेगा। धन्वन्तरि का मूल्य पहिले ३≡) था किन्तु अब ५।) है। इस प्रकार सम्भवतया भविष्य में पुनः मूल्य वृद्धि करनी पड़े। आजीवन ग्राहक बनने वालों को मूल्य वृद्धि की दशा में भी अधिक मूल्य नहीं देना होगा। इसके अतिरिक्त आजीवन ग्राहक बनने वालों का शुभ नाम धन्वन्तरि अङ्क में प्रकाशित किया जायगा।

आप भी आजीवन ग्राहक बनकर हमें आभारी करें। और इस अवसर से लाभ उठावें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांचों चित्र तथा मंजूषा का विवरण

उपहार नं० १

इसमें ५ तैल चित्र हैं। चिकने व मजबूत कागज पर तिरंगे छपे हुए, कपड़े पर सुन्दरता से लगे हुए, ऊपर-नीचे गोल लकड़ी लगी हुई, दीवाल पर लगाने के लिए बड़े ही आकर्षक चित्र हैं। विवरण निम्न प्रकार है।

१—मानव शरीर की अन्तर्वाह्य रचना-इसमें शरीर की पूरी ठठरी दी है। चित्र से यह स्पष्ट समझ में आजाता है कि कौन सी हड्डी कहाँ पर है। ठठरी के प्रमुख भाग प्रथक भी दिये हैं। नेत्र-रचना, कर्णेन्द्रिय, फुफ्फुस व स्वरयंत्र, उदराव-यव-आमाशय पित्ताशय, यकृत, बड़ी व छोटी आंत, मलाशयादि चर्म-रचना दर्शक चित्र, हृदय से रक्त आने-जाने का चित्र, सुन्दर ढंग से दिए हैं। साइज २० इंच चौड़ा व ३३ इंच लम्बा है। ऊपर नीचे लकड़ी लगी है। कपड़े से मढ़ा है।

२—ज्ञानेन्द्रिय रचना दर्शक चित्र-मस्तिष्क, नेत्र, कर्ण एवं घ्राणेन्द्रिय (नाक) की वाह्य एवं आन्तरिक रचना को स्पष्टतया समझाने वाले सुन्दर तिरंगे चित्र। साइज २० इंच चौड़ा व ३३ इञ्च लम्बा। ऊपर नीचे लकड़ी लगी है। कपड़े पर मढ़ा है।

३—शरीर के अवयव और रक्त-वाहक नाड़ियां और ज्ञानतन्तु-मनुष्य शरीर की शुद्ध रक्त-वाहक नाड़ियाँ (लाल रङ्ग में) अशुद्ध रक्त वाहक नाड़ियां (नीले रङ्ग में) तथा ज्ञानतन्तु पीले रङ्ग में स्पष्टतया दर्शाए हैं। अन्नाशय, छोटी-बड़ी अन्तड़ियां, मूत्रपिण्ड, पित्ताशय एवं फैंफड़े व हृदय के वाह्य रूप में तथा विभाजित करके बड़े ही सुन्दर ढंग से दर्शाये हैं। साइज १५ इंच चौड़ाई २२ इंच लम्बाई, ऊपर नीचे लकड़ी लगी हुई कपड़े पर मढ़ा हुआ। चिरस्थाई और सुन्दर चित्र है।

४—इस चित्र के दो भाग हैं। एक भाग में मनुष्य सामने की ओर मुंह किए खड़ा है। गले से कमर तक का चमड़ा और पसलियां हटा दी गई हैं। पसलियों के नीचे के अङ्ग और उदर-गह्वर के सभी अङ्ग यथास्थान दर्शाये हैं। धमनी शिरायें तथा स्नायु-तन्तु सभी स्पष्ट दिखते हैं। दूसरे भाग में मनुष्य के सम्पूर्ण शरीर से चमड़ा हटा कर मांश-पेशियां तथा उनका स्नायुओं से सम्बन्ध दर्शाया है। इस चित्र का पूरा विस्तृत वर्णन भी दिया है। साइज १५ इंच चौड़ाई, २८ इंच लम्बाई, लकड़ी लगी, कपड़े पर मढ़ा है।

५—प्राथमिक उपचार (First Aid) इसमें हाथ-पैर पञ्जे, कोहनी में पट्टी बांधना, हड्डी टूटने पर तख्ते बांधना दिखलाया है। रोगी को घटनास्थल से चिकित्सक के पास तक किस प्रकार लेजाना चाहिये, मुख के जख्म से खून बहने पर किस स्थान पर दबाव देना चाहिए आदि विषय स्पष्ट रूप से दिखाये हैं। चित्र बड़ा उपयोगी और सुन्दर है। साइज २० इंच चौड़ाई ३४ इंच लम्बाई, तिरंगा, कपड़े पर मढ़ा और लकड़ी पर लगा आकर्षक चित्र है।

ये पांचों चित्र हर चिकित्सक को अपने पास अवश्य रखने चाहिये। डिस्पेन्सरी में लगा देने से उसकी शोभा दूनी होजायगी। शारीरिक हर विषय को इन चित्रों के सहारे भली प्रकार समझा जासकता है। जो औषधि विक्रेता इन चित्रों को उपयोग में नहीं ले सकते वे इनको किसी स्थानीय वैद्य को २५-३० रुपये में बड़ी आसानी से बिक्री कर सकेंगे। ये चित्र इतने आकर्षक और उपयोगी हैं कि हर एक चिकित्सक देख कर इनको अवश्य प्राप्त करना चाहेंगे।

उपहार नं० २

औषधि-पेटिका का विवरण—

यह मजबूत टिकाऊ बनवाये हैं। सुन्दर है, ऊपर से चमड़ा मढ़ा हुआ है। इसमें २४ शीशियां ३ माशे वाली तथा १६ शीशियां १ तोले वाली हैं। साइज चौड़ाई ४ इंच, लम्बाई ६॥ इंच, ऊंचाई ४ इंच। मय शीशियां व कार्क।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्तरि

(आयुर्वेद का सर्वोत्कृष्ट सचित्र मासिक पत्र)

धन्वन्तरि गत २४ वर्षों से प्रकाशित हो रहा है। अपने इस दीर्घ जीवन में धन्वन्तरि ने आयुर्वेद की तथा वैद्य-समाज की जो सेवा की है वह किसी से छुपी नहीं है। यदि हम यह कह दें कि 'धन्वन्तरि' को पढ़कर हजारों व्यक्ति सफल चिकित्सक बन गये, तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। 'धन्वन्तरि' अपने पाठकों को ज्ञान-वर्धक उपयोगी साहित्य जुटाने में पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है। यही कारण है कि इसके ग्राहक दिन दूने बढ़ रहे हैं। इसके विशेषांकों ने वैद्य-समाज को अपना प्रशंसक बना लिया है तथा धन्वन्तरि की ख्याति में चार चांद लगा दिये हैं।

वर्ष अगस्त से प्रारम्भ होता है। अगस्त-सितम्बर १९५० का अङ्क सिद्ध चिकित्सांक नामक विशाल सचित्र विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। इसमें विविध कष्ट-साध्य रोगों की विद्वान एवं अनुभवी चिकित्सकों द्वारा लिखित चिकित्सा-विधि प्रकाशित होगी। लगभग ४०० पृष्ठों का सैकड़ों चित्रों से सुसज्जित यह विशेषांक पिछले सभी विशेषांकों से अधिक उपयोगी, सुन्दर तथा बड़ा होगा। इस विशेषांक को प्रथक लेने से मूल्य ४) होगा।

इन्जैक्शन--विज्ञानांक

इसी वर्ष का दूसरा विशेषांक होगा। लगभग २०० पृष्ठों में एक विद्वान एवं अनुभवी चिकित्सक द्वारा लिखित इन्जेक्शन-विषयक सर्वाङ्गपूर्ण सचित्र साहित्य प्रकाशित किया जायगा। इसमें आयुर्वेदिक एलोपैथिक तथा होमियोपैथिक सभी इन्जेक्शनों का विशद वर्णन होगा। इस विशेषांक का मूल्य ३) होगा किन्तु वार्षिक मूल्य ५।) में उक्त दोनों विशेषांक तथा ६ साधारण अङ्क अर्थात् लगभग १२०० पृष्ठों का साहित्य मिलेगा। आप यदि ग्राहक नहीं हैं तो अभी ग्राहक बन जाइये।

पता--धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्तरि कार्यालय

विजयगढ़ (अलीगढ़) यू.पी.

का

थोक-भाव

का

सूचीपत्र

वैद्य, हकीम, औषधि-विक्रेता, धर्मार्थ एवं सरकारी औषधालयों तथा थोक खरीदारों के लिए ये भाव निश्चित किए गये हैं।

संस्थापित १८९८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्तरि कार्यालय बिजयगढ़ (अलीगढ़)

की

कतिपय सफल औषधियां

हमारी निम्न औषधियां विशेष रूप से प्रचलित हैं क्योंकि वे आशुफलप्रद तथा अक्सीर प्रमाणित हो चुकी हैं। सभी वैद्यों, औषधि विक्रेताओं तथा डाक्टरों से आग्रह पूर्ण निवेदन है कि वे निम्न औषधियों को मंगाकर व्यवहार करें व करावें और चमत्कार देखें—

सिद्ध मकरध्वज नं० १—

कूपीपक्व रसायन निर्माण करने में पर्याप्त अनुभव की आवश्यकता है। हम अपने बहुकालीन अनुभव के आधार पर सर्वोत्तम प्रस्तुत करने में समर्थ हैं। यह अनुपान भेद से अनेकों रोगों को नष्ट करने में सफल सिद्ध हुआ है। आप एक बार परीक्षा करने पर स्वयं इसकी प्रशंसा करेंगे। मूल्य—१ तोला ३२)

स्वर्ण बसन्त मालती नं० १—

स्वर्ण वर्क के स्थान स्वर्णभस्म तथा शु० हिंगुल के स्थान पर सिद्ध मकरध्वज नं० १ डालकर बनाई गई सर्वोत्तम मालती सर्व प्रकार के ज्वर, क्षयज ज्वर, प्रमेह, निर्बलता आदि नष्ट करने के लिए अद्वितीय है। मूल्य १ तोला २१)

मकरध्वज वटी—

सर्व प्रमेह नाशक धातु वर्धक अत्युत्तम टॉनिक है। क्षणिक उत्तेजना न बढ़ाकर रस-रक्त आदि सप्तधातुओं को शुद्ध कर शरीर को स्थाई शक्ति प्रदान करने वाली अत्युपयोगी गोलियां हैं। मूल्य १२ शीशी (४१ गोली वाली) २३॥=)
—५०० गोली २००)

कासारि—सभी प्रकार की खांसी की सर्वश्रेष्ठ दवा—मूल्य १२ शीशी ६)

कुमार कल्याण घुटी—बालकों के सभी रोग नष्ट कर उनको मोटा ताजी बनाने वाली मीठी घुटी मूल्य—१२ शीशी २॥–)

ज्वरारि—ज्वर-जूड़ी, तिल्ली आदि की उत्तम दवा मूल्य १२ शीशी ६)

एक बार इनकी परीक्षा अवश्य करें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोक (व्यापारी) भाव

कूपीपक्व रसायन

हमने कूपीपक्व रसायन बनाने में एक लम्बे समय में जो अनुभव किया है तथा इसकी बारीकियों को जितना हम जानते हैं उतना अन्य अनेकों नवीन फार्मेसी वाले कदापि नहीं जान सकते। हम विशेष अनुभव के आधार पर सर्वोत्तम रसायन निर्माण करते हैं और इसी कारण उनकी उत्तमता का दावा कर सकते हैं।

सिद्ध मकरध्वज नं० १ (भैषज्य)-संस्कारित पारद द्वारा निर्मित स्वर्ण घटित षटगुण गन्धक जारित अन्तधूम विपाचित। मूल्य–१ तोला ३२)

सिद्ध मकरध्वज नं० २ (भैषज्य) [संस्कारित पारद द्वारा निर्मित, स्वर्ण घटित, षटगुण बलि जारित बहिर्धूम विपाचित] मूल्य—१ तोला २०)

सिद्ध मकरध्वज नं० ३ (भैषज्य)-हिंगलोत्थ पारद द्वारा निर्मित स्वर्ण घटित, षटगुण गन्धक जारित अन्तधूम। मूल्य—१ तोला १५) १ माशे १।)

सिद्ध मकरध्वज नं० ४ १ तोला १८) १ माशे १।।)

सिद्ध मकरध्वज नं० ५ १ तोला १२) १ माशे १)

सिद्ध मकरध्वज नं० ६ १ तोला ६) १ माशे ।।।)

रससिंदूर नं० १ (धन्वन्तरि) [षटगुण बलि, अन्तधूम विपाचित] मूल्य–१ तोला ८)

रससिंदूर नं० (हरगौरी रस) १ तोला ६)

रससिंदूर नं० ३ (रसेन्द्रसार) १ तोला ४)

मल्ल चन्द्रोदय (रसायनसार) [स्वर्ण घटित, षटगुण गन्धक जारित, अन्तधूम विपाचित] मूल्य—१ तोला ३२) १ माशे २।।≡)

मल्ल सिंदूर (रसायनसार) १ तोला ६)

तालसिंदूर (रसायनसार) १ तोला ६)

ताम्रसिंदूर (रसायन० सुन्दर) १ तोला ६)

स्वर्ण बङ्गभस्म (आयुर्वेद० रसायन) १ तोला २।।)

मृत संजीवनी रस (भैषज्य० रसेन्द्रसार) १ तोला २।।)

रसकर्पूर (कर्पूर भांडेश्वर)-उपदंशरोगे १ तोला ६)

रसमाणिक्य (भैषज्य०) १ तोला २।।)

समीरपन्नग रस (कूपीपक्व) स्वर्णघटित १ तोला २०)

समीरपन्न रस (कूपी० रसतन्त्रसार) १ तोला ६)

पंचसूत रस (कूपी०) (रसतन्त्रसार) १ तोला ६)

भस्में

धातु उपधातुओं की भस्में वही उत्तम होती हैं। जो अच्छी प्रकार शोधन करने के पश्चात् भस्म की गई हों तथा जो निरुत्थ हों। आयुर्वेद-शास्त्र में ऐसी भस्में जो पारद, हिंगुल, हरताल, मनसिल द्वारा भस्म की गई हों और जो पुनः जीवित न हों, सर्वोत्तम मानी गई हैं तथा जड़ी-बूटियों से की गई भस्में मध्यम।

भस्में आयुर्वेदीय शास्त्र के अनुसार [शोधन करने के बाद] किन्तु अपनी विशेष क्रिया द्वारा बनाई जाती हैं इसलिये जिन्हें इस निर्माण कार्य में अधिक समय व्यतीत हो चुका है; वही उत्तम बना सकते हैं। इसी प्रकार भस्मों में जितने अधिक पुट लगाये जाते हैं वह उतनी ही अधिक उपयोगी होती हैं। अन्य नवीन फार्मेसी वाले केवल वनौषधि द्वारा बहुत कम पुट देकर साधारण भस्म बना लेते हैं। इसलिये वह हमारी भस्मों के समान लाभप्रद सिद्ध नहीं होती हैं।

अभ्रक भस्म नं० १ (निघण्टु सुन्दर प्रकाश) सहस्र [१०००] पुटी १ तोला २४) १ माशे २)

अभ्रक भस्म नं० २ [निघण्टु, प्रकाश; योग, रसेन्द्र। शत (१००) पुटी ५ तोला ७।) १ तोला १।।–)

अभ्रक भस्म नं० ३ [भाव; योग निघण्टु] [२५ पुटी] ५ तोला ३।।।) १ तोला ।।।–)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकीक भस्म [धन्वन्तरि] १ तोला २॥)
अकीक पिष्टी १ तोला २)
कपर्द (कौड़ी) भस्म [प्रकाश, सु० नि०] १० तो० २) १ तोला।)
गोदन्ती हरताल भस्म [श्वेत] (सुन्दर, रसायन) १० तोला १॥।) १ तोला ≡)॥
जहरमोहरा भस्म और पिष्टी १ तोला २)
तबकी हरताल भस्म श्वेत [भैषज्य] १ तोला ६) १ माशा ॥-)
ताम्र भस्म नं० १ [कज्जली द्वारा जारित, कूपीपक्व, मयूर कण्ठ के वर्ण की] १ तोला ३)
ताम्र भस्म नं० २ [शतपुटी, पारद योगेन] २ तोला ३)
ताम्र भस्म नं० ३ [गन्धक द्वारा जारित] [रसायन सार] ५ तोला ४) १ तोला ।॥-)॥
नाग भस्म नं० १ [नागेश्वर] मंसिल योगेन जारित ५ तोला ७॥) १ तोला १॥-)
नाग भस्म नं० २ [बनौषधि द्वारा जारित] १० तो. ६) १ तोला ॥≈)
प्रवाल भस्म नं० १ [असली मूंगा की कज्जली द्वारा] १ तोला ४) १ माशा ।=)
प्रवाल भस्म नं० २ [असली मूङ्गा की बनौषधि द्वारा] ५ तोला ८) १ तोला १॥=)
प्रवाल भस्म नं० ३ [मूङ्गा की सांख की कज्जली द्वारा] ५ तोला ८) १ तोला १॥≈)
प्रवाल भस्म नं० ४ [मूङ्गा की सांख की बनौषधि द्वारा] ५ तोला ५) १ तोला १-)
प्रवाल भस्म [चन्द्रपुटी] ५ तोला ५) १ तोला १-)
प्रवाल पिष्टी [गुलाब जल में की गई] ५ तोला ४॥)
वङ्ग भस्म नं० १ [वंगेश्वर] हरताल द्वारा जारित, (योग, भाव.) ५ तोला ६।) १ तोला १।-)
बङ्ग भस्म नं० २ (श्वेत) बनौषधि द्वारा जारित (रसेन्द्र० प्रकाश० निघ०) १० तोला ५) १ तो० ॥-)
बैक्रान्त भस्म (बृ० रसराज सुन्दर) १ तोला ५)
मल्ल [संखिया] भस्म श्वेत १ तोला ४)
मृगश्रृंग भस्म (श्वेत) [निघ० भैष० भाव०] १० तोला ३) १ तोला ।-)॥

मांडूर [कीट] भस्म नं० १ रक्त वर्ण [सुन्दर योग, शार्ङ्ग, रसायन] १० तोला ३॥) १ तोला ।=)
मांडूर भस्म नं० २ कृष्ण वर्ण [प्रकाश रसेन्द्र रत्न] आयुर्वेद] १० तोला २॥) १ तोला ।)॥
मुक्ता भस्म नं० १ (कज्जली द्वारा जारित) १ तोला ७२) १ माशा ६-)
मुक्ता भस्म नं० २ (श्वेत) [धन्वन्तरि] १ तोला ६०) १ माशा ५-)
मुक्ता पिष्टी [गुलाब जल में घुटी] १ तोला ५४) १ माशा ४।-)
यशद भस्म [रसायनसार] ५ तोला ५) १ तोला १-)
रौप्य भस्म नं० १ कज्जली द्वारा जारित [प्रकाश, निघण्टु) १ तोला ८) ३ माशा २-)
रौप्य भस्म नं० २ [हरताल द्वारा जारित] [रसेन्द्र] १ तोला ६) ३ माशा १।-)
लोह भस्म नं० १ [पारद योगेन] [सुन्दर निघण्टु] ३०० पुटी १ तोला ४।) १ माशा ।=)॥
लोह भस्म नं० २ [दरद योगेन जारित] [सुन्दर निघण्टु] ५ तोला ४) १ तोला ।॥-)॥
लोह भस्म नं० ३ [बनौषधि द्वारा जारित] [शार्ङ्गधर सु०, निघण्टु, भाव] १० तोला ४) १ तोला ।≡)
स्वर्ण भस्म—कज्जली द्वारा जारित [प्रकाश० शार्ङ्ग०] ३ माशा ३६) ४ रत्ती ६-)
स्वर्ण माक्षिक भस्म [सुन्दर, प्रकाश, योग, रसेन्द्र निघ०] ५ तोला ५) १ तोला १-)
शंख भस्म [भैषज्य०] १० तोला २) १ तोला ।)
शङ्कर लोह भस्म [भाव.] १ तोला ३) ३ मा० ।॥-)
शुक्ति (मोती सीप) भस्म (प्रकाश, सुन्दर, निघण्टु) १० तोला ३) १ तोला ।-)॥
त्रिबङ्ग भस्म नं० १ पारद गन्धक हरताल द्वारा जारित, (रसायन) १ तोला ३)
त्रिबङ्ग भस्म नं० २ बनौषधि द्वारा जारित (धन्वन्तरि) ५ तोला २॥) १ तोला ॥-)

शोधित द्रव्य

कज्जली नं० १ (बराबर गन्धक पारद से की हुई) १० तोला ७।) १ तोला ।॥-)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंधक ग्रांवलासार शुद्ध १० तोला ४) १ तोला ।≡)
जयपाल शुद्ध १० तोला ३) १ तोला ।–)॥
ताल [हरताल]शुद्ध १० तोला ७॥) १ तोला ॥–)
ताम्र चूर्ण शुद्ध १ सेर १०)
धान्याभ्रक [शु० वज्राभ्रक] १ सेर ४)
शुद्ध पारद हिंगुलोत्थ [डमरू यंत्र से निकाला गया]
१० तोला ५) १ तोला ॥–)
पारद विशेष शुद्ध १ तोला ४)
पारद (संस्कारित) १ तोला १०)
बच्छनाग शुद्ध १० तोला ४) १ तोला ।≡)
विषबीज [बकपूत] १० तोला ५) १ तोला ॥–)
विषबीज (यवकुट) १० तोला ३) १ तोला ।–)॥
भल्लातक शुद्ध १० तोला ३) १ तोला ।–)॥
लोह [फौलाद] चूर्ण शुद्ध १ सेर ४॥)
शिला [संखिया] शुद्ध १० तोला ८)
१ तोला ॥।–)॥
हिंगुल शुद्ध (हंसपदी) १० तोला ३॥) १ तोला ।≡)
मांडूर शुद्ध १ सेर १॥)

पर्पटी

आयुर्वेदिक औषधियों में पर्पटी का स्थान बहुत ऊंचा है किन्तु इनको जितने उत्तम पारद से तैयार किया जायगा, उतनी ही अधिक गुणप्रद होंगी। हम विशेष रीति से पारद को तैयार करके फिर पर्पटी तैयार करते हैं, इसलिये वे बहुत गुण करती हैं।

एक बार नं० १ की पर्पटी व्यवहार करें। सभी के सुभीते के लिये दोनों प्रकार की पर्पटी तैयार करते हैं।

ताम्र पर्पटी नं० १—[वृ० निघण्टु, सुन्दर० योग]
विशेष शुद्ध पारद द्वारा १ तो. ५) १ मा० ।≡)॥
ताम्र पर्पटी नं० २ [निघण्टु. सुन्दर० योग०] हिंगुलोत्थ पारद द्वारा १ तोला २।) १ माशा ≡)॥
पञ्चामृत पर्पटी नं० १ [रसेन्द्र, निघण्टु,] विशेष शुद्ध पारद द्वारा निर्मित, १ तोला ५) १ माशा ।≡)॥
पञ्चामृत पर्पटी नं० २ [सुन्दर भैषज्य] हिंगुलोत्थ पारद द्वारा १ तोला २॥) १ माशा ।)
विजय पर्पटी— विशेष शुद्ध पारद द्वारा निर्मित
१ तोला २१) १ माशा १॥–)
बोल पर्पटी नं० १ [भैष०] विशेष शुद्ध पारद द्वारा निर्मित १ तोला ५) १ माशा ।≡)॥
बोल पर्पटी नं० २ [भैष.] हिंगुलोत्थ पारद द्वारा निर्मित १ तोला २।) १ माशा ≡)॥
रस पर्पटी नं० १ विशेष शुद्ध पारद द्वारा निर्मित
१ तोला ४॥) १ माशा ।=)॥
रस पर्पटी नं० २ हिंगुलोत्थ पारद द्वारा निर्मित
१ तोला २) १ माशा ≡)
लोह पर्पटी नं० १—विशेष शुद्ध पारद द्वारा निर्मित
१ तोला ५) १ माशा ।≡)॥
लोह पर्पटी नं० २ हिंगुलोत्थ पारद द्वारा निर्मित,
१ तोला २।) १ माशा ≡)॥
श्वेत पर्पटी १० तोला २॥) १ तोला ।)॥
स्वर्ण पर्पटी नं० १ विशेष शुद्ध पारद और स्वर्णभस्म द्वारा निर्मित १ तोला २१) १ माशा १॥–)
स्वर्ण पर्पटी नं० २ हिंगुलोत्थ पारद एवं स्वर्ण वर्क द्वारा निर्मित १ तोला १४) १ माशा १≡)॥

बहुमूल्य रस-रसायन गुटिका
(स्वर्ण मुक्ता-एवं कस्तूरी मिश्रित)

वृ० कस्तूरी भैरव रस १ तोला १४) १ माशा १≡)
कस्तूरी भैरव रस १ तोला १२) १ माशा १–)
कस्तूरी भूषण रस १ तोला १२) १ माशा १–)
वृ० कामचूडामणि रस १ तोला ६) १ माशा ॥–)
कुमार कल्याण रस १ तोला २७) १ माशा २।)
कृष्णचतुर्मुख रस १ तोला १०॥) १ माशा ॥।=)॥
चतुर्मुख चिंतामणि रस १ तोला १६) १ माशा १।=)
जयमंगलरस(स्वर्णयुक्त)१ तोला २५) १ माशा २=)
प्रवालपञ्चामृत रस १ तोला १०) १ माशा ॥।=)
पुटपक्व विषमज्वरांतक लोह [भैषज्य]
१ तोला १२) १ माशा १–)
वृ० पूर्णचन्द्र रस १ तोला १८) १ माशा १॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बसन्तकुसमाकर रस	१ तो. २१)	१ माशा १।।।)
वृ० वातचिंतामणि रस	१ तोला २१)	१ माशे १।।।)
मृगांक पोटली रस	१ तोला ७२)	१ माशा ६)
मधुमेहान्तक रस		५० गोली ८)
मन्मथाभ्र रस	१ तोला ७।)	१ माशा ।।=)।।
महाराज नृपतिवल्लभरस	१ तो. ६)	१ मा० ।।)।।
रसराज रस	१ तोला १८)	१ माशा १।।)
राजमृगांक	१ तोला २४)	१ माशा २)
म० लक्ष्मी विलास रस	१ तोला ६)	१ माशा ।।)।।
योगेन्द्र रस	१ तोला ३६)	१ माशा ३)
श्वासचिंतामणि रस	१ तोला १२)	१ माशा १)।।
स्वर्ण बसन्त मालती नं० १ हिंगुलस्थ के स्थान पर सिद्ध मकरध्वज नं० १ तथा स्वर्ण वर्क के स्थान पर स्वर्ण भस्म डालकर बनाई हुई अत्युत्तम व परीक्षित—	१ तोला २१)	१ माशा १।।।)
स्वर्णबसन्त मालती नं०२	१ तोला १२)	१ मा० १)
सर्वाङ्ग सुन्दर रस	१ तोला १२)	१ माशा १)।।
संग्रहणी कपाट रस नं० १	१ तो. २५)	१ मा. २=)
सूतशेखररस(स्वर्णयुक्त)	१ तोला १०)	१ माशे ।।।=)
हिरण्यगर्भ पोटली रस	१ तोला २१)	१ माशा १।।।)
हेमगर्भ रस	१ तोला २४)	१ माशा २)

रसायन गुटिका

अग्निकुमार रस	५ तोला १।।।)	१ तोला ।=)
अजीर्ण कंटक रस	५ तोला २।।)	१ तोला ।।-)
अर्शान्तक वटी	५ तोला २।।)	१ तोला ।।-)
अम्लपित्तांतक लोह	५ तोला ३।।)	१ तोला ।।।)।।
अग्नितुण्डी वटी	५ तोला २।)	१ तो० ।≡)।।
आनन्दभैरव रस लाल	५ तोला २)	१ तोला ।≡)
आनन्दोदय रस	५ तोला ६)	१ तोला १≡)।।
आदित्य रस	५ तोला ४)	१ तोला ।।-)
आमवातेश्वर रस	५ तोला १०।)	१ माशा ।।≡)
आरोग्यवर्धिनी वटी	५ तोला २।)	१ तोला ।।)।।
इच्छाभेदी रस	५ तोला २।)	१ तोला ।।)।।
इच्छाभेदी वटी (गोली)	५ तोला ३)	१ तोला ।।=)
उपदंशकुठार रस	५ तोला २।।)	१ तोला ।।)।।
उष्णवातघ्न वटी	५ तोला ६।)	१ तोला १।)।।
एलादि वटी	१० तोला २)	१ तोला ≡)।।
एलुआदि वटी	१० तोला २)	१ तोला ≡)।।
कपूर रस (अतीसारे)	५ तो. ५।।=)	१ तो. १=)।।
कनक सुन्दर रस	५ तोला २।)	१ तोला ।≡)
कफकुठार रस	५ तोला ४)	१ तोला ।।।-)
कफकेतु रस	५ तोला २)	१ तोला ।=)।।
करंजादि वटी	५०० गोली ४)	५० गोली ।≡)।।
कामिनी विद्रावण रस	१ तोला १।।।)	३ मा० ।≡)।।
कामाग्नि संदीपन मोदक	२० तो. ४।।)	४ तो. १≡)
कामधेनु रस (भैष०)	२ तोला ३)	६ माशा ।।।-)
कांकायन गुटिका	५ तोला १=)	१ तोला ।)
कीटमर्द रस	५ तोला १।।=)	१ तोला ।-)।।
क्रव्यादि रस	५ तोला ७।)	१ तोला १।।)।।
कृमिकुठार रस	५ तोला ३)	१ तोला ।।=)
खैरसार वटी	२० तोला ३।।)	१ तोला ≡)।।
गंधक वटी (धन्व०)	२० तोला ४।।)	१ तोला ।)
गंधक रसायन	५ तोला ५)	१ तोला १-)
गर्भविनोद रस	५ तोला २)	१ तोला ।≡)
गर्भपाल रस	५ तोला ५।)	१ तोला १-)
गर्भचिंतामणि रस	१ तोला २।)	३ माशे ।।-)।।
गुल्मकुठार रस	५ तोला ४)	१ तोला ।।।-)
गुल्मकालानल रस	५ तोला ३।।।)	१ तोला ।।।)।।
गुड़ पिप्पली	१० तोला २।।)	१ तोला ।-)
गुड़मार वटी	५ तोला १=)	१ तोला ।)
ग्रहणी गजेन्द्र रस	५ तोला ७।।।)	१ तोला १।।-)
ग्रहणी कपाट रस नं०२	५ तोला २।।)	१ तोला ।=)
ग्रहणी कपाट रस (लाल)	५ तोला ४।)	१ तोला ।।।=)
घोड़ा चोली रस (अश्व कंचुकी)—	५ तोला १।।।)	१ तोला ।=)
चन्द्रप्रभा वटी	२० तोला १०)	१ तोला ।।)।।
चन्द्रोदय वर्ति	५ तोला २।)	१ तोला ।।)
चन्द्रकला रस	५ तोला ४।।)	१ तोला ।।।≡)
चन्द्रामृत रस	५ तोला ३)	१ तोला ।।=)
चित्रकादि वटी	२० तोला ४।)	१ तोला ।)
ज्वरांकुश रस (महा)	५ तोला २।।)	१ तोला ।।)।।
जयवटी (रसायनसार)	५ तोला ६।)	१ तोला १।-)
जलोदरादि वटी	५ तोला २।।)	१ तोला ।।-)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जातीफल रस	५ तोला	२॥।)	१ तोला	॥-)
तक्र वटी	५ तोला	२॥।)	१ तोला	॥-)
ताप्यादि लोह	२ तोला	५)	३ माशा	॥≡)
दुर्जलजेता रस	५ तोला	२।)	१ तोला	।≡)॥
दुग्धवटी नं० १	२ तोला	५)	३ माशा	॥=)॥
दुग्धवटी नं० २	५ तोला	२।)	१ तोल	।≡)॥
धात्री लोह	५ तोला	३॥।)	१ तोला	॥।)॥
नवज्वरहर वटी	५ तोला	२।)	१ तोला	।≡)॥
नवायस लोह [तिरङ्गिणी] लोहभस्म से निर्मित	५ तोला	२।)	१ तोला	।≡)॥
नष्टपुष्पांतक रस	२ तोला	४)	३ माशा	॥)॥
नृपतिवल्लभ रस	५ तोला	४॥।)	१ तोला	१)
नाराच रस	५ तोला	२॥)	१ तोला	॥)॥
प्रतापलंकेश्वर रस	५ तोला	२॥)	१ तोला	॥)॥
प्रदरारि रस	५ तोला	२।)	१ तोला	।≡)
प्रदरारि लोह	५ तोला	५)	६ माशा	॥)॥
प्रदरांतक रस	५ तोला	५।)	६ माशा	॥-)
प्रदरान्तक लोह	५ तोला	६।)	६ माशा	॥=)॥
प्लीहारि रस	५ तोला	२॥)	१ तोला	॥)॥
प्राणेश्वर रस	२ तोला	४)	६ माशा	१-)
प्राणदा गुटिका	५ तोला	२)	१ तोला	।≡)
पंचामृत रस नं.१	५ तोला	२॥)	१ तोला	॥)॥
पंचामृत रस नं.२	५ तोला	२॥)	१ तोला	॥)॥
पाशुपात रस	५ तोला	३।)	१ तोला	॥≡)
पीपल ६४ पहरा	१ तोला	२॥)	३ माशा	॥=)॥
पुनर्नवादि मांडूर	१० तोला	३॥।)	१ तोला	।=)॥
वृ० शंखवटी	१० तोला	४)	१ तोला	।≡)
वृ० नायकादि रस	१० तोला	२।)	१ तोला	।)
बहुमूत्रान्तक रस	५ तोला	५॥)	१ तोला	१=)
बहुशाल गुड़	१० तोला	३।)	१ तोला	।-)॥
बालामृत रस	२ तोला	२।)	३ माशा	।-)
वातगजांकुश रस	५ तोला	५)	१ तोला	१)॥
विशूचिका विध्वंस रस	१ तोला	६)	१ माशा	॥।)॥
विषम ज्वरांतक लोह	५ तोला	५।)	१ तोला	१-)
विषमुष्टिका वटी	५ तोला	२।)	१ तोला	।≡)॥
वेताल रस	२ तोला	४)	३ माशा	॥-)
व्योषादि वटी	१० तोला	१॥।)	१ तोला	≡)
मृत्युञ्जय रस	५ तोला	२॥।)	१ तोला	॥-)
महाराज वङ्ग भस्म	१ तोला	६)	१ माशा	॥)॥
मकरध्वज वटी			५०० गोली	२०)
महा गंधक रस	५ तोला	२॥)	१ तोला	॥)॥
महा शूलहर रस	५ तोला	४।)	१ तोला	॥।-)
मदनानन्द मोदक	२० तोला	३॥)	५ तोला	॥।≡)
महा वातविध्वंस रस	२ तोला	४)	६ माशे	॥)॥
मार्कण्डेय रस	५ तोला	२।)	१ तोला	।≡)
मूत्रकृच्छ्रांतक रस	१ तोला	२)	३ माशा	॥)॥
मेहमुद्गर रस	५ तोला	३)	१ तोला	॥=)
यकृतहर लोह	५ तोला	३॥)	१ तोला	॥।)
रक्त पित्तांतक रस	५ तोला	३॥।)	१ तोला	॥।)॥
रामबाण रस	५ तोला	२॥।)	१ तोला	॥-)
लशुनादि वटी	१० तोला	२॥)	१ तोला	।)॥
लघुमालती बसन्त	२ तोला	३)	३ माशा	।=)॥
लक्ष्मी विलास रस	५ तोला	५)	१ तोला	१-)
लक्ष्मीनारायन रस	२ तोला	३॥)	६ माशा	॥।=)॥
लाई [रस] चूर्ण	५ तोला	२।)	१ तोला	।≡)
लीलावती गुटिका	५ तोला	१॥।=)	१ तोला	।=)॥
लीलाविलास रस	५ तोला	४।)	१ तोला	॥।=)
लोकनाथ रस वृ०	१ तोला	३)	३ माशे	॥।-)
लोकनाथ रस [भैष.]	५ तोला	५)	१ तोला	१-)
श्वासकुठार रस	५ तोला	२।)	१ तोला	।≡)
शंखवटी	२० तोला	६)	१ तोला	।-)
शंशमनी वटी	५ तोला	४)	१ तोला	॥।-)
शिरोवज्र रस	५ तोला	२॥।)	१ तोला	॥-)
शिलाजीत वटी	५ तोला	२॥।)	१ तोला	॥-)
शूलवज्रिणी वटी	५ तोला	२।)	१ तोला	।≡)
शूलगज केशरी	५ तोल	६।)	६ माशे	॥=)॥
शोथोदरारि लोह	५ तोला	६।)	६ माशा	॥=)॥
शृङ्गाराभ्रक रस	५ तोला	५)	१ तोला	१-)
स्मृतिसागर रस	२ तोला	४)	३ माशा	॥)
संजीवनी वटी	५ तोला	१॥।)	१ तोला	।=)
समीरगज केशरी	२ तोला	३॥)	३ माशा	॥)
सर्वज्वरहर लोह	५ तोला	३।)	१ तोला	॥≡)
सिद्ध प्राणेश्वर	५ तोला	२॥।)	१ तोला	॥-)
सूतसेखर रस	१ तोला	२)	३ माशा	॥)॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूरणमोदक २० तोला ३।।) १ तोला ≡)।।
सौभाग्य बटी ५ तोला २।।) १ तोला ।।)।।
हिंग्वादि बटी २० तोला ३।।) १ तोला ≡)।।
त्रिपुर भैरव रस ५ तोला २।।) १ तोला ।।–)
त्रिभुवनकीर्ति रस १० तोला ५) १ तोला ।।)।।
त्रिविक्रम रस १ तोला २) ३ माशा ।।)।।

गुग्गुल

अमृतादि गुग्गुल २० तोला ५) १ तोला ।)।।
कांचनार गुग्गुल २० तोला ३।।) १ तोला ≡)।।
किशोर गूगल २० तोला ३।।) १ तोला ≡)।।
गोक्षुरादि गूगल २० तोला ४।।) १ तोला ।)
रसाभ्र गूगल ५ तोला ४) १ तोला ।।।–)।।
वृ० योगराज गूगल २० तोला १२।।) १ तोला ।।≡)
योगराज गूगल २० तोला ३।।) १ तोला ≡)।।
सिंहनाद गूगल २० तोला ६) १ तोला ।–)
त्रयोदशांग गूगल २० तोला ५) १ तोला ।)।।
त्रिफलादि गूगल २० तोला ४।।) १ तोला ।)

अरिष्ट-आसव

अमृतारिष्ट १ बोतल १।।।–)
१ पौंड १।।) १ पाव ।।।–)
अर्जुनारिष्ट १ बोतल १।।)
१ पौंड १।–) १ पाव ।।≡)।।
अरविन्दासव १ बोतल २)
१ पौंड १।।=) १ पाव ।।।=)
अशोकारिष्ट १ बोतल १।।=)
१ पौंड १।=) १ पाव ।।।)
अभयारिष्ट १ बोतल १।।)
१ पौंड १।–) १ पाव ।।≡)।।
अहिफेनासव आध सेर १०)
आध औंस ।=)
अश्वगन्धारिष्ट १ बोतल १।।।≡)
१ पौंड १।।=) १ पाव ।।।=)
उसीरासव १ बोतल १।।)
१ पौंड १।–) १ पाव ।।≡)।।
कनकसुन्दरासव १ बोतल १।।।)
१ पौंड १।≡) १ पाव ।।।)।।
कनकासव १ बोतल १।।)
१ पौंड १।–) १ पाव ।।≡)।।
कर्पूरासव आध सेर १०)
आध औंस ।=)
कुमारी आसव १ बोतल १।।)
१ पौंड १।–) १ पाव ।।≡)।।
कुटजारिष्ट १ बोतल १।।)
१ पौंड १।–) १ पाव ।।≡)।।
खदिरारिष्ट १ बोतल १।।।)
१ पौंड १।≡) १ पाव ।।।)।।
चन्दनासव १ बोतल १।=)
१ पौंड १=) १ पाव ।।=)
दशमूलारिष्ट (कस्तूरी मिश्रित)
१ बोतल ४)
१ पौंड ३।) १ पाव १।।≡)
दशमूलारिष्ट १ बोतल १।।।)
१ पौंड १।≡) १ पाव ।।।)।।
वृ० द्राक्षासव १ बोतल ४)
१ पौंड ३।) १ पाव १।।≡)
द्राक्षासव खिंचा १ बोतल २)
१ पौंड १।।=) १ पाव ।।।=)
द्राक्षासव [बिना खिंचा प्रचलित]
१ बोतल १।।=)
१ पौंड १।≈) १ पाव ।।।)
द्राक्षारिष्ट १ बोतल १।।=)
१ पौंड १।=) १ पाव ।।।)
देवदार्व्यारिष्ट १ बोतल १।।।≡)
१ पौंड १।।=) १ पाव ।।।=)
पत्रांगासव १ बोतल १।।)
१ पौंड १।–) १ पाव ।।≡)।।
पिपल्यासव १ बोतल १।।)
१ पौंड १।–) १ पाव ।।≡)।।
पुनर्नवासव १ बोतल १।=)
१ पौंड १=) १ पाव ।।=)
बल्लभारिष्ट १ बोतल २=)
१ पौंड १।।) १ पाव ।।≡)
बबूलारिष्ट १ बोतल १।।)
१ पौंड १।–) १ पाव ।।≡)।।
बांसारिष्ट १ बोतल ४।।)
१ पौंड ३।।≡) १ पाव २)
बालरोगान्तकारिष्ट
१ बोतल १।।=)
१ पौंड १।≈) १ पाव ।।)
मृगमदासव १ पाव ८)
४ औंस ४) २ औंस २–)
रक्तशोधकारिष्ट १ बोतल १।।)
१ पौंड १।–) १ पाव ।।≡)।।
रोहितकारिष्ट १ बोतल १।।)
१ पौंड १।–) १ पाव ।।≡)।।
लोहासव १ बोतल १।।)
१ पौंड १।–) १ पाव ।।≡)
सारस्वतारिष्ट नं० १ (स्वर्ण युक्त)
१ पाव ५) २ औंस १।–)
सारस्वतारिष्ट १ बोतल १।।।)
१ पौंड १।≡) १ पाव ।।।)।।
सारिवाद्यासव १ बोतल २)
१ पौंड १।।=) १ पाव ।।।=)

अर्क

अर्क उसबा १ बोतल १।।।)
१ पौंड १।≡) १ पाव ।।।)।।
दशमूल अर्क १ बोतल १।।।)
१ पौंड १।≡) १ पाव ।।।)।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्राक्षादि अर्क १ बोतल १।।।) १ पौंड १।≡) १ पाव ।।।)।।
सुदर्शन अर्क १ बोतल १।।।) १ पौंड १।≡) १ पाव ।।।)।।
महामंजिष्ठादि अर्क १ बोतल १।।।) १ पौंड १।≡) १ पाव ।।।)।।
अर्क सौंफ १ बोतल १।) १ पौंड १।≡) १ पाव ।।।)।।
रास्नादि अर्क १ बोतल १।।।) १ पौंड १) १ पाव ।।–)
अर्क अजमाइन १ बोतल १।।) १ पौंड १।–) १ पाव ।।≡)।।
अर्क पोदीना १ बोतल १।।।) १ पौंड १।≡) १ पाव ।।।)।।
मृतसंजीवनी अर्क १ बोतल २।) १ पौंड १।।।=) १ पाव १)

क्वाथ

दशमूल क्वाथ १ मन ३५) १ सेर १)
२-२ तोले की १०० पुड़िया ४)
दार्व्यादि क्वाथ १ सेर १।।)
१०-१० तोले की ८ पुड़िया १।।।)
देवदार्व्यादि क्वाथ १ सेर १)
" " ८ पुड़िया १।)
द्राक्षादि क्वाथ १ सेर १)
" " ८ पुड़िया १।)
बलादि क्वाथ १ सेर १।)
१०-१० तोले की ८ पुड़िया १।।)
महामंजिष्ठादि क्वाथ १ सेर १।)
" " ८ पुड़िया १।।।)
महारास्नादि क्वाथ १ सेर १।।)
" " ८ पुड़िया १।।।)
त्रिफलादि क्वाथ १ सेर १)
" " ८ पुड़िया १।)

चूर्ण

	१ सेर	१ छटांक डिब्बा में	१ छटांक शीशी में
अग्निमुख चूर्ण	७।।)	।।)।।	।।–)
अग्निसंदीपन चूर्ण	७।।)	।।)।।	।।–)
अविपत्तकर चूर्ण	७)	।≡)	।≡)।।
अजीर्णपानक	८)	।।)।।	।।–)
अग्निवल्लभक्षार	१०)	।।≡)	।।।)
उदरभास्कर चूर्ण	७)	।।)	।।)।।
एलादि चूर्ण	७।।)	।।)।।	।।–)
कपित्थाष्टक चूर्ण	६)	।≡)	।≡)।।
कामदेव चूर्ण	६)	।≡)	।≡)।।
कुमकुमादि चूर्ण		२।। तोला	।।।–)
गंगाधर चूर्ण	५)	।=)	।=)।।
चन्दनादि चूर्ण	५)	।=)	।=)।।
ज्वरभैरव चूर्ण	५)	।=)	।=)।।
जातीफलादि चूर्ण	१०)	।।=)	।।≡)
तालीसादि चूर्ण	७।।)	।।)	।।)।।
दशनसंस्कार चूर्ण	६)	।≡)	।≡)।।
धातुस्रावहर चूर्ण	१२)	।।।)	।।।–)
नारायण चूर्ण	५।।)	।=)	।=)।।

	१ सेर	१ छटांक डिब्बा में	१ छटांक शीशी में
निम्बादि चूर्ण	५)	।=)	।=)।।
प्रदरान्तक चूर्ण	५)	।=)	=)।।
पंचसकार चूर्ण	५)	।=)	।=)।।
प्रदरारि चूर्ण	५)	।=)	।=)।।
पुष्यानुग चूर्ण	६)	।≡)	।≡)।।
मनोरम चूर्ण (स्वादिष्ट)	७)	।≡)।।	।।)
यवानी खांडव चूर्ण	५।।)	।=)	।=)।।
लवंगादि चूर्ण	१०)	।।=)	।।=)।।
लवणभास्कर चूर्ण	५)	।=)	।=)।।
स्वप्नप्रमेहहर चूर्ण	१२)	।।।)	।।।–)
सारस्वत चूर्ण	५)	।=)	।=)।।
सामुद्रादि चूर्ण	७)	।≡)।।	।।)
शृंग्यादि चूर्ण	७)	।≡)।।	।।)
सितोपलादि चूर्ण	१६)	१)।।	२।। तो० ।।–)
सुदर्शन चूर्ण	५)	।=)	५ तो. शी. ।≡)
हिंग्वाष्टक चूर्ण	६)	।≡)	।≡)।।
त्रिफलादि चूर्ण	४)	।)।।	।–)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैल

	१ पौंड	४ औंस	२ औंस
आंवला तैल	४)	१)	।।-)
इरनेदादि तैल	५)	१।-)	।।≡)
कर्पूरादि तैल	६)	१।।)	।।।-)
कटफलादि तैल	४)	१-)	।।-)
कन्दर्पसुन्दर तैल	६)	१।।)	।।।-)
काशीसादि तैल	४)	१-)	।।-)
किरातादि तैल	३।।)	।।।≡)	।।)
कुमारी तैल	४)	१-)	।।-)
महर्षी मिहिर तैल	४)	१-)	।।-)
गुडूच्यादि तैल	४)	१-)	।।-)
चन्दनादि तैल	५)	१।-)	।।≡)
जात्यादि तैल	४)	१-)	।।-)
दशमूल तैल	४)	१-)	।।-)
दार्व्यादि तैल	३।।)	।।।≡)	।।)
महानारायण तैल	४)	१-)	।।-)
पानीनाशक तिला		५)	२।।)
पिपल्यादि तैल	३।।)	।।।≡)	।।)
पिंड तैल	४।।)	१≡)	।।=)
पुनर्नवादि तैल	४)	१-)	।।-)
ब्राह्मी तैल	५)	१।-)	।।≡)
बिल्व तैल	६)	१।।)	।।।-)
विषगर्भ तैल	३)	।।।-)	।≡)
भृङ्गराज तैल	४)	१-)	।।-)
महा विषगर्भ तैल	४)	१-)	।।-)
बैरोजा का तैल	४।।)	१≡)	।।=)
महा मिरच्यादि तैल	३।।)	।।।≡)	।।)
महामाष तैल	३।।)	।।।≡)	।।)
मोम का तैल	६)	१।।)	।।।-)
राल का तैल	५)	१।)	।।≡)
लाक्षादि तैल	४)	१-)	।।-)
शुष्कमूलादि तैल	४)	१-)	।।-)
षट् बिन्दु तैल	४)	१-)	।।-)
हिमसागर तैल	४।।)	१≡)	।।=)

दवाओं का तैल

	१ औंस	पाव औंस
चन्दन का तैल	४)	१=)
चाल मोंगरे का तैल	।=)	
यूकेलिप्टस आइल	।।-)	≡)
इलायची का तैल	१)	।)।।
दालचीनी का तैल	२)	।।)।।
बादाम रोगन	१)	।)।।
लोंग का तैल	२)	।।)।।
पिपरमेंट तैल	२-)	।।-)

घृत

	१ सेर	४ औंस
अर्जुनघृत	१२)	१।।-)
अशोक घृत	१२)	१।।-)
अग्नि घृत	१०)	१।-)
कदली घृत	१४)	१।।।-)
कामदेव घृत	१५)	१।।।≡)
दूर्वादि घृत	१०)	१।-)
धात्री घृत	१०)	१।-)
पंचतिक्त घृत	१०)	१।-)
फल घृत	११)	१।≡)
ब्राह्मी घृत	११)	१।≡)
बिन्दु घृत		४)
महात्रिफलादि घृत	१३)	१।।≡)
श्रङ्गीगुण घृत		१=)
सारस्वत गृत	१०)	१।-)
पुराना घृत (६० वर्ष)	१ तोला	१)

क्षार सत्व द्रव

बज्रक्षार चूर्ण	१० तोला	२)
अपामार्ग क्षार	,,	२)
बांसा क्षार	,,	३)
कटेरी क्षार	,,	३)
कदली क्षार	,,	२।।)
इमली क्षार	,,	२)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिल क्षार		१० तोला ३)
मूली क्षार		,, ३)
ढाक क्षार		,, २)
आक का क्षार		,, २)
तम्बाकू क्षार		,, ३)
केतकी क्षार		,, १।।।)
चना (चणक) क्षार		,, ३)
नाड़ी (नेत्रबाल) क्षार		,, ३)
शंखद्राव		४ औंस ६)
नेत्रबिन्दु पाव भर ७।)	आध औंस ।।)	पाव औंस ।)
यवक्षार	१ तोला =)।।	१ सेर १०)
गिलोय सत्व		१ सेर २०)
शहद	१ सेर ३।।)	२ औंस ।=)

अवलेह

च्यवनप्राश अवलेह १ सेर डि० ४) आध सेर शीशी २।)
१ पाव शीशी १=) १ पाव डिब्बा १-)

	१ सेर	१ पाव शीशी में
कुटजावलेह	१ सेर ५)	१ पाव शीशी में १।=)
कण्टकारी अवलेह	,, ५।।)	,, १।।)
कुशावलेह	,, ५)	,, १।=)
वांसावलेह	,, ५)	,, १।=)
अद्रकखंड	,, ५)	,, १।=)
विषमुष्टिकावलेह		५ तोला ४)
मधुकाद्यवलेह		१५ तोला २।।=)

पाक

	१ सेर	आध पाव की शीशी
कन्दर्प सुन्दर पाक	८)	१=)
बादाम पाक	१०)	१।=)
मूसली पाक	१०)	१।=)
सुपारी पाक	८)	१=)
सौभाग्यसुंठी पाक	८)	१=)

कतिपय मुख्य वस्तुयें

—*—

शिलाजीत सूर्यतापी	१ सेर ४५)
,, अग्नितापी	१ सेर २५)
अष्टवर्ग (अत्युत्तम)	१ सेर १०)
यवक्षार	१ सेर १०)
गिलोय सत्व	१ सेर २०)
असली मुलहठी सत्व (स्वयं निकाला हुआ),	१ सेर १२)
असली ब्राह्मी	१ सेर २)
असली दशमूल	१ मन ३५)
,,	१ सेर १)
असली तालीस पत्र	१ सेर २)
सर्पगन्धा	१ सेर १२)
सोमकल्प	१ सेर २।।)
अशोक छाल	१ सेर १।।)
रोहतक छाल	१ सेर १)
वंशलोचन असली	१ सेर ३०)
हिंगुल रूमी	१ सेर २०)
उलट कम्बल	१ सेर ६)
मूंगा की सांख	१ सेर २०)

भस्मार्थ शुद्ध द्रव्य

ताम्रचूर्ण (अशोधित)	१ सेर	७)
फौलाद चूर्ण (अशोधित)	,,	३)
फौलाद चूर्ण शुद्ध	,,	४)
अशोधित जस्ता	,,	६)
शुद्ध जस्ता	,,	८)
शुद्ध बंग	,,	१८)
वज्राभ्रक	,,	३)
धान्याभ्रक	,,	४)
शंख टुकड़े	,,	१।)
मोती सीप	,,	४)
पीली कौड़ी	,,	३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुभूत पेटेंट औषधियां

ये औषधियां ५२ वर्ष से वैद्यों, कविराजों तथा धर्मार्थ औषधालयों में सफलता के साथ व्यवहार होती आई हैं तथा इनकी उत्तमता के विषय में किसी प्रकार संदेह नहीं करना चाहिये। इन औषधियों के यहां खेरीज भाव दिये गये हैं। २५ प्रतिशत कमीशन कम कर इनके थोक भाव मान लेना चाहिये।

मकरध्वज वटी

इसके सेवन से प्रमेह, स्वप्नप्रमेह, मधुमेह, बहु-मूत्र आदि विकार नष्ट होते हैं। निर्बल स्नायु बलवान होता है। भोजन पचकर रस-रक्त आदि सप्त-धातुयें निर्माण हो निर्बलता नष्ट होती है। स्तम्भन शक्ति भी बढ़ जाती है। मूल्य १ शीशी (४१ गोलियों की) २॥=) २१ गोलियों की एक शीशी १।≡)

कामदीपक तिला

हस्तमैथुन आदि कुटेवों के कारण उत्पन्न हुई नपुंसकता को नष्ट करने के लिये अद्वितीय है। गुप्तेन्द्रिय की नसों को मजबूत बनाता है। १ शीशी २॥)

क्लीवत्वहर पोटली

नपुंसक मनुष्य तिला लगाते हुये इसका भी सैंक करें और चमत्कार देखें। मूल्य १० पोटली २)

नोट—उपर्युक्त तीनों औषधियां एक साथ व्यवहार करने से घोर नपुंसकता भी अवश्य नष्ट होती है, इसमें सन्देह नहीं है। तीनों औषधियां एक साथ मंगाने पर मूल्य ६) पोस्ट-व्यय १)

ज्वरारि

ज्वर-जूड़ी की कुनीन रहित अत्युपयोगी प्रसिद्ध दवा है। इसके व्यवहार करने से जूड़ी और उसके उपद्रव शीघ्र शान्त होते हैं। मूल्य—१ शीशी १० मात्रा (४ औंस) १) बड़ी शीशी २० मात्रा (८ औंस) १॥) २० औंस की पूरी बोतल ५० मात्रा ३)

कासारि

हर प्रकार की खांसी के लिये सर्वोत्तम औषधि। यदि खांसी अन्य रोगों के साथ हो तब उन रोगों की औषधियों के अनुपान रूप में कासारि का व्यवहार कीजिये और चमत्कार देखिये। मूल्य—१ शीशी (४ औंस २० मात्रा) १), छोटी शीशी (१ औंस ५ मात्रा) ।=)

श्वासामृत

श्वास का दौरा होता है तो रोगी का सोना-बैठना हराम हो जाता है, इस दशा में श्वासामृत की २-३ मात्रा उस कष्ट को मिटा रोगी को चैन देती हैं। कुछ दिनों के निरन्तर सेवन से रोग जड़ से नष्ट हो जाता है। १ शीशी (४ औंस १६ मात्रा) ३)

प्रदरहर सैट

स्त्री-सुधा—इसके सेवन से सब प्रकार के प्रदर योनि-शूल, कुक्षि-शूल, महावारी की खराबी, गर्भाशय विकार आदि स्त्रियों के गुप्त-रोग नष्ट होते हैं। मूल्य-१ बोतल (२० औंस) ३॥), १ शीशी (८ औंस, दुरंगे कार्ड-बक्स में पैकिंग) १॥)

मधुकाद्यवलेह—यह खिला हुआ पाक जैसा बनाया जाता है और इसके सेवन से सब प्रकार के प्रदर, योनि-विकार, कष्टार्तव, योनि शूल आदि नष्ट हो स्फूर्ति व बल बढ़ जाता है। मूल्य १ शीशी (१५ तोला) ३॥)

नोट—इन दोनों औषधियों को एक साथ सेवन करने से प्रदर एवं स्त्रियों के अन्य विशेष रोग शीघ्र नष्ट होते हैं। इन दोनों को मिलाकर ही "प्रदरहर सैट" कहते हैं। मूल्य दोनों का ६) पोस्ट-व्यय २॥)

श्वेतकुष्ठहर सैट

[अवलेह-वटी और घृत]

इन तीनों औषधियों के निरन्तर सेवन से कितना ही पुराना रोग हो अवश्य नष्ट हो जाता है। यह रोग कष्ट-साध्य होता है और इसकी चिकित्सा अनुभवी चिकित्सक ही कर सकता है। ये औषधियां २०-२२ वर्ष से सफलता-पूर्वक व्यवहार की जाती रही हैं और इनसे आन्तरिक विकृति ठीक हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्त शुद्ध होता और दाग़ सदैव के लिये नष्ट हो जाते हैं। मूल्य-१५ दिन सेवन योग्य तीनों दवा का ५)

श्वेतकुष्ठहर अवलेह १ डिब्बा (३० तोला) ३)
,, घृत १ शीशी (१ औंस) १।)
,, वटी १ शीशी (३२ गोली) १।।)

हिस्टेरियाहर सैट

इस सैट में हिस्टेरिया-नाशक तीन औषधियां हैं-हिस्टेरियाहर वटी, क्षार व आसव। इनके सेवन से कठिन से कठिन हिस्टेरिया रोग उपद्रव सहित नष्ट हो जाता है। दौरा (फिट) शीघ्र ही रुक जाते हैं।

मूल्य—१५ दिन सेवन योग्य तीनों औषधियों का ७)
हिस्टेरियाहर वटी–१ शीशी (३० गोली) २।।)
हिस्टेरियाहर आसव–१ बोतल (२० औंस) ४)
हिस्टेरियाहर क्षार–१ शीशी (आध औंस) १।।)

रक्तदोषहर सैट

इसमें भी तीन औषधि—धन्वन्तरि आयुर्वेदीय सालसापरेला, तालकेश्वर रस तथा इन्द्रवारुणादि क्वाथ हैं। इन औषधियों के सेवन से कैसा ही रक्त या चर्म-विकार हो, अवश्य नष्ट हो जाता है। उपदंश व सुजाक जन्य विकार, वातरक्त, श्लीपद, खाज फोड़े-फुंसी सभी रोग नष्ट हो शरीर सुन्दर हो जाता है।

मूल्य—१५ दिन सेवन योग्य ६) पोस्ट-व्यय ३।।)
धन्वन्तरि आयुर्वेदीय सालसापरेला–
१ बोतल (२० औंस) ४)
सुन्दर कार्डबक्स में १ शीशी (८ औंस) १।।)
तालकेश्वर रस—१ शीशी (६ मासे) ४)

इन्द्रवारुणादि क्वाथ—इसके सेवन से चिरसंग्रहीत आंव दस्त होकर निकलती है, उस समय रोगी के पेट में मरोड़, कभी-कभी उल्टी और अन्य परेशानी प्रतीत होती हैं। इनकी चिन्ता न करें। यह क्वाथ आंव निकालकर रक्त को शुद्ध करता है। मूल्य—१२ मात्रा (२४ तोला) ।।)

अर्शान्तक सैट

इस सैट में तीन औषधियां हैं। चूर्ण, वटी और मलहम। इनके सेवन से भयंकर अर्श (बवासीर) रोग नष्ट हो जाता है, मस्से धीरे-धीरे सूख कर गिर जाते हैं।

अर्शान्तक वटी १ शीशी (४० गोली) १)
अर्शान्तक मलहम १ शीशी (आध औंस) ।।।)
अर्शान्तक चूर्ण १ शीशी (७।। तोला) १।)

पायरिया मंजन

यह पायरिया (दन्त-पूय) के लिये शत्रु रूप है। मसूड़े से पीव या खून निकलना; टीस मारना, पानी लगना सब के लिये उपयोगी है। नित्य प्रति लगाने से दान्त चमकीले रहते हैं और कोई कष्ट नहीं होने पाता है। मूल्य १ शीशी ।।)

सुजाक हर कैपसूल

नया या पुराना किसी प्रकार का सुजाक हो इसके सेवन से अवश्य जाता रहेगा। मूत्र का थोड़ा-थोड़ा होना, मवाद आना, मवाद से हर समय धोती पर धब्बे पड़ना आदि शिकायतें इसके सेवन से नष्ट होती हैं। मूल्य–१ शीशी [२१ कैपशूल] ३)

सुजाक की पिचकारी की दवा

सुजाकहर कैपशूल के साथ-साथ इसका भी व्यवहार करें, तो शीघ्र लाभ होगा। मूल्य १ शीशी (२ औंस) १)

उपदंशहर कैपशूल

उपदंश (आतशक) सम्बन्धी सभी विकारों को नष्ट करने के लिये प्रसिद्ध एवं निरापद दवा है। आंतरिक दोष दूर कर रक्त को शुद्ध कर देती है और पुनः रोग नहीं होता। मूल्य १ शीशी (३० कैपशूल) २।।)

नयनामृत सुरमा

यह सुरमा शीतल एवं अत्युपयोगी है। कुछ दिन नियमित लगाने से क्षीण ज्योति भी ठीक हो जाती है। पानी बहना, धुंधला दिखना प्रभृति विकार दूर होते हैं। मूल्य–१ शीशी सुन्दर दुरङ्गे कार्डबक्स के पैकिंग में (३ माशे वाली) ।।)

धन्वन्तरि बाम

शिर दर्द के लिये सुगन्धित व शीतल मनमोहक मलहम। मूल्य—१ शीशी (आध औंस) ।।)

दाद की दवा

दाद की सर्वोत्तम दवा। कपड़ों पर न दाग़ ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ते हैं और न लगती है। खुजली १-२ बार लगाने से नष्ट होती है। ३-४ दिन के व्यवहार से दाद नष्ट हो जाता है। मूल्य—१ शीशी [आध औंस] ।।)

कामिनी गर्भ रक्षक

गर्भ की रक्षा के लिये सर्वोत्तम है। अनेकों स्त्रियों के बार-बार गर्भ रहता है और २-३ माह बाद गिर पड़ता है। उन स्त्रियों को यह औषधि नियमित सेवन कराइये, गर्भ पूर्ण होकर सुन्दर सन्तान उत्पन्न होगी। मूल्य १ शीशी [२ औंस] २)

शिरोविरेचनीय सुरमा

यदि आपको बार-बार जुकाम हो जाता हो; या नया पुराना शिर दर्द हो या जुकाम से उत्पन्न हुआ शिर दर्द हो तो आप इसको प्रातःकाल नेत्रों में आंज लीजियेगा, सम्पूर्ण बलगम नेत्र व नाक के द्वारा निकल जायगा और सभी कष्ट दूर होंगे पुराने शिर-दर्द पथ्यादि काथ तथा शिरोवज्र रस के साथ सेवन करने से शीघ्र दूर होगा। मूल्य-१ माशे की शीशी ।-)

खाजरिपु

खाज का रोग आजकल बड़ा परेशान किये हुए है। बाजार में इसकी औषधिया भी बहुत चल पड़ी हैं, लेकिन यह तैल गीली-सूखी खाज के लिये सैकड़ों रोगियों पर सफलता के साथ व्यवहार किया जा चुका है। पैकिंग सुन्दर किया गया है। मूल्य एक शीशी १) छोटी शाशी ।।-)

कुमार कल्याण घुटी

इसके सेवन से बालकों के समस्त रोग जैसे ज्वर हरे पाले दस्त, अजीर्ण, पेट का अफरा दस्त में कीड़े जाना, दस्त साफ न होना, पसली चलना, दूध पलटना, सोते २ चौंक पड़ना, दांत निकलने के समय के रोग ये सब दूर हो जाते हैं, शरीर मोटा ताजा और बलवान हो जाता है। यह घुटी मीठी है, अतः बच्चे बड़ी आसनी से पीते हैं। मूल्य १ शाशी (आध औंस वाली) ।-) सुन्दर दुरङ्गा पैकिंग।

ग्रहणी रिपु

ग्रहणी बड़ा भयंकर रोग है। खानापीना पचता नहीं है, पेट में हर समय गुड़-गुड़ शब्द होता रहता है, बार २ दस्त होते हैं और भूख कम हो जाती है। ग्रहणी-रिपु इन सब लक्षणों को नष्ट करके ग्रहणी रोग को समूल नष्ट करता है। मूल्य १ शीशी (आध औंस) ३।।)

वातारि वटी

सभी वात-रोगों के लिये सुपरीक्षित, जोड़ों में दर्द, कमर में दर्द आदि वात-रोगों के लिये अक्सीर है। मूल्य १ शीशी (५१ गोली) २)

स्तम्भन वटी

स्तम्भन-शक्ति बढ़ाने के लिये सर्वोत्तम निरापद है। बाजार में प्रचलित औषधियां क्षणिक उत्तेजना उत्पन्न कर बाद में बुरा असर डालती हैं, लेकिन ये गोलियां अन्दरूनी विकार को दूर कर स्थाई लाभ पहुंचाती हैं। मूल्य—१ शीशी (३२ गोली) १।)

करंजादि वटी

'करञ्ज' मलेरिया के लिये आयुर्वेद की प्रसिद्ध औषधि है। इसके संयोग से बनी ये गोलियां प्राकृतिक ज्वर (मलेरिया) के लिये उत्तम प्रमाणित हुई हैं। मूल्य—१ शीशी (५० गोली वाली) ।।=)

कासहर वटी

खांसी के लिये सस्ती व उत्तम गोलियां। मूल्य १ शीशी (१ तोला) ।-)

निम्बादि मलहम

नीम रक्त-शोधक एवं चर्म-रोग नाशक है, यह सभी जानते हैं। इसी के संयोग से बनी यह मलहम फोड़ा-फुंसी व घावों के लिये बड़ी ही उपयोगी है। मूल्य १ शाशी (आध औंस) ।) २० तोले मलहम का एक पैक ३।।)

आंवनिस्सारक वटी

आंव निकालने के लिये अत्युत्तम है। मूल्य १ शीशी (१ तोला) १)

रक्तवल्लभ रसायन

रक्त-श्राव बन्द करने के लिये उत्तम। मूल्य—१ शीशी (आध औंस) १)

अग्निवल्लभ क्षार

स्वादिष्ट, पाचक व उदर विकार नाशक। मूल्य १ शीशी (२ औंस) १)

अग्निसंदीपन चूर्ण

उत्तम व मीठा चूर्ण। मूल्य १ शी. (२ औंस) ।।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख के छालों की दवा

गर्मी से, पाचन विकार से या मलावरोध से किसी भी कारण मुख में छाले हों, इसके लगाने मात्र से शान्त हो जाते हैं। मूल्य—१ शीशी (आध औंस) ॥=)

कर्णामृत तैल

कान में सांय-सांय होना, दर्द होना, कान से मवाद बहना आदि कर्ण रोगों के लिये उत्तम तैल है। मूल्य—१ शीशी (आध औंस) ॥=)

स्वप्नप्रमेह हर वटी

स्वप्नदोष यानी स्वप्न में होने वाले वीर्यपात के लिये सर्वोत्तम है। मूल्य १ शीशी (एक तोला) २)

स्वप्नप्रमेहहर चूर्ण

उक्त गोलियों के साथ यदि इस चूर्ण का भी प्रयोग किया जाय तो शीघ्र लाभ होता है। मूल्य—४ औंस की एक शीशी २)

धातुश्रावहर चूर्ण

मूत्र के साथ धातु जाती हो, पानी के समान पतली हो गई हो, इसके कुछ दिन सेवन से वीर्य (धातु) गाढ़ा हो जाता है। बल बढ़ता है। प्रमेह, मधुमेह एवं स्वप्न-दोष के लिये भी उपयोगी है। मूल्य—४ औंस की एक शीशी २)

सरलभेदी वटी

सोते समय रात को १-२ गोली दूध या जल के साथ लेने से प्रातः खुल कर दस्त होजाता है। गृहस्थ में रखने योग्य है। मूल्य—एक शीशी (४१ गोली) १)

बालापस्मारहर वटी

बालक के अपस्मार, दाँत-बंध जाना, दांती भिच जाना; बेहोश हो जाना, इनके लिये अत्युत्तम है। बालकों के धनुष टंकार और बालग्रह में भी उपयोगी है। मूल्य—१ शीशी [३१ गोली] २)

अण्डवृद्धिहर लेप

अण्ड [फोते] बढ़ जाने के लिये यह उत्तम लेप है। बिना कष्ट के जल्दी ही लाभ पहुँचता है। मूल्य—१ शीशी [आध औंस] १)

रजप्रवर्तक वटी

रुका हुआ मासिक-श्राव खोलने के लिये उत्तम है। अल्पार्तव, कष्टार्तव तथा इनके उपद्रवों के लिये उपयोगी है। मूल्य—१ शीशी [३१ गोली] १)

धन्वन्तरि सुधा

(अर्थात् देशी क्लोरोडीन) अमृतधारा आदि अनेक औषधियां सर्व रोगों पर प्रचलित हैं, उन्हीं के समान किन्तु सस्ती व पूर्ण गुणप्रद यह दवा निर्माण की है। अजीर्ण, पेट के दर्द, हैजा के दस्त, गर्मी के दस्त बालकों के हरे-पीले दस्त, दूध पलटना आदि रोगों में उत्तम है। मूल्य—१ शीशी (आध औंस की सुन्दर पैकिंग में) ।=)

धन्वन्तरि शूलहर टेबलेट

यह सर्व प्रकार के शूल [दर्द] में लाभदायक है। शिर दर्द, पेट दर्द, कान का दर्द, आंख का दर्द, शरीर के किसी अङ्ग में किसी भी कारण से दर्द हो; इससे तुरन्त लाभ पहुंचता है। मूल्य—१ शीशी (१५ गोली) ॥=)

मनोरम चूर्ण

स्वादिष्ट, शीतल एवं पाचक चूर्ण है। एक बार चख लेने पर शीशी खतम होने तक खाते ही रहेंगे। गुण और स्वाद दोनों में अत्युत्तम है। मूल्य—बड़ी शीशी (२ औंस) ॥) छोटी शीशी (१ औंस) ।–)

उपदंशहर मलहम

उपदंशहर कैपशूल व्यवहार करने के साथ-साथ इस मलहम को घावों पर भी लगावें। तो शीघ्र लाभ होगा। मूल्य—एक शीशी (आध औंस) १)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदिक पुस्तकें।

स्वप्रकाशित पुस्तक।

प्रयोग पुष्पावली

ले०-वैद्य शिरोमणि पं० महावीर प्रसाद जी मालवीय।

प्रथम भाग अप्राप्य है। द्वितीय भाग में अनेकों उत्तमोत्तम सुगन्धित एवं औषधियों के तैल, अर्क, शरबत, गुटिकायें, मलहम, बाम, अचार, चटनी, मसाले, सिरके, पकान्न, मोदक बनाने, सत्व आदि निकालने की नित्य उपयोगी और प्रचुर लाभदायक विधियां बताई गई हैं, जिससे वैद्य, गृहस्थ और बेरोजगार भी खूब फायदा उठा रहे हैं। मूल्य १)

दोषधातु- विज्ञान [सचित्र]

दोष क्या है? वे कैसे उत्पन्न होते हैं? इनके नाम, दोष क्यों कोप करते हैं? किस कारण से दूषित होने से क्या २ हानियां करते हैं? और कुपित होने पर कैसे चिकित्सा करनी चाहिए आदि-आदि। तथा सप्त-धातुयें भी इनमें विस्तार रूप से सरल भाषा में वर्णित हैं। मूल्य ॥=)

सूर्यरश्मि चिकित्सा

सूर्य-रश्मि-चिकित्सा को अंग्रेजी में (क्रोमोपैथी) कहते हैं। इस चिकित्सा में सूर्य की किरणों से ही समस्त रोग दूर करने का विधान है, पुस्तक बड़े परिश्रम से लिखी गई है। द्वितीय संस्करण मू० ।॥)

रसायन-संहिता

(भाषा-टीका, सचित्र)

आयुर्वेद साहित्य के अनमोल रत्न अपनी अलौकिक प्रतिभा के साथ अन्धकार के आवरण से ढंके हुए हैं। अमूल्य पुस्तकें यत्र-तत्र पड़ी हुई हैं, जिनके प्रकाशन की आवश्यकता है।

यह पुस्तक एक ऐसा ही रत्न है। अनुभवी और विचार-शील लेखक महोदय ने हिमालय पर्यटन में परिश्रम से इसकी खोज की है। उन्हीं के प्रशंसनीय प्रयत्न से यह पुस्तक वैद्य-समुदाय की सेवा में उपस्थित कर सके हैं। इसमें अनेक अन्यर्थ, प्रयोग, सत्व प्रस्तुत विधि, उपधातु की शोधन, मारण प्रभृति अनेक विषय दिये गये हैं। मू० १)

कुचिमार तन्त्र [भाषा-टीका]

—श्रीमद् कुचमार मुनि प्रणीत—

प्रस्तुत पुस्तक प्राचीन और अत्यन्त गोपनीय है। इसमें इन्द्रिय-वृद्धि स्थूल-करण कामोद्दीपन, लेह बाजीकरण, द्रावण, स्तम्भन, सङ्कोचन, केशपात, गर्भाधान, सहज प्रसव आदि पर अनेक योग भली भांति बताये गये हैं। मू० ।=) मात्र।

दशमूल [सचित्र]

ले०-स्वर्गीय लाला रूपलाल जी वैश्य, बूटी-विशेषज्ञ

दशमूल किसे कहते हैं? किन २ औषधियों से बनता है। उन औषधियों की आकृति कैसी है? यह बिरले ही जानते हैं। इस पुस्तक में दशमूल की दस औषधियों का सचित्र वर्णन है। साथ ही उनके पर्याय नाम, गुण और प्रयोग भी बताए गए हैं। तथा दशमूल, पञ्चमूल से बनने वाले अनेक योगों की विधि भी दी गई है, चित्र इतने स्पष्ट हैं कि देखते ही झट पहिचान सकते हैं। मू० ॥) मात्र।

शल्यतन्त्रम्

ले०-श्री० आयुर्वेदाचार्य पं० धर्मदत्त जी शास्त्री।

शल्य-क्रिया में ही वैद्य-समाज को पाश्चात्पद बताया जाता है, पर इस ग्रन्थ को देखने से प्रकट होता है कि इस ओर भी आयुर्वेद कितना पूर्ण था, इसमें शल्य, व्रण शोथ की सामान्य और दूषित सभी अवस्थाओं के लक्षण और उपचार, बन्धन, छेदन, भेदन, विलायन, पाचन, रक्तमोचण, स्नेहन, लेखन, पेषण, आहारण, सीवन, पीड़न, निर्वासन, शोधन, रोपण अवसादन, क्षारकर्म, प्रतिसारण, लोमोत्पादन, कृमिनाश सबका वर्णन है।

आंत निकलना, अण्डकोष फटना, गोली लगना, [illegible], उनकी व्याप्ति, उपद्रव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्षण और चिकित्सा में काम आने वाले पचास शब्दों का सचित्र वर्णन और प्रयोगों की विधि बड़ी अच्छी तरह समझाई गई है। प्रत्येक चिकित्सक को पास रखने योग्य ग्रन्थ है। मू० २॥)

दन्त-विज्ञान

यह भिषग्रत्न स्व० गोपीनाथ जी गुप्त की सारपूर्ण रचना है,इसमें दांतों की रचना आंतरिक दशा, रक्षा के उपाय, अनेक दन्त रोगों के भेद वर्णन और सरल चमत्कारी उपचार दिये हुए हैं, ४ चित्र भी हैं, मूल्य ।=) मात्र।

न्यूमोनियां प्रकाश

आयुर्वेद-मनीषी स्व० पं० देवकरण जी बाजपेयी की यह वही उत्तम रचना है जिस पर धन्वन्तरि-पदक मिला और जो निखिल भा० वैद्य सम्मेलन से सम्मान और पदक प्राप्त कर चुकी है। न्यूमोनियां की शास्त्रीय व्युत्पत्ति, कारण, लक्षण, निदान, परिणाम, चिकित्सा आदि सभी बातें एक ही पुस्तक में भली-भांति वर्णित हैं। मूल्य ।-)

प्लेग

[तृतीय संस्करण]

इस पुस्तक में प्लेग का आयुर्वेदीय और डाक्टरी मतानुसार पूर्ण विवेचन, प्लेग-चिकित्सा आदि का इस संबन्ध में अनुभव-पूर्ण सिद्ध विवेचन है। मूल्य ।-)

प्राकृतिक ज्वर

लेखक—स्वर्गीय लाला राधावल्लभ जी वैद्यराज।

मलेरिया (फसली बुखार) का पूर्ण विवेचन है; आयुर्वेदीय मत से मलेरिया कैसे पैदा होता है, उसके दूर करने के आयुर्वेदीय प्रयोग, कनाइन से हानियां आदि विषयों पर पूर्ण प्रकाश डाला गया है, मूल्य ।)

नारू-रोग

नारू बड़ा भयंकर रोग है, उसमें नारू के सम्पूर्ण वर्णन, भेद, निदान अपनी तथा अन्य वैद्यराजों की ऐसी अनुभूत चिकित्सायें दी हैं, जिसमें बिना कष्ट के नारू निकल आता है। मूल्य ।)

ओज क्या है ?

उनकी क्षय वृद्धि का लक्षण और कार्य विवेचना पूर्ण लिखे गये हैं। मूल्य -)

वैद्यराज की जीवनी

स्व० श्री० लाला राधावल्लभ जी की जीवनी बड़ी ओजस्विनी भाषा में लिखी है। इसके पढ़ने से आलसी पुरुष भी उद्योगी और परिश्रमी बनने की इच्छा करता है। मूल्य ≡)

आयुर्वेद में दार्शनिक तत्व—विषय नाम से स्पष्ट है। मूल्य ।)

क्षयादर्श

लेखक-पं० हरिशंकर शर्मा वैद्यराज।

यह पुस्तक समाप्त होगई थी किन्तु सफाई में कतिपय पुस्तकें मिली हैं। उसमें १००-१२५ प्रति इसकी भी मिल गई हैं। १३० पृष्ठ की स्वर्गीय लाला राधावल्लभ जी वैद्यराज द्वारा सम्पादित यह पुस्तक क्षयरोग पर अत्युपयोगी साहित्य है। चिकित्सकों को क्षयरोग के विषय में इस पुस्तक में बहुत कुछ प्राप्त होगा तथा वे इसके आधार पर क्षयरोगी की चिकित्सा सफलता से कर सकेंगे। मूल्य ॥।) मात्र

अन्य प्रकाशकों की पुस्तकें।

चरक संहिता [सम्पूर्ण]

(भाषा टीका सहित)

श्री० जयदेव विद्यालंकार द्वारा सरल भाषा टीका युक्त आयुर्वेद का प्रसिद्ध एवं सर्वोपरि ग्रन्थ हर आयुर्वेदज्ञ को पढ़ना एवं मनन करना चाहिये। मूल्य ३२)

भावप्रकाश [सम्पूर्ण]

(भाषा-टीका युक्त)

शारीरिक भाग पर प्राच्य-पाश्चात्य मतों का समन्वयात्मक परिशिष्ट, निघंटु भाग पर विशिष्ट विवरण तथा चिकित्सा प्रकरण पर प्रत्येक रोगों पर प्राच्य-पाश्चात्य मतों का समन्वयात्मक विशेष टिप्पणी से सुशोभित। हम यह कह सकते हैं कि आयुर्वेद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यापीठ, विश्वविद्यालयों आदि के छात्रों तथा वैद्यों के लिये बड़ा ही उपयोगी संस्करण है। मूल्य ३२)

भावप्रकाश निघण्टु
(हरीतक्यादि वर्ग)

कविराज पं० विश्वनाथ द्विवेदी द्वारा भाषित उपयोगी ग्रन्थ। इसकी टीका भी विस्तृत एवं प्रमाणित की गई है। मूल्य ७)

भाव प्रकाश
(ज्वराधिकार)

विद्योतनी-विस्तृत भाषा टीका सहित। परिशिष्ट में ग्रन्थोक्त ज्वरों पर डाक्टरी मतानुसार निदान का विवेचन किया गया है। प्रश्न पत्रों का भी समावेश है। मूल्य ३)

शार्ङ्गधर-संहिता

वैज्ञानिक विमर्शोपेत सुबोधिनी हिन्दी टीका 'लक्ष्मी' नामक टिप्पणी पथ्यापथ्य विविध परिशिष्ट सहित। मूल्य ६)

सुश्रुत-संहिता (शरीरस्थान)

विद्यार्थियों के लिये केवल शरीर स्थान की 'प्रभा' एवं 'दर्पण' नाम की दो हिन्दी व्याख्याओं सहित। मूल्य ३) मात्र

भैषज्यरत्नावली

इसमें संकलित प्रयोग वैद्य-समाज द्वारा चिर-परीक्षित हैं, तथा सभी चिकित्सों के लिये अत्युपयोगी ग्रंथ हैं। मूल्य १३॥)

चक्रदत्त
(भाषा-टीका सहित)

भावार्थ संदीपिनी विस्तृत सरल भाषा टीका तथा विशेष विषद टिप्पणी सहित। परिशिष्टों में पंचलक्षणी निदान, डाक्टरी मतानुसार मल-मूत्रादि परीक्षा प्रत्येक रोगों की पथ्यापथ्य आदि देकर इस ग्रन्थ को अत्युपयोगी बना दिया है। मू० १०)

रसेन्द्रसार संग्रह [सचित्र]

नवीन वैज्ञानिक रसचन्द्रिका' भाषा टीका सहित। परिशिष्ट में नवीन रोगों पर रसों का प्रयोग मान परिभाषा; मूषा तथा पुट-प्रकरण, अनुपान-विधि तथा औषधि बनाने के नियमादि दिये हैं। यन्त्रों का सचित्र विस्तृत वर्णन है। मू० ६)

रसराज-महोदधि [पांचों भाग]

वस्तुतः यह आयुर्वेदीय रसों का सागर ही है। प्राचीन पुस्तक है तथा सुन्दर व सरल भाषा में लिखा यह उपयोगी ग्रन्थ है। नवीन सजिल्द संस्करण। मूल्य १०)

रसायनसार

श्री० श्यामसुन्दराचार्य वैश्य रसायन शास्त्र के अनुभवी ज्ञाता के बीसियों बर्षों के कठिन परिश्रम से प्राप्त प्रत्यक्षानुभव के आधार पर लिखित यह उपयोगी ग्रन्थ है। मूल्य ८)

नूतनामृत-सागर

यह प्राचीन पुस्तक है तथा इसे पढ़कर- हजारों व्यक्ति सफल चिकित्सक बन गये हैं। इसके सभी प्रयोग सुपरीक्षित एवं सरल हैं। हर चिकित्सक को इस पुस्तक से लाभ उठाना चाहिये। मूल्य ८)

कौमार भृत्य
(नव्य बालरोग सहित)

सभी बालरोगों पर प्राच्य एवं पाश्चात्य चिकित्सा विज्ञान के आधार पर लिखित सर्वाङ्ग-पूर्ण एवं विशाल ग्रन्थ। हर विद्वान वैद्य को अवलोकन मनन करना चाहिये। मूल्य ८)

शंकर निघण्टु

इस पुस्तक में ८१३ बनस्पतियों का वर्णन है। अन्त में लगभग १५० पृष्ठों में रस रसायन वटी गुटका, तैल, आसव-अरिष्ट आदि की निर्माण-विधि भी दी है। उत्तम जिल्द मूल्य ७)

हमारे शरीर की रचना
(डा० त्रिलोकीनाथ वर्मा M. B. B. S.)

पाश्चात्य विज्ञान पर लिखित शरीर-विज्ञान की प्रसिद्ध एवं प्रमाणित पुस्तक। सुन्दर चित्रों की भरमार है। छपाई कागज जिल्द सर्वोत्तम। मू०—प्रथम भाग १०=) द्वितीय भाग १५॥=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसतन्त्रसार व सिद्ध योगसंग्रह

(सातवां संस्करण)

श्री० नाथूसिंह जी वर्मा द्वारा लिखित, अत्युत्तम पुस्तक। इसमें आयुर्वेद के प्रायः सभी प्रचलित औषधियों की सविस्तार निर्माण विधि तथा सभी की विवेचना-पूर्ण गुणावली है। पुस्तक नवीन ढंग पर लिखी गई है तथा आयुर्वेद चिकित्सकों के लिये पठनीय एवं संग्रहणीय है। मूल्य ७) दूसरा भाग ५)

एलोपैथिक गाइड

श्री० डा० रामनाथ वर्मा कृत हिन्दी में एलोपैथी चिकित्सा की सर्वोत्तम पुस्तक। वैद्यों को इसे पढ़कर एलोपैथी का ज्ञान प्राप्त करना चाहिये। मूल्य ७।।)

कूपीपक्व रस निर्माण

श्री० हरिशरणानन्द जी द्वारा लिखित कूपीपक्व रसायन निर्माण विषयक वैज्ञानिक ढंग पर लिखी गई सर्वोत्तम अनुभव पूर्ण पुस्तक। सजिल्द मू० ५)

तपेदिक [राजयक्ष्मा]

तपेदिक से होने वाली सभी बातों का वर्णन सरल भाषा में किया गया है। इस भयंकर संक्रामक रोग से बचने के लिये इसकी १-१ प्रति प्रत्येक घर में रहनी चाहिये। मू० ४)

तुलसी

हर घर में तुलसी का पेड़ होता है। उसके क्या गुण हैं और समय पर उसका क्या उपयोग उठाया जा सकता है; इस पुस्तक में पढ़िये। सजिल्द आकर्षक छपाई, उत्तम कागज। मू० २)

उर्ध्वांग-चिकित्सा

आयुर्वेद पंचानन पं० जगन्नाथ प्रसाद जी शुक्ल आयुर्वेदाचार्य द्वारा लिखित गले से ऊपर के अङ्गों से सम्बन्धित समस्त रोगों का विषद विवरण तथा अनुभव पूर्ण एवं विस्तृत चिकित्सा-विधि इन पुस्तकों में पढ़िये—

शिरोरोग विज्ञान (पृष्ठ ४५१)	४)
नासारोग विज्ञान	२)
कर्णरोग विज्ञान	२)
मुखरोग विज्ञान	२)

प्रारम्भिक भौतिकी

हिन्दी भाषा में विज्ञान की प्रारम्भिक सभी बातों को सरलता पूर्वक समझाने वाली अधिकार पूर्ण पुस्तक। भारत के सभी आयुर्वेद कालेजों तथा हाई स्कूल परीक्षाओं में पाठ्य-पुस्तक होना ही इसकी उपयोगिता का प्रमाण है। द्वितीय संस्करण मू० ८)

प्रारम्भिक उद्भिद [बनस्पति] शास्त्र

बनस्पति विशेषज्ञ प्रोफेसर बलवन्तसिंह जी द्वारा लिखित यह बनस्पति ग्रन्थ युक्त प्रान्त, पंजाब, बिहार आदि प्रान्तों में सभी आयुर्वेद विद्यालयों में पाठ्य पुस्तक है। पुस्तक उपयोगी है, सभी वैद्यों को पढ़नी चाहिए। मूल्य ४।।)

निघण्टुसार संग्रह

हरितक्यादि से अनेकार्थ नाम वर्ग तक की सम्पूर्ण औषधियों का विवरण है। आवश्यक सभी विषयों को सार रूप में संग्रह किया गया है। वैद्यों के काम का ग्रन्थ है। मूल्य १।।)

सूचीवेध विज्ञान

इन्जेक्शन चिकित्सा पर उत्तम पुस्तक। इसमें एलोपैथी इन्जेक्शनों का हिन्दी में उत्तम विवरण है। मूल्य १।।)

मिक्श्चर

तृतीय संस्करण। इसमें प्रथम १२२ पृष्ठों में लगभग ६२ रोगों पर सुपरीक्षित सैकड़ों एलोपैथिक मिक्श्चर दिये हैं। १२३ से १५० पृष्ठ तक ५० पेटेण्ट औषधियों के प्रयोग हैं। १५१ से १६३ तक देशी औषधियों के अंग्रेजी नाम तथा १६५ से १७२ पृष्ठ में विविध इन्जेक्शनों का विवरण। १७२ पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक चिकित्सकों के लिये बहुत उपयोगी है। मू० २।)

यूनानी चिकित्सा सागर

हकीम मंसाराम शुक्ल द्वारा लिखित हिन्दी भाषा में यूनानी का चिकित्सा प्रधान अत्युत्तम ग्रन्थ है। प्रथम ३८० पृष्ठ में लगभग १००० उत्तम व परीक्षित यूनानी प्रयोग हैं। ३८१ से ४८५ पृष्ठ तक २५२ यूनानी औषधियों का परिचय दिया है। इसके पश्चात योग अनुक्रमणिका; रोगानुसार अनुक्रमणिका दी है। ५२६ पृष्ठ की पक्की जिल्द का मू० १०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालेड़ा बोगला के तीन नवीन प्रकाशन

१—नेत्ररोग-विज्ञान

स्वर्गीय डा० जादव जी हंसराज वैद्य द्वारा लिखित हिन्दी में अपने विषय की सर्वोत्तम पुस्तक है। पृष्ठ संख्या १००० से ऊपर। मजबूत जिल्द। २४३ चित्रों द्वारा विषय को सुलभ-गम्य बना दिया है। नेत्र रोग विशेषज्ञ बनने की इच्छा रखने वाले चिकित्सकों को इसे अवश्य पढ़ना चाहिये। मू० १५)

२—औषधि गुण धर्म शास्त्र

१०१ गुणों का प्राचीन एवं आधुनिक चिकित्सा विज्ञानों के आधार पर सुन्दर विवेचन किया है। पृष्ठ संख्या ३०८ मू० ३) मात्र।

३—गांवों में औषधिरत्न (प्रथम भाग)

इस पुस्तक में ८८ सुलभ प्राप्त वनौषधियों का विस्तृत वर्णन, प्रयोगादि दिये हैं। पुस्तक सर्वथा उपयोगी बन गई है। मू० ३)

—०—

रसेन्द्रसार संग्रह [२ भागों में]

(ले० श्री० पं० घनानन्द जी पन्त)

अब तक प्रकाशित सभी टीकाओं से श्री० पन्त जी की यह टीका सर्व-श्रेष्ठ है। पृष्ठ संख्या १०८४ है। यह टीका वैद्यों, विद्यार्थियों के लिये पठनीय है। मू० सम्पूर्ण पुस्तक का ११)

सौश्रुती

प्राचीन शल्यतन्त्र (सर्जरी) पर लिखा यह ग्रन्थ कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। प्राचीन ग्रन्थों में इस विषय का साहित्य बिखरा हुआ होने तथा अर्वाचीन प्रगति-शील विज्ञान से तुलनात्मक पुस्तक उपलब्ध न होने से आयुर्वेद विद्यार्थियों को एक परेशानी थी। उसी को दूर करने के लिए काशी विद्यालय के प्रोफेसर श्री० पं० रमानाथ द्विवेदी ने यह ग्रन्थ लिखा है। वैद्यों विद्यार्थियों के लिये पठनीय है। मू० ८॥)

जन्म निरोध [बर्थ-कन्ट्रोल]

यह विषय आजकल सर्व-साधारण के लिये भी आवश्यक बन गया है। यह हिन्दी में अपने विषय की अत्युत्तम पुस्तक है। १११ चित्रों द्वारा विषय को सुस्पष्ट किया है। सजिल्द, द्वितीय संस्करण है। मू० ७)

स्वप्नदोष विज्ञान

इसमें 'स्वप्नदोष' से सम्बन्धित सभी विषयों पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। स्वप्नदोष के कारणों के विवेचन के साथ २ इससे बचने के अनेक उपाय और इसकी सफल चिकित्सा-विधि व प्रयोगादि दिए हैं। अनेकों चित्र हैं। मू० २) मात्र।

वैद्य-सहचर

(यथा नाम तथा गुण)

श्री० प० विश्वनाथ जी द्विवेदी कृत इस पुस्तक का यह चौथा संस्करण है। प्रायः सभी रोगों की सफल चिकित्सा-विधि इसमें है। वैद्यों के लिए उपयोगी साहित्य है। मू० २॥)

सभी पुस्तकों की अकारादि क्रम से मूल्य तालिका

पुस्तक	मूल्य
अण्ड तथा अंत्रवृद्धि	।)
अर्श रोग चिकित्सा	॥)
अर्क गुण विधान	१॥)
अर्क प्रकाश	२)
अनुभूत प्रयोग प्र० भाग	१)
,, द्वितीय भाग	१)
अनुभूत योग चिन्तामणि प्रथम भाग	४।)
,, द्वि० भाग	४)
अरिष्टक गुण विधान	॥)
अपना इलाज आप खुद करो	।॥)
अभिनव बूटी दर्पण [सचित्र]	१०)
अंजीर	१)
अनुपान विधि	॥)
अमृत पान (उषःपान)	।=)
अनुपान कल्पतरु	॥=)
अथ कोकसार	॥)
अनुभूत चिकित्सा संग्रह	२)
आंख का अचूक इलाज	२।)
आयुर्वेद में दार्शनिक तत्व	।)
आयुर्वेद प्रकाश	५)
आरोग्य मंदिर	१)
आयुर्वेद मीमांसा	१)
आसन चिकित्सा	२)
आसव विज्ञान	१॥)
आयुर्वेदीय प्रश्नोत्तरावली दोनों भाग	४)
आयुर्वेदीय परिभाषा	१।)
आसवारिष्ट संग्रह (वृहद्) प्रथम खण्ड	३॥)
आम और उसके सौ उपयोग	॥)
आहार विज्ञान	३)
इलाजुल गुर्बा	५)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- उपदंश विज्ञान १)
- एलोपैथिक गाइड (सजिल्द) ७॥)
- एनीमा और कैथीटर ।=)
- एकौषधि गुण विधान १।=)
- औषधि विज्ञान ॥)
- औषधि गुण धर्म विवेचन (कालेड़ा बोगला) ३)
- औषधि गुण धर्म विवेचन ॥)
- औरतों और बच्चों का इलाज १॥)
- ओज क्या है ? —)
- औषधि उपचार पद्धति द्वितीय भाग ॥)
- कर्ण रोग विज्ञान २)
- कल्प एवं पञ्चकर्म चिकित्सांक [धन्वन्तरि का विशेषांक] ४)
- कब्ज व मलावरोध ॥)
- क्वाथ मणिमाला १॥)
- कुचिमार तन्त्र ।=)
- कूपीपक्व रस निर्माण ५)
- कौमारभृत्य ६)
- ग्राम्य चिकित्सा ॥=)
- गांवों में औषधि रत्न ३)
- गूलर गुण प्रकाश [पं० चन्द्रशेखर मिश्र कृत] १।)
- घृत गुण विधान ॥)
- घरेलू चिकित्सा १)
- चरक संहिता [भाषा टीका] जयदेव विद्यालङ्कार ३२)
- चिकित्सा व्यवहार विज्ञान ।)
- चिकित्सकहस्त पुस्तिका १)
- चक्रदत्त [भाषाटीका युक्त] १०)
- ज्वर मीमांसा १॥)
- ज्वर तिमिर भास्कर ४)
- जर्राही प्रकाश ३॥)
- जन्म निरोध ७)
- जल चिकित्सा ॥।)
- जीवन विज्ञान [आसन चिकित्सा] २)
- जीवन तत्व १॥)
- जुकाम १॥।)
- टोटका विज्ञान ।=)
- डायबिटीज [मधुमेह] ॥)
- तपेदिक ४)
- तमाखू जहर है ।=)
- तिब्ब अकबर १०)
- तुलसी २)
- तैल संग्रह २)
- थर्मामीटर ।)
- दशमूल ॥)
- दद्रु चिकित्सा ॥।)
- दन्त विज्ञान ।=)
- दीर्घ जीवन ॥)
- दुग्ध गुण विधान १)
- दुग्ध कल्प ।)
- दुग्ध चिकित्सा ४)
- देहाती इलाज १)
- दोष धातु विज्ञान ॥=)
- न्यूमोनियां प्रकाश ।–)
- नपुन्सक चिकित्सा ३)
- नमक ॥=)
- नारू रोग ।)
- नाड़ी सिद्धान्त ।=)
- नाड़ी विज्ञान ।–)
- नाड़ी परीक्षा ।–)
- नासा रोग विज्ञान २)
- नारी रोगांक (द्वि० संस्करण) ६)
- निघण्टु सार संग्रह १॥)
- नीम गुण विधान ॥।≡)
- नीम के उपयोग १)
- नूतनामृत सागर ८)
- नेत्र रक्षा और उनकी प्राकृतिक चिकित्सा ॥=)
- नेत्र रोग विज्ञान [कालेड़ा] १५)
- नैसर्गिक आरोग्य १॥)
- प्रयोग पुष्पावली (द्वि० भाग) १)
- प्राकृतिक ज्वर ।–)
- प्रमेह विवेचन २)
- प्रति संस्कृत निदान १-२-३भा. २)
- प्रारम्भिक भौतिकी ८)
- प्रारंभिक उद्भिद शास्त्र ४॥)
- प्राणिज्य औषधि ।)
- प्राकृतिक चिकित्सा (प्रश्नोत्तरी) ॥=)
- प्लेग ।)
- प्लीहा रोग चिकित्सा ।)
- पथ्यापथ्य निरूपण ॥)
- परिभाषा प्रबोध ॥)
- पलाण्डु गुण विधान ॥)
- पशु चिकित्सा (बृहद्) ४॥)
- पशु चिकित्सा ३॥)
- पीपल गुण विधान ॥)
- पेटेन्ट औषधि और भारतवर्ष (बरालोकपुर) प्रथम भाग ॥)
- " द्वितीय भाग १)
- पेटेन्ट औषधि और भारतवर्ष (ले० डा० गणपतसिंह) प्रथम भाग ॥।≡)
- द्वितीय भाग २।)
- फलाहार चिकित्सा २॥)
- फलसंरक्षण विज्ञान १)
- फिटकिरी गुण विधान १॥)
- व्रणोपचार पद्धति ।=)
- बबूल गुण विधान ॥)
- बच्चों के रोग और उनका इलाज २)
- बुढ़ापा और बीमारी से बचने के उपाय ॥।)
- बुखार का अचूक इलाज ।)
- बूटी प्रचार (बृहद्) २)
- वनस्पति गुणादर्श २)
- बच्चों का पालन ॥)
- बबूल ।=)
- वैद्यक शब्दकोष ।)
- वैद्य सहचर २॥)
- वैद्य जीवन (लोलिम्बराज) १)
- वैज्ञानिक विचारणा १॥।)
- वैद्यराज की जीवनी ≡)
- वैद्यक परिभाषा प्रदीप १॥)
- भारतीय रस पद्धति १॥)
- भारतीय जीवाणु विज्ञान १॥)
- भारतीय जड़ी बूटियाँ २॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- भारतीय रसायन शास्त्र ।।)
- भारतीय भौतिक विज्ञान ।।)
- भावप्रकाश (भाषा-टीका युक्त) सम्पूर्ण दो जिल्दों में ३२)
- भावप्रकाश निघण्टु ७)
- भावप्रकाश ज्वराधिकार ३)
- भैषज्यरत्नावली १३।।)
- भोजन ही अमृत है १।।)
- भोजन-बिधि २)
- भोजन-शास्त्र २।।)
- मधुमेह चिकित्सा ।=)
- मधुमेह ।।)
- मधु के उपयोग १)
- मलेरिया ।।)
- मर्णोन्मुखी आर्य चिकित्सा ।)
- मलेरिया बुखार का सबसे अच्छा इलाज १)
- मट्ठा ।।।=)
- मर्म विज्ञान ३।।)
- मंथर ज्वर चिकित्सा २)
- माधव निदान (भाषा-टीका युक्त) ५)
- माधव निदान (भाषा टीका) ४)
- माधव निदान मधुकोष संस्कृत व्याख्याएवं हिन्दी टीका सहित ८)
- मिकश्चर २।)
- मिट्टी सभी रोगों की रामबाण दवा ।।)
- मीजान तिब्ब १।।)
- मुखरोग विज्ञान २)
- मूत्र परीक्षा १)
- मोटापा दूर करने के उपाय १)
- यम का दूत –)
- यूनानी चिकित्सा सागर १०)
- योगचिन्तामणि ६)
- यौन मनोविकार ।।)
- रसायनसार (श्यामसुन्दराचार्य) ८)
- रसायन संहिता १)
- रसतन्त्रसार व सिद्ध प्रयोग संग्रह प्रथम भाग ७)
- रसेन्द्रसार संग्रह (पं० घनानन्द-पंत विद्यार्णव) तीन भाग में ११)
- रसेन्द्रसार संग्रह (सचित्र) ६)
- रक्तरोगांक ४)
- रसराज महोदधि (५ भाग) १०)
- राजयक्ष्मा ।=)
- राष्ट्रीय चिकित्सा सिद्ध योग संग्रह १।।)
- रुग्ण परिचर्या शिक्षा ३।।)
- रोग विज्ञानम् १)
- लवणगुणविधान ।)
- लहसुन और प्याज २।।)
- शल्यतन्त्रम् २।।)
- शाक निघण्टु ७)
- शरीर परिचय १।)
- शहद के गुण और उसके उप- ।।)
- शर्बत का व्यापार १)
- शारंगधर संहिता ६)
- श्वास रोग चिकित्सा ।)
- शालहोत्र बड़ा (घोड़ों की चि०) २)
- शिरोरोग विज्ञान ४)
- शिरदर्द ।।)
- सन्तति रहस्य ।।)
- सन्तान शास्त्र ५)
- स्टेथिस्कोप विज्ञान १)
- सरल व्यवहारायुर्वेद और विष विज्ञान ४)
- सरलविष विज्ञान १।।)
- सर्प विष विज्ञान १।)
- सन्तरा गुण विधान ।=)
- संक्षिप्त औषधि परिचय ।।=)
- स्वास्थ्य के लिये शाक तरकारियां १।।)
- स्वप्नदोष विज्ञान २।।)
- स्नान चिकित्सा ।=)
- स्वास्थ्य विज्ञान ।।)
- साबुन साजी शिक्षा १)
- साधारण नेत्र रोग १)
- सिद्धौषधि प्रकाश १।।)
- सिद्ध प्रयोग प्रथम भाग १)
- " द्वि० भाग ।।)
- सिद्ध मृत्युञ्जय योग १)
- स्त्रीरोग चिकित्सा ।।)
- सुगंधि-व्यापार १)
- सुखीग्रहणी १।।)
- सुखी जीवन १।।)
- सुश्रुत संहिता (शरीर स्थान) ३)
- सुगन्धित तैल ।।।)
- सूर्यरश्मि चिकित्सा ।।।)
- सूचीवेध विज्ञान १।।)
- सोंठ १।।)
- सौश्रुती ८।।)
- हरिधारित ग्रन्थरत्न ।=)
- हमारा भोजन ४)
- हम क्या खाना चाहिये ।।)
- हमारे शरीर की रचना (डा० त्रिलोकीनाथ वर्मा) प्र० भाग १०=) द्वि० भाग १५।।=)
- हल्दी १)
- हमारे बच्चे १।।।)
- क्षयादर्श ।।।)
- क्षार निर्माण विज्ञान ।)
- त्रिफला २।)
- त्रिदोषालोक २)
- त्रिदोष-विमर्श १।।)

नमूना-मुफ़्त
"धन्वन्तरि" आयुर्वेद का हिन्दी में सर्वोत्तम सचित्र मासिकपत्र है। वर्ष में दो विशेषांक दिये हैं। वार्षिकमूल्य ५।) रु. नियम व नमूना मुफ्त मंगवाइये
धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वैद्यों के लिये अपूर्व पुस्तकें

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यूनानी चिकित्सा सागर (हिन्दी)

लेखक—**श्री हकीम मन्सा राम जी शुक्ल,** वाईस प्रिंसिपल, तिब्बिया कालिज दिल्ली।

बढ़िया कागज—मोटे अक्षरों में—नए टाइप, पक्की कपड़ की जिल्द सहित मूल्य केवल १०) रु०।

यूनानी चिकित्सा वास्तव में आयुर्वेद से ही ली गई है। सैकड़ों वर्ष यूनानी चिकित्सा पद्धति को राज्याश्रय प्राप्त होने के कारण काफी ख्याति मिली है। इस में अनेकों अचूक नुस्खे हैं जो रोगों पर बड़ा अपूर्व असर रखते हैं यही कारण है कि दिल्ली के सुप्रसिद्ध हकीम अजमल खां साहिब संसार में एक प्रसिद्ध हकीम हो गये हैं। उनके तथा अन्य यूनानी के नामी हकीमों के प्रायः सभी गुप्त नुस्खे पहली बार इस पुस्तक में छाप दिये गये हैं। यह नुस्खे इतने सरल तथा इतने अचूक हैं कि इन के बल पर हकीम लोग हजारों रुपये कमा रहे हैं। इस पुस्तक में अतिसार—संग्रहणी पर २९ योग, अनिद्रा रोग पर ७ योग, मृगी पर १८ योग, लकवा (आर्दित) रोग पर १४ योग, बवासीर पर २५ योग, गुरदा के रोग पर १६ योग, आनाह (कब्ज) पर ३१ योग, आमवात पर १५ योग, उदर रोग (इमराज महदा) पर ८८ योग, उन्माद (माल खोलिया) रोग पर २० योग, उपदंश (आतशक) पर १६ योग, उष्णवात (सुजाक) पर १७ योग, कण्ठमाल पर ८ योग, कण्ठरोग पर ३ योग, कर्ण रोग पर ५ योग, कृमि रोग पर ५ योग, केश बल्य पर ५ योग, कास-श्वास (खांसी-दमा) पर ५६ योग, कुष्ठ योग पर ५ योग, चर्म रोग पर ४ योग, जलोदर रोग पर ९ योग, ज्वर (बुखार) पर २६ योग, दंतरोग पर १६ योग, नेत्र रोग पर ३६ योग, पित्त रोग पर २१ योग, पाण्डु (यरकान) पर ६ योग, प्रतिश्याय (जुकाम-नजला) पर २४ योग, प्रवाहिका (पेचिश) पर १० योग, प्रमेह (जरयान) पर ३३ योग, प्लीहा रोग पर १२ योग, प्लेग महामारी पर ४ योग, बालरोग पर १० योग, बल्य तथा वाजीकरण (General Tonics and Sexuel Tonics) पर १२० योग, व्रण (जखम) पर १[illegible] योग, मुख रोग पर ७ योग, मूत्र विकार पर १० योग, मेदा रोग (मोटापा) पर २ योग, मधु मेह पर ७ योग, मस्तिष्कविकार पर ३१ योग, यकृत रोग पर ३६ योग, रक्त पित्त पर ९ योग, रक्त विकार पर २६ योग, वात रोग पर ५३ योग, वातरक्त पर ५ योग, विषविकार पर ७ योग, विसूचिका (हैजा) पर ४ योग, वृक्कविकार पर १२ योग, वमन (कै) पर १८ योग, शीतला (चेचक) पर ३ योग, शिरो रोग पर १४ योग, शूल रोग पर २० योग, शोथ रोग पर १७ योग, स्त्री रोग पर ४७ योग, हृदय रोग पर १०३ योग, हिचकी पर ३ योग, क्षय (तपेदिक) पर १७ योग, क्षुद्र रोग पर २८ योग, इस प्रकार सब प्रकार के रोगों पर लगभग १२०० योग दिये हैं जिन में हर एक प्रकार के अतरीफल, अवलेह, माजून, याकूती नोशदारू, मफरहात, मुरब्बा, माल जोबन, मरहम, चटनी, लबूब, गुलकन्द, भस्म (कशता जात) सुरब्बे, लेप, टिकिया, अर्क, तिल्ला, शयाफ, शरबत, मंजन, सकंजबीन, सफूफ, सिरका, रोगन, खमीरे, हलवे, चूर्ण आदि जो भी जानने योग्य दवाई यूनानी चिकित्सा पद्धति में हैं सब के बनाने के तरीके, इस्तमाल करने के तरीके सब कुछ इस में दे दिया गया है। अन्त में यूनानी औषधियों का विस्तृत परिचय भी दिया है जिसे वैद्य लोग नहीं जानते। सरल हिन्दी में इससे बढ़िया पुस्तक यूनानी चिकित्सा पर आज तक नहीं छपी। भाषा इतनी सरल है कि सर्व साधारण समझ सकता है।

यूनानी तिब्ब का फार्माकोपिया (सरल हिन्दी में)

मसीह-उल-मुल्क हकीम अजमल खां साहिब ने केवल भारत के लीडर होने की वजह से मशहूर थे लेकिन वह एक चमत्कारी हकीम भी थे। इनके पास अनेकों विदेशों के निराश रोगी आकर स्वास्थ लाभ करते थे। हकीम साहिब और उनके परिवार तथा दिल्ली के अन्य हकीमों के नित्य उपयोग में आने वाले अद्भुत एवं चमत्कारी नुस्खों को **श्री हकीम मन्सारामजी शुक्ल** वाईस प्रिंसिपल, तिब्बीया कालेज दिल्ली ने इस पुस्तक में लिख दिया है तथा हर रोग का खुलासा तथा पथ्य भी साथ दिया है। पुस्तक सर्वसाधारण के अत्यन्त उपयोगी है तथा नुस्खे भी बड़ी आसानी से मिलने वाले हैं। पुस्तक छपकर शीघ्र तैयार होगी मूल्य ५) रु०।

एलोपैथिक गाइड लेखक—डा० रामनाथ बर्मा मूल्य ७॥) रु०

पुस्तक क्या है। गागर में सागर। आज जब भारत स्वतंत्र हो चुका है और हिन्दी भाषा राष्ट्र भाषा बन गई है। आधुनिक ढंग से लिखी हुई डाक्टरी चिकित्सा की पुस्तक की अत्यन्त आवश्यकता थी जो सर्व साधारण तथा हरएक वैद्य, हकीम के काम आ सके और वह रोगों का एलोपैथिक (डाक्टरी) चिकित्सा पद्धति से बड़ी सरलता से इलाज [illegible] इसी कमी का अनुभव करते हुवे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाक्टर जी ने अपनी सारी आयु के अनुभव का [illegible] इस पुस्तक में दे दिया है। हमारा तो यह दावा है कि जो साधारण से साधारण व्यक्ति भी इसे एक बार देखेगा इसे अवश्य अपने पास सदा के लिये रखने का प्रयत्न करेगा। डाक्टर जी ने ऐलोपैथिक (डाक्टरी) सिद्धान्तानुसार शरीर के भिन्न २ अंगों का वर्णन तथा उनका कार्य, शरीर की सूक्ष्म रचना तथा भिन्न २ तन्तुओं का वर्णन, दन्तोद्गम, टीका लगवाना; बच्चों के विषय में कुछ जानने योग्य बातें, रक्त सञ्चार, नाड़ी परीक्षा रक्तभार, लसीका वाहिनियां, प्रणाली विहीन ग्रंथियां, हमारा भोजन, खाद्य पदार्थों का रसायनिक संगठन भोजन बनाने के संबंध में कुछ जानने योग्य बातें, भिन्न २ प्रकार के खाद्य पदार्थ, भोजन से रक्त की उत्पत्ति, भोजन किस स्थान पर कितनी देर रहता है, पाखाना, मूत्र परीक्षा, मूत्र के स्वाभाविक तथा अस्वाभाविक अवयव, भिन्न २ आयु में मूत्र का परिणाम, विटेमिन्स, भिन्न २ खाद्य पदार्थ और उनकी विटेमिन्स, खाद्य तालिका, पाण्डु रोग और दौर्बल्य, कब्ज, मधुमेह, अतिसार, अजीर्ण, ज्वर, गठिया, सूजाक, नाड़ी दौर्बल्य, मोटापा, क्षयरोग, गर्भावस्था, वायु, टाइफाइड, रोगियों के लिये भिन्न २ प्रकार के आहार, मक्खी, मच्छर, खटमल आदि का वर्णन, संक्रामक रोग और उनसे बचने के उपाय, औषधियों को शरीर में प्रवेश करने के भिन्न २ मार्ग, व्यवस्था पत्रलेखन, औषधालय के संबंध में कुछ आवश्यक बातें, इन्जेक्शन्स (सूची भेद चिकित्सा इसमें प्रायः सभी प्रकार के इन्जेक्शन्स का वर्णन है, किन २ बीमारियों में और कौन २ से) वैक्सीन थैरेपी, सीरम चिकित्सा, मुख्य २ रोग और उनके पूर्ण अनुभूत नुस्खे, अन्य उपयोगी नुस्खे इन्हेलेशन्स स्प्रे, लिवटस, लिनिमेन्ट्स लोशन्स, मिक्चर्स, आंइन्टमेन्टस्, पिग्मेन्ट्, पल्प पाऊडर्स, रोग और उनमें प्रयोग किये जाने वाले इन्जेक्शन्स और पेटन्ट औषधियां, कुछ पेटन्ट औषधियों का वर्णन, नवीन औषधियां जैसे पैनीसिलीन, सल्फोनेमाइड, आदि उनके गुण दोष, प्रयोग, उपचार, औषधियां हिन्दी अंग्रेजी नाम आदि अनेकों विषय इस पुस्तक में हैं। वर्णन कर दिये हैं।

गंगयति निदान

मूल लेखक पंजाब निवासी जैन यति गङ्गाराम। हिन्दी अनुवादकर्त्ता आयुर्वेदाचार्य श्री नरेन्द्रनाथ जी शास्त्री। पक्की कपड़े की जिल्द मूल्य ६) रु०।

पंजाब के गांवों में प्रायः वैद्य लोग इसी पुस्तक के आधार से रोगों का निदान करते हैं। भाषा इतनी सरल है कि सर्वसाधारण भी बड़ी आसानी से समझ सकता है। इसमें रोग जानने के उपाय, लक्षण, पूर्वरूप, उपशम, सम्प्राप्ति के लक्षण, भेद, स्वरूप, मिथ्याहार-विहार के लक्षण, ज्वर के पूर्वरूप, वात, पित्त, कफ, वातपित्त, वातकफ, पित्तकफ, सन्निपात आदि लक्षण ५२ प्रकार के सन्निपात का सविस्तर वर्णन है। विषमज्वर की संप्राप्ति, लक्षण, भेद, साध्यासाध्य, अर्थात् हर प्रकार के ज्वर का सविस्तर वर्णन है। स्थान स्थान पर पाश्चात्य मतानुसार भी वर्णन किया गया है। संग्रहणी रोग, अर्श (बवासीर) अजीर्णरोग, क्रिमिरोग, पाण्डुरोग, रक्तपित्तरोग। राजयक्ष्मा, कासरोग, श्वासरोग, स्वरभेद, अरोचकरोग, छर्दिरोग, तृष्णारोग, मूर्छारोग, मदात्यरोग, दाहरोग, उन्मादरोग, भूतोन्माद, अपस्माररोग, वातरोग, शूलरोग, उदावर्तरोग, गुल्मरोग, हृद्रोग, मूत्राघात, अश्मरीरोग, प्रमेहरोग, मेदोरोग, उदररोग, शोथरोग, वृद्धिरोग, अर्बुदरोग, श्लीपदरोग, विद्रधिरोग, व्रणशोथरोग, शारीरव्रणरोग, सद्योव्रणरोग, नाड़ीव्रणरोग, भगन्दररोग, उपदंश, शकरोग, कुष्ठरोग, अम्लपित्तरोग, विसर्परोग, विस्फोट, मसूरिकारोग, मन्थर (टायफायड) ज्वर, स्नायुकारोग, क्षुद्ररोग, प्लेग, चिप (चंडा) रोग, कुनखरोग, मुखरोग, ओष्ठरोग, दन्तरोग, जिव्हारोग, तालुरोग, कंठरोग, सर्वसररोग, कर्णरोग, नासारोग, नत्ररोग, शिररोग, शीर्षकलाशोथरोग, मस्तिष्करोग, बादगंठियारोग, हस्तमैथुनरोग, प्रदररोग, योनिव्यापदरोग, बाधकरोग, हिस्टीरिया, गर्भरोग, योनिसंवरण, गर्भिणी परिचर्या, प्रसूतरोग, स्तनरोग, दुग्धरोग, बालरोग, विषरोग, जंगमविषरोग, नाड़ीविज्ञान, मूत्र विज्ञान, शारीरिक विज्ञान, घरनरोग, उरोग्रह, पार्श्वशूलरोग आदि प्राचीन काल तथा आजकल म होने वाले हर एक प्रकार के रोगों के पूर्वरूप, भेद, संप्राप्ति, लक्षण, सामान्यनिदान विशेष लक्षण, वातज, पित्तज, कफज तथा साध्यासाध्य तथा पाश्चात्य-मतानुसार सविस्तर वर्णन दिया गया है हिन्दी भाषा में इस प्रकार की कोई पुस्तक आज तक नहीं छपी। इस एक ही पुस्तक से सर्वसाधारण मनुष्य हर प्रकार के रोगों का ठीक ठीक निदान कर सकता है। भाषा इतनी सरल है कि हर एक मामूली पढ़ा लिखा भी इसे अच्छी तरह समझ सकता है।

चरक संहिता हिन्दी अनुवाद सहित

सुप्रसिद्ध टीकाकार आयुर्वेदाचार्य श्रीजयदेवजी विद्यालंकारकृत तंत्रार्थदीपिका नामक विवेचनात्मक तथा सरल हिन्दी अनुवाद सहित। चरक जैसे कठिन ग्रन्थ के समझने के लिये उक्त वैद्यजी का यह अनुवाद इतना लोकोपयोगी सिद्ध हुआ है कि ऐसा हिन्दी अनुवाद आज तक कहीं भी किसी भाषा में नहीं छपा। यही कारण है कि इतने थोड़े समय में यह इसका चौथा संस्करण छपा है। कागज की कठिनाई के कारण यह बहुत थोड़ा छपा है जो पुस्तक की मांग को देखते हुवे आशा है शीघ्र ही समाप्त हो जावेगा। इस लिये शीघ्रता करें ताकि फिर अगले संस्करण की प्रतीक्षा न करनी पड़े। दो बढ़िया पक्की कपड़े की जिल्दों में [illegible] साइज में छपा है। मूल्य संपूर्ण ग्रन्थ का ३२) रु०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भैषज्यरत्नावली

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाहौर के सुप्रसिद्ध कविराज श्री नरेन्द्रनाथ जी मित्र द्वारा संशोधित तथा आयुर्वेदाचार्य श्री जयदेव विद्यालङ्कार कृत सुविस्तृत सरल तथा विवेचनात्मक भाषा-टीका सहित । पंचमावृत्ति बड़ी सज धज कर तैयार हुई है । अब की बार बहुत परिवर्द्धित कर दी गई है अर्थात् जितने योग इस संस्करण में मिलेंगे वह किसी भी आवृत्ति में आपको नहीं मिल सकेंगे । आयुर्वेद की प्राचीन पुस्तकों में प्राचीन समय के अनुसार औषधियों की मात्रा बहुत ज्यादा है जो इस समय उलटी हानि कर देती हैं, विशेषकर साधारण वैद्यों को तो मात्रा देने में कठिनाई का सामना करना ही पड़ता है, इसी लिये इस संस्करण में औषधि की मात्रा (doses) को समयानुकूल बना दिया है । इसके अतिरिक्त इस पांचवें संस्करणमें भिन्न भिन्न योगों के अन्त में जहां जहां आवश्यक जंचा विशेष वचन दिया गया है । इसमें जहां पाठान्तरों में कहा योग का रूपान्तर दिखाया गया है वहां यह भी बताने की चेष्टा की है कि उस योग को रोग की किन अवस्थाओं में प्रयोग किया जाता है वा कराना चाहिये । व्याख्या में जहां जहां परिभाषा के अनुसार मान को दुगुना करना चाहिये वहां दुगुना ही करके लिखा गया है । अतः हर एक औषध निर्माता यदि व्याख्या में कहे गये मान से औषध बनायेंगे तो औषध ठीक बनेगी । इस संस्करण में सब से बढ़ कर खूबी यह है कि उक्त कविराज श्री नरेन्द्रनाथ जी मित्र के अपने अनुभूत कई बड़े कीमती नुस्खे इसमें दिये हैं जो आपको कहीं नहीं मिल सकते । आयुर्वेद का कोई ऐसा प्रसिद्ध नुस्खा नहीं जो इसमें न दिया गया हो । पुस्तक बहुत उपयोगी हो गई है और वैद्यसमाज के बड़े काम की वस्तु है । पंचम संस्करण का मूल्य १३॥) रु० ।

(हरीतक्यादि) भाव काशनिघण्टु

पं० श्री विश्वनाथ द्विवेदी आयुर्वेदशास्त्राचार्य, साहित्यालंकार, प्रिन्सिपल ललित-हरि आयुर्वेदिक कालिजकृत "ललितार्थकरी" अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिन्दी टीका सहित । इस में हर एक बूटी का पूर्ण विवरण दिया है बनस्पति के पुष्प, फल, त्वक्, सार, पत्र (पत्रपृष्ठ, पत्रोदर) तना, काष्ठ आदि हर एक का वर्णन । बनस्पति कब फूलती है, किस भूमि में, किस ऋतु में, किस काल में संग्रह करना चाहिये । औषधि का कौनसा भाग प्रयुक्त होता है और उन की मात्रा इत्यादि सब बातें स्पष्टतया लिखी हैं । यद्यपि यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि वनस्पति के पर्याय वनस्पति के पर्यालोचनात्मक विवरण के लिये पर्याप्त हैं किन्तु उसे हर एक व्यक्ति नहीं समझ सकता इस लिये उन्हें भी व्यक्त कर दिया है; जहां २ आवश्यक समझा गया है औषधियों के व्यापार पर भी प्रकाश डाला गया है । वंशलोचन, एलवा, मुसब्बर आदि कई एक वस्तुओं के निर्माण का इतिहास तथा वर्णन दिया है । हर एक वनस्पति के नाम भिन्न २ भाषाओं में दिये हैं । जहां पर इस पुस्तक में आयुर्वेदोक्त औषधियों के गुण हिन्दी टीका में लिखे हैं, वहां पाश्चात्य वनस्पतिवेत्ताओं के भी विचार दिये हैं । यूनानी हकीमों के विचारों को भी यथा स्थान लिखा है । पाश्चात्य वनौषधि विज्ञान को साथ साथ रखने से वैद्यगण वा विद्यार्थी को अनेक एलोपैथिक औषधियों के मुकाबले में भारतीय औषधियां जो विशेष गुण करती हैं तथा अत्यन्त लाभप्रद हैं उनका पता लग जावेगा । एलोपैथिक तथा यूनानी हकीमों के सहयोग में रहने से बहुत सी एलोपैथिक तथा यूनानी औषधियां प्रायः वैद्य लोग बरतने लगे हैं परन्तु उनका वर्णन निघण्टुओं में नहीं है अतः उन्हें भी परिशिष्ट में दे दिया गया है । एक बहुत बड़ी विशेषता इस में यह है कि प्रायः प्रत्येक औषधि की प्रतिनिधि औषधि भी दी गई हैं तथा औषधि का अधिक सेवन किस अंग को हानिकारक है और उसके दर्पनाशक के लिये क्या देना चाहिये । अतः यह सर्वगुण सम्पन्न हिन्दी अनुवाद हुआ है । छात्रों तथा वैद्यों के लिये अत्यन्त उपयोगी है । कोई भी बात जो निघंटु में समझने लायक है इस में छूट नहीं पाई पक्की कपड़े की जिल्द सहित । यू० पी० इण्डियन मेडिसन बोर्ड जो आलुबुखारा, हरमल, औलिव आॅयल आदि अन्य चीजें भी परीक्षा में निर्धारित की हुई हैं उन सब का वर्णन भी इस संस्करण में किया है । अब छात्रों के लिये यह नितान्त उपयोगी पुस्तक हो गई । [illegible] दाम केवल ७) रु०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसतरंगिणी (हिन्दी टीका सहित) पक्की कपड़े की जिल्द सहित, चतुर्थ संस्करण, मूल्य १०) रु०

आयुर्वेद में रस शास्त्र की कितनी महत्ता है यह बात आज कल के प्रतिदिन के व्यवहार में आने वाली रसचिकित्सा पद्धति के अनुसरण करने वाले किसी से छिपी नहीं। यही नहीं रसशास्त्र में धातुविद्या का भी विशद वर्णन पाया जाता है। परन्तु रसचिकित्सा में व्यवहार में आने वाले खनिज द्रव्यों का शोधन मारण आदि किस विधि के अनुसार किया जाना चाहिये जिससे वह अत्यन्त गुणदायक हो सके यह एक बड़ी भारी कठिनाई वैद्य समाज के आगे थी। इसी कठिनाई को अनुभव करते हुवे लाहौर के सुप्रसिद्ध तथा सिद्धहस्त कविराज श्रीनरेन्द्रनाथजी मित्र तथा उनके सुयोग्य शिष्य प्राणाचार्य श्रीसदानंदजी ने उक्त पुस्तक मूल श्लोकों में तैयार की थी। इसकी विशेषता यह है कि इसमें केवल वही तरीके दिये गये हैं जो उनके अनुभव में आ चुके थे। ग्रन्थ की उपादेयता का इसी से पता चलता है कि प्रायः सभी आयुर्वेद विद्यालयों में यह पुस्तक पाठ्य क्रम में नियत है। इस संस्करण में मूल पुस्तक तथा आयुर्वेदाचार्य पं० हरिदत्त जी शास्त्रीकृत संस्कृत टीका तथा रसविशेषज्ञ श्रीधर्मानन्दजी कृत सरल तथा विस्तृत रसविज्ञान नामक हिन्दी अनुवाद साथ दिया गया है। अब इस संस्करण से साधारण से साधारण व्यक्ति भी लाभ उठा सकता है। पुस्तक २४ अध्यायों में समाप्त हुई है। **पहले अध्याय** में रसशाला के विषय में पूरी जानकारी दी गई है। **दूसरे अध्याय** में परिभाषा संबंधि सभी बातों का सविस्तर वर्णन है, **तीसरे अध्याय** में मूषा आदि का वर्णन है **चौथे अध्याय** में हर प्रकार के यन्त्रों के चित्र, उनके बनाने के तरीके, उपयोग आदि सब दिया है। **पांचवें अध्याय** में पारद नाम, शुद्ध अशुद्ध स्वरूप, स्वाभाविक दोष, उनका परिचय, शुद्धि की आवश्यकता, शोधन के लिये पारे का मान, समय, पूजन, छ प्रकार के शोधन, हिंगुल से पारा निकालने की विधि, अष्ट संस्कार, स्वेदन, मर्दन, मूर्छन, उत्थापन, ऊर्ध्वपातन, अधः पातन, तिर्यक् पातन, बोधन, नियामन, दीपन, जारण, षड्गुण गन्धक जारण, इन सबके सब प्रकारों का वर्णन दिया है। **छठे अध्याय** में मूर्च्छना के स्वरूप तथा भेद, मुग्धरस, रसपुष्प, सिक्थतैल, रसकर्पूर, रसकर्पूर द्रव, कज्जली, रसपर्पटिका, रससिन्दूर, मकरध्वज, सिद्ध मकरध्वज, आदि इन सब के स्वरूप, भेद, गुण, मात्रा, आमयिक प्रयोग आदि विस्तार से दिये हैं। **सातवें अध्याय** में पारद का सामान्य मारण, मृत पारद लक्षण, सप्त प्रकार, गुण, आमयिक प्रयोग, रसायन में पारद सेवन, क्षेत्रीकरण, रस, भक्षणकाल, मात्रा भेद अपथ्य, पथ्य, उपचार, कूष्मांड आदि का वर्णन है। **आठवें अध्याय** में गन्धक नाम, स्वरूप, अशुद्ध दोष, शोधनादि के छ प्रकार शुद्ध गन्धक के गुण, मात्रा, आमयिक प्रयोग, कल्प, तैल, अपथ्य, द्रावक, सजलगन्धक आदि गन्धक विषयक विस्तार है। **नौवें अध्याय** में हिंगुल नाम, स्वरूप, भेद, निर्माण, दोष, प्रकार, शुद्ध हिंगुल गुण, प्रयोग, हिंगुलाद्य मलहर, हिंगुलीय रससिन्दूर, सिद्धदरदामृत, हिंगुलीयमाणिक्य इन सब के गुण, मात्रादि, सिद्ध हिंगुलेश्वर चपल निर्णय दिया है। **दसवें अध्याय** में अभ्रक के सब प्रकार के भेद, दोष, लक्षण, गुण, शोधन, मारण, भस्म को लोहिती करण, अमृतीकरण, गुण, आमयिक प्रयोगादि, सत्वों की विशेषता, सत्वपातन, पिण्डीकरण, आदि का अभ्रक संबंधि सविस्तर वर्णन हैं। **ग्यारहवें अध्याय** में हरताल, मैनसिल, संखिया, फिटकिरि, खरिया मिट्टी, चूना, दुग्धपाषाण, गोदन्त आदि सबके नाम, भेद, स्वरूप, शोधन, मारण, मात्रा, गुण, परीक्षा तथा आमयिक प्रयोगादि दिये हैं। **बारहवें अध्याय** में शंख, क्षुद्र शंख, शुक्ति, शृङ्ग तथा समुद्रफेन आदि इन सब के नाम, स्वरूप, भेद, शोधन, मारण, गुण तथा आमयिक प्रयोगादि दिये हैं। **तेरहवें अध्याय** में यवक्षार, नीम्बुकाम्लीय, सज्जीखार, टङ्कण, टङ्कणाम्ल आदि के नाम, निर्माण, गुण, मात्रा, शोधन तथा आमयिक प्रयोग दिये हैं। **चौदहवें** में नवसादर, सोरक, क्षार, लवण आदि इन सबके नाम, भेद, गुण शोधन तथा आमयिक प्रयोगादि सविस्तर दिये हैं। **पंद्रहवें** में सुवर्ण संबंधि सब प्रकार के नाम, स्वरूप, लक्षण, निर्माण, मात्रा, गुण, मारण तथा आमयिक प्रयोगादि सविस्तर दिये हैं। **सोलहवें** में रजत तथा नवसादर बाष्पद्रव आदि के नाम, स्वरूप, हरप्रकार के शोधन, मारण, गुण, मात्रा, आमयिक प्रयोगादि **सत्रहवें** में ताम्र, नाम, हरप्रकार के स्वरूप, भेदलक्षण, फल, शोधन, मारण, मात्रा आमयिक प्रयोग आदि सविस्तर वर्णन हैं। **अठारवें** में वंग (रांगा) के नाम लक्षण भेद, शोधन, मारण, मात्रा तथा आमयिक प्रयोग आदि सविस्तर दिये हैं। **उन्नीसवें** में सीसा, यशद, आदि के नाम, स्वरूप, फल, शोधन, मारण, गुण, मात्रा तथा आमयिक प्रयोगादि। **बीसवें** में लोह के भेद, नाम, परिचय, शोधन, मारण, गुण, मात्रा तथा आमयिक प्रयोग, **इक्कीसवें** में स्वर्णमाक्षिक, तूतिया, सिन्दूर मुर्दाशंख, खर्पर, कान्तपाषाण, काशीस के नाम भेद, स्वरूप, गुण, शोधन, मारण आमयिक प्रयोग **बाईसवें** में पित्तल, कांसी अंजन, शिलाजीत, गेरु, आदि के नाम, भेद, स्वरूप, शोधन मारण, आमयिक प्रयोग। **तेइसवें** में सब रत्नों के नाम, परीक्षा, दोष, शोधन, मारण, गुण मात्रा प्रयोग आदि। **चौबीसवें** में सब प्रकार के विषों के भेद, स्वरूप, शोधन, रस, गुण आदि दिया है।

सुश्रुत संहिता सरल हिन्दी अनुवाद सहित

सुश्रुत संहिता का हिन्दी अनुवाद आजकल कोई भी नहीं मिलता। इस कमी को पूरा करने के लिये श्री अत्रिदेवजी गुप्त विद्यालंकार ने सरल हिन्दी अनुवाद संपूर्ण पुस्तक का किया है तथा सुविख्यात डा० घाणकर जी कृत भूमिका सहित पुस्तक बहुत बढ़िया है। मूल्य २०) रु०

पुस्तकें मिलने का पता — धन्वन्तरि कार्यालय, विजयगढ़ (अलीगढ़)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
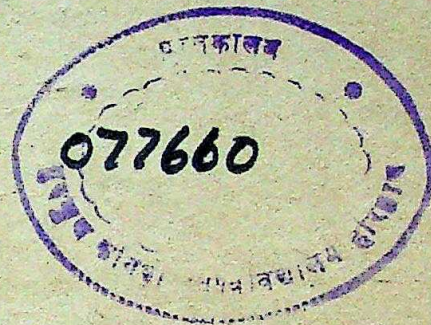
नारीरोगांक (द्वितीय संस्करण)

बड़े साइज के ३७८ पृष्ठ तथा अनेकों रंगीन व सादा चित्रों युक्त, सम्पूर्ण छप गया है। जिल्द बंध रही है। लगभग २० जून से उन ग्राहकों को भेजा जाना प्रारम्भ हो जायगा जिन्होंने १) एडवांस भेज कर अपनी प्रति रिजर्व कराली है। यह विशेषाङ्क १० वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ था और अपनी उपयोगिता के कारण उसी वर्ष समाप्त हो गया था, मांग बराबर होती रही। युद्ध जन्य असुविधाओं के कारण शीघ्र ही पुनः प्रकाशित नहीं कर सके। अब इसका द्वितीय संस्करण तैयार हो गया है। इसमें विद्वान चिकित्सकों द्वारा लिखित समस्त स्त्री-रोगों का विशद विवरण तथा सफल चिकित्सा दी है मूल्य ६) है किन्तु १ माह तक मंगाने पर रियायती मूल्य ५) है।

बृ० पाक-संग्रह

श्री० पं० कृष्णप्रसाद जी त्रिवेदी बी. ए. आयुर्वेदाचार्य द्वारा लिखित यह बृ० पाक-संग्रह पुस्तक चिकित्सकों के लिये एक उपयोगी पुस्तक है। हर रोग को नष्ट करने वाले २-४ उत्तमोत्तम पाक आपको इस पुस्तक में मिल जायं। ४०० से अधिक पाकों के प्रयोगों का संग्रह इस में किया गया है। आप भी एक प्रति शीघ्र मंगालें। मूल्य—४)

रोगी-रजिस्टर

इस समय हर चिकित्सक को रोगियों का पूरा विवरण नियमित रखना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है। नये-नये कानून बन रहे हैं अपनी सुरक्षा तथा रोगियों की सुविधा के लिये आपको भी रोगी रजिस्टर अवश्य रखना चाहिये। हमने सभी आवश्यक विवरण युक्त रजिस्टर छपवाकर तैयार कराये हैं इसमें २०० पृष्ठ हैं। लगभग ५००० रोगियों का समावेश आसानी से हो सकता है। कागज बढ़िया, सजिल्द है। मूल्य-३) पोस्ट व्यय ॥=)

पता—धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

वैद्य देवीशरण गर्ग द्वारा धन्वन्तरि प्रेस विजयगढ़ में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar